शर्मा शर्डअवेब
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947
70025-06581

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in

हिंदी दैनिक

गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

# विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 10 | अंक : 116 | गुवाहाटी | बुधवार, 22 नवंबर, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

महिला हत्या के मामले में चार लोग गिरफ्तार पेज 3

कांग्रेस भ्रष्टाचार, परिवारवाद जैसी तीन बुराइयों का प्रतीक : मोदी पेज 4

देव दीपावली की तैयारियां शुरू, नौ जोन और 11 सेक्टर में बांट कर सुरक्षा प्रबंध पेज 5

चुनाव के समय कांग्रेस को यज्ञ व गायत्री मंत्र आए याद : डॉ. संबित पात्रा पेज 8

## आम समस्याओं से निपटने में पुलिस बलों के बीच समन्वय जरूरी : सीएम

**गुवाहाटी/शिलांग।** असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने मंगलवार को पूर्वोत्तर क्षेत्र के पुलिस बलों के बीच करीबी समन्वय की जरूरत पर जोर दिया क्योंकि इस क्षेत्र के विभिन्न राज्य मादक पदार्थों की तस्करी और उग्रवाद जैसी समान समस्याओं से जूझ रहे हैं। उन्होंने अपराध पर प्रभावी तरीके से नकेल और अपराधियों को सजा दिलाने के लिए पुलिसिंग में तकनीक के अधिकाधिक उपयोग की आवश्यकता पर भी जोर दिया। मेघालय के उमियाम में उत्तर पूर्वीय पुलिस अकादमी (नेपा) में *पासिंग आउट* परेड को संबोधित करते हुए शर्मा ने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों के पुलिस बलों को मिलकर काम करना चाहिए क्योंकि समस्याएं भी समान हैं। उन्होंने म्यांमार के जरिए मादक पदार्थों की तस्करी को समान समस्या बताया और दावा किया कि विभिन्न राज्यों में सक्रिय उग्रवादी समूह बाहर रहकर एक साथ काम करते हैं और साझा रणनीति अपनाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पुलिस बलों को आपसी समन्वय बढ़ाना चाहिए और उग्रवादियों से लड़ने के लिए साझा नीति अपनानी चाहिए। उन्होंने नवनियुक्त पुलिसकर्मियों से प्रशिक्षण के दौरान विकसित सौहार्द की भावना को बनाए रखने का आग्रह किया। शर्मा ने इस बात पर भी जोर दिया कि उच्च स्तर पर अधिकारियों के बीच आधिकारिक सूचना के आदान-प्रदान की प्रतीक्षा करने के बजाय क्षेत्रीय स्तर पर करीबी समन्वय के माध्यम से अपराध से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में मदद मिलेगी। शर्मा ने कहा कि हमें मादक पदार्थों की तस्करी व अन्य अपराधों से लड़ना है और यह सुनिश्चित करना है कि हमारे वरिष्ठ नागरिक, महिलाएं, बच्चे और अन्य कमजोर वर्ग सुरक्षित रहें। पूर्वोत्तर के पांच राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नगालैंड और त्रिपुरा से पुलिस उपाधीक्षक से लेकर उप-निरीक्षक तक के पदों पर कुल 377 प्रशिक्षु नेपा में बुनियादी पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद उत्तीर्ण हुए हैं। वहीं मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि वर्तमान में, राज्य पुलिस विभाग में केवल 120 सब-इंस्पेक्टर पद की रिक्तियां हैं। सीएम शर्मा ने मेघालय में नॉर्थ ईस्टर्न पुलिस अकादमी में 52वें बेसिक कोर्स की पासिंग आउट परेड में भाग लेते हुए कहा कि असम में पुलिस के केवल 120 रिक्त पद बचे हैं...और मेरा मानना है कि जो नौकरी का विज्ञापन निकला है, वह कुछ नहीं छोड़ेगा। अगले वर्ष किसी भी रिक्ति के लिए जगह। उप-निरीक्षकों के कार्यभार पर बोलते हुए, सीएम शर्मा ने कहा कि वर्तमान में, एक उप-निरीक्षक को पहले के 150-200 मामलों की तुलना में औसतन सात मामलों से निपटना पड़ता है। सीएम ने कहा कि पिछले तीन वर्षों में जितनी भर्तियां की गईं, उससे सब-इंस्पेक्टरों और डीएसपी के लिए रिक्तियां कम हो गईं। इससे पहले अक्तूबर में असम सरकार ने विभिन्न राज्य सरकार के विभागों में ग्रेड थ्री और फोर पदों के लिए 12,600 नौकरी रिक्तियों की घोषणा की थी। प्लेटफॉर्म एक्स पर लेते हुए, असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने रिक्तियों के विज्ञापन की घोषणा की और लिखा कि मेरी पिछली घोषणा के अनुसार, असम सरकार ने आज ग्रेड थ्री और फोर पदों के लिए 12,600 रिक्तियों का विज्ञापन किया है। इसके अतिरिक्त, हमने भी विज्ञापन दिया है इस महीने पुलिस विभाग में 5,000 रिक्तियां हैं। स्वास्थ्य -शेष पृष्ठ दो पर

## हजेला ने वकील के माध्यम से अदालत को दिया जवाब

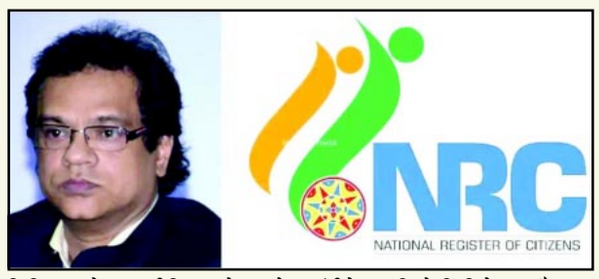

**गुवाहाटी।** असम में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) अद्यतन प्रक्रिया के पूर्व राज्य समन्वयक, प्रतीक हजेला ने अपने वकील के माध्यम से कामरूप (मेट्रो) जिला और सत्र अदालत को जवाब दिया है, जहां वह 17 नवंबर को अदालत के निर्देशानुसार उपस्थित होने में विफल रहे। हजेला को कानून का पालन करने वाला नागरिक करार देते हुए, उनकी परिषद ने अदालत से यह भी अपील की कि याचिकाकर्ता लुइत कुमार बर्मन को अखबार में विज्ञापन प्रकाशित करने की अनुमति रद्द कर दी जाए क्योंकि सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी को विभिन्न सोशल मीडिया पोस्ट से समन के बारे में पहले ही पता चल गया है। वकील ने अदालत से हजेला को हलफनामा दायर करने की इजाजत देने की भी अपील की। उल्लेखनीय है कि हजेला (जिन्हें पहले ही असम सरकार के तहत सेवा से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति मिल चुकी थी), सिस्टम इंटीग्रेटर (विप्रो लिमिटेड) और एक उपठेकेदार इंटीग्रेटेड सिस्टम एंड सर्विसेज (आईएसएस) को हाल ही में तलब किया गया था। एनआरसी असम अद्यतन प्रक्रिया (मई 2014 से अक्तूबर 2019) के दौरान 155 करोड़ से अधिक के वित्तीय घोटाले में उनकी कथित संलिप्तता के लिए जिला अदालत द्वारा। अदालत ने शिकायतकर्ता बर्मन को समाचार पत्र-विज्ञापनों के माध्यम से मामले को हजेला के ध्यान में लाने की भी अनुमति दी। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की भारतीय आईटी कंपनी विप्रो ने अदालत में अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से एक हलफनामा प्रस्तुत किया था। हालाँकि, आईएसएस (मालिक उत्पल हजारिका द्वारा प्रतिनिधित्व) को विधिवत समन नहीं दिया गया और अदालत ने याचिकाकर्ता को आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दिया। विप्रो और आईएसएस दोनों पर हजारों अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को -शेष पृष्ठ दो पर

## गांधी परिवार से जुड़ी कंपनी की 751.9 करोड़ की संपत्ति जब्त

**नई दिल्ली (हि.स.)।** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोनिया गांधी परिवार की कंपनी यंग इंडियन की देश भर में फैली करीब 751.9 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त की है। ईडी ने यह कार्रवाई हेराल्ड हाउस व कांग्रेस के अन्य प्रकाशन संस्थान से जुड़े मामले में की है। हेराल्ड हाउस का मामला न्यायालय में लंबित है और इस मामले में सोनिया गांधी, राहुल गांधी समेत उनके अनेक नजदीकी कांग्रेस पदाधिकारी जमानत पर हैं। आर्थिक अपराध की जांच करने वाली एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अपने एक बयान में कहा है कि धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के तहत की गई जांच के बाद यंग इंडियन और एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) की 751.9 करोड़ रुपए की संपत्तियों को अस्थायी रूप से अटैच करने का आदेश जारी किया है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस पार्टी और विशेषकर जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्रता प्राप्त होते ही दि एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) बनाकर उसके माध्यम से नेशनल हेराल्ड और -शेष पृष्ठ दो पर

## कोकराझाड़ में हेलमेट नहीं ईंधन नहीं नियम

**कोकराझाड़।** कोकराझाड़ प्रशासन ने दोपहिया वाहन दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मौतों को रोकने के अपने प्रयास के तहत मंगलवार को जिले में *हेलमेट नहीं, ईंधन नहीं* नियम लागू कर दिया। बिना हेलमेट वाले दोपहिया वाहनों के खिलाफ अभियान में, कोकराझाड़ जिला प्रशासन ने 21 नवंबर को कोकराझाड़ में बिना हेलमेट के बावजूद मोटरसाइकिल चालकों को तेल देते हुए ईंधन पंप संचालकों को पकड़ा। जिलाधिकारी कार्यालय ने पहले ही बिना हेलमेट वाले लोगों को तेल नहीं देने का निर्देश दिया था। अधिसूचना के अनुसार, जिले का कोई भी पेट्रोल पंप बिना हेलमेट के पेट्रोल पंप पर आने वाले किसी भी दोपहिया वाहन चालक को पेट्रोल नहीं बेचेगा। तेल डिपो में जिला कलेक्टरों के निर्देशों का पालन किया जा रहा है या नहीं, इसकी -शेष पृष्ठ दो पर

पूर्वांञ्चल केशरी
(असमीया दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

## त्रिशूर के स्कूल में पूर्व छात्र ने की ओपन फायरिंग

**त्रिशूर।** केरल के त्रिशूर से एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। यहां एक युवक ने मंगलवार को एक स्कूल में गोलीबारी की। गोली चलाने वाले की पहचान स्कूल के पूर्व छात्र के रूप में हुई है। स्कूल के कर्मचारियों और स्थानीय निवासियों ने आरोपी शख्स को पकड़ा और पुलिस के हवाले कर दिया है। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, घटना सुबह करीब 10 बजे के आस-पास हुई। माना जा रहा है कि मुलायम के मूल निवासी जगन ने नशे में ये कदम उठाया। स्कूल स्टाफ के मुताबिक, आरोपित शख्स -शेष पृष्ठ दो पर

## श्मशान घाट सिर्फ ब्राह्मणों के लिए

**भुवनेश्वर।** ओडिशा में एक श्मशान घाट पर लगे बोर्ड को लेकर विवाद हो गया है। दरअसल श्मशान घाट पर *सिर्फ ब्राह्मणों के लिए* बोर्ड लगा हुआ है, जिसे लोग जातिवाद से जोड़कर देख रहे हैं। विवाद की वजह ये भी है कि यह श्मशान घाट नगर पालिका के अधिकार क्षेत्र में आता है। ऐसे में एक सार्वजनिक श्मशान घाट पर जातिवादी बोर्ड लगाने को लेकर विवाद भड़क गया है और लोग इसे संविधान का उल्लंघन बता रहे हैं। ओडिशा की केंद्रपाड़ा नगरपालिका राज्य की सबसे पुरानी निकाय है। केंद्रपाड़ा के हजारीबागीचा इलाके में एक श्मशान घाट पर सिर्फ ब्राह्मणों के लिए लिखा बोर्ड लगा हुआ है, जिस पर लोगों में नाराजगी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस श्मशान घाट पर लंबे समय से ब्राह्मणों का अंतिम संस्कार हो रहा था लेकिन हाल ही में नगर पालिका ने इस श्मशान घाट का पुनर्निर्माण कराया है, जिसके बाद श्मशान घाट पर यह विवादित बोर्ड लगाया गया है। लोगों ने बताया कि अन्य जातियों के लोगों का अंतिम संस्कार नजदीक के एक श्मशान घाट पर किया जाता है और हाल ही में नगर पालिका ने उसमें भी विकार कार्य कराए हैं। इस विवाद पर केंद्रपाड़ा नगरपालिका के अधिकारी प्रफुल चंद्र बिस्वाल ने कहा कि यह मामला उनके सामने आया है और इस शिकायत को दूर करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। दलित कार्यकर्ताओं और राजनेताओं ने इस मामले पर नाराजगी जाहिर की है। ओडिशा दलित समाज के जिला अध्यक्ष नागेंद्र जेना का कहना है कि जब उन्हें इसके बारे में पता चला तो वह हैरान रह गए कि श्मशान घाट लंबे समय से सिर्फ ब्राह्मणों के अंतिम संस्कार के लिए -शेष पृष्ठ दो पर

door graphy
Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path,
Near Dona Planet
ABC, G.S. Road,
Guwahati - 05
97079-99344

सुप्रभात
कोई भी अपने लिए आलसी होने की और मूर्ख होने की योजना नहीं बनाता। ये सारी चीजे तो तभी होती है जब आपके पास कोई योजना नहीं होती है।
- लेरी वीनगेट

## विशाखापत्तनम जासूसी मामला एनआईए ने मुंबई-असम में की छापेमारी

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने सोमवार को पाकिस्तानी आईएसआई जासूसी नेटवर्क के माध्यम से वर्गीकृत रक्षा जानकारी लीक से जुड़े विशाखापत्तनम जासूसी मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया। अमान सलीम शेख को एनआईए द्वारा मुंबई (महाराष्ट्र) में दो स्थानों और असम के होजाई और नागांव जिलों में की गई छापेमारी के बाद मुंबई से गिरफ्तार किया गया था। शेख की गिरफ्तारी के साथ, मामले में अब तक गिरफ्तार किए गए आरोपियों की कुल संख्या तीन हो गई है। दो फरार पाकिस्तानी गुर्गों सहित कुल चार लोगों के खिलाफ एनआईए पहले ही आरोपपत्र दाखिल कर चुकी है। शेख को उन सिम कार्डों के सक्रियण में शामिल पाया गया था, जिनका उपयोग रैकेट में शामिल पाकिस्तानी खुफिया अधिकारियों द्वारा किया जा रहा था, जो पहली बार 2021 में सामने आया और काउंटर इंटेलिजेंस सेल, आंध्र प्रदेश ने 12 जनवरी, 2021 को मामला -शेष पृष्ठ दो पर

## नक्सलियों ने जन अदालत लगाकर ग्रामीण की हत्या की

**रायपुर /कांकेर (हि.स.)।** कांकेर जिला के नक्सल प्रभावित कोहली बेड़ा इलाके के ग्राम गोमे में नक्सलियों ने जन अदालत लगाकर एक ग्रामीण युवक की हत्या कर दी। मृतक का नाम अमर सिंह उइका बताया जा रहा है। मंगलवार को नक्सलियों की राव घाट एरिया कमेटी ने युवक की हत्या की जिम्मेदारी लेते हुए घटनास्थल पर बैनर लगाया है। जिसमें लिखा है कि अमर सिंह उइका ने उसके साथियों के बारे में डीआरजी को सूचना दी, जिसकी वजह -शेष पृष्ठ दो पर

## पीएम मोदी और सीएम योगी को मिली जान से मारने की धमकी

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जान से मारने की धमकी मिली है। दाऊद इब्राहिम गिरोह से जुड़े एक व्यक्ति ने मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम को एक धमकी भरा कॉल किया है। इस कॉल में आरोपित शख्स ने दावा किया कि दाऊद गिरोह ने उसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की हत्या की साजिश रचने का निर्देश दिया है। साथ ही जेजे अस्पताल को उड़ाने की धमकी दी। पुलिस ने शख्स पर मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है, जिसकी पहचान कामरान खान नाम से हुई। बता दें कि जेजे अस्पताल महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई के सबसे प्रमुख अस्पतालों में से एक है। पुलिस ने शख्स पर आईपीसी की धारा 505 (2) के तहत केस दर्ज कर लिया गया है, जो विभिन्न धार्मिक, नस्लीय, भाषाई या क्षेत्रीय समूहों या जातियों के बीच दुश्मनी, नफरत या दुर्भावना को -शेष पृष्ठ दो पर

### न्यूज गैलरी

## मिजोरम में शांतिपूर्ण मतगणना हेतु सुरक्षा के इंतजाम : डीजीपी

**एजल (हि.स.)।** मिजोरम में 3 दिसंबर को प्रस्तावित मतगणना कराए जाने का हो रहे विरोध के बीच मिजोरम के पुलिस महानिदेशक अनिल शुक्ला ने कहा है कि मिजोरम में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मतगणना कराए जाने की पूरी व्यवस्था की गई है। उल्लेखनीय है की 3 दिसंबर को पूरे देश के साथ ही मिजोरम विधानसभा चुनाव की मतगणना निर्धारित है। तीन दिसंबर का दिन रविवार होने के कारण -शेष पृष्ठ दो पर

### ब्रिक्स सम्मेलन में भारत ने कहा-

## गाजा में निर्दोष नागरिकों की हत्या सही नहीं

**नई दिल्ली (हि.स.)।** भारत ने गाजा में निर्दोष नागरिकों की हत्या की कड़ी निंदा की है तथा फिलिस्तीन में संघर्ष टालने और संयम बनाए रखने पर जोर दिया है। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने गाजा की गंभीर स्थिति के बारे में ब्रिक्स संगठन की आपात वर्चुअल शिखरवार्ता का आयोजन किया था। दक्षिण अफ्रीका वर्तमान में ब्रिक्स की अध्यक्षता संभाल रहा है। इस वार्ता में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। जयशंकर ने अपने संबोधन में कहा कि तात्कालिक घटनाक्रम 07 अक्तूबर को हमास के आतंकवादी हमले के कारण शुरू हुआ। जहां तक आतंकवाद का सवाल है, उसके साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। इसी तरह लोगों को बंधक बनाया जाना भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। विदेश मंत्री ने आगे कहा कि बाद के घटनाक्रम में हमारी चिंताओं को ओर बढ़ा दिया है। गाजा में बड़ी संख्या में नागरिकों की मौत हुई है। वहां मानवीय संकट भी पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि नागरिकों की सुरक्षा के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानूनों का पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए। उन्होंने -शेष पृष्ठ दो पर

## राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा : 80 हजार श्रद्धालुओं के लिए बनेगी टेंट सिटी

**प्रयागराज।** भगवान श्री राम की जन्म स्थली अयोध्या में बनाये जा रहे भव्य राम मंदिर में अगले वर्ष 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में देश-विदेश से बड़ी संख्या में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए *टेंट सिटी* का निर्माण कराया जा रहा है, जिसमें 80 हजार श्रद्धालुओं के ठहरने की व्यवस्था होगी। लखनऊ में जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में देश-विदेश से लाखों लोगों के अयोध्या पहुंचने की संभावना को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप श्री राम मंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट व अयोध्या विकास प्राधिकरण की ओर से विभिन्न स्थानों पर टेंट सिटी का -शेष पृष्ठ दो पर

**CLASSIFIED**

For all kinds of classified advertisements please contact

**97070-14771**
**86382-00107**

**MURTI AVAILABLE**

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc.
**ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01,
**Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

# म्यांमार में रहने वाले भारतीयों को विदेश मंत्रालय ने दी यात्रा से बचने की सलाह

**गुवाहाटी ( हि.स. )।** विदेश मंत्रालय ने म्यांमार में रहने वाले भारतीयों के लिए अनावश्यक यात्रा करने से परहेज करने की सलाह दी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची द्वारा आज जारी की गई एक एडवाइजरी में म्यांमार में भारतीयों को किसी भी गैर-जरूरी यात्रा करने से बचने की सलाह दी गई है। इसमें लिखा है कि म्यांमार में उभरती सुरक्षा स्थिति को देखते हुए, सभी भारतीय नागरिकों को गैर-जरूरी यात्रा से बचने की सलाह दी जाती है। जो लोग पहले से ही म्यांमार में रह रहे हैं, उन्हें एहतियात बरतने और हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों की यात्रा से बचने की सलाह दी जाती है। इंटर-सड़क मार्ग से राज्य यात्रा से भी बचना चाहिए। म्यांमार में रहने वाले भारतीयों को भी यंगून स्थित भारतीय दूतावास में पंजीकरण कराने के लिए कहा गया है। पंजीकरण के लिए फॉर्म विदेश मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिए गए हैं। विदेश मंत्रालय की वेबसाइट पर रजिस्टर्ड रहने तथा दूतावास के साथ पंजीकरण से किसी भी आपातकालीन स्थिति में या ऐसी आवश्यकता उत्पन्न होने पर उठाए जाने वाले कदमों में मदद मिलेगी। विदेश मंत्रालय ने म्यांमार में भारतीयों को विदेश मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध पंजीकरण फॉर्म को डाउनलोड करने और भरने और इसकी हार्ड और सॉफ्ट प्रतियां यांगून में भारतीय दूतावास को भेजने का निर्देश दिया है। इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य की दो रंगीन पासपोर्ट आकार की तस्वीरें भी मांगी गई हैं। विदेश मंत्रालय ने सत्यापन उद्देश्यों के लिए पासपोर्ट के पहले पृष्ठ, अंतिम पृष्ठ और वर्तमान वीजा पृष्ठ और प्रत्येक व्यक्ति के पासपोर्ट की एक प्रति भी मांगी है।

# सिर्फ भाजपा चुनाव में धन संस्कृति के खिलाफ है : सीएम खांडू

**इटानगर।** अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने दावा किया है कि भाजपा ही एकमात्र ऐसी पार्टी है जो चुनावों में पैसे की संस्कृति के खिलाफ साहसपूर्वक बोलती है। सीएम पेमा खांडू ने केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्री किरण रिजिजू और भाजपा विधायकों के साथ पूर्वी कामेंग जिले के मुख्यालय सेप्पा में भाजपा की एक विशाल बैठक में भाग लिया। यहां उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से चुनाव में धन संस्कृति के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया। पार्टी की ओर से यहां जारी एक प्रेस रिलीज में कहा गया कि भाजपा को एकमात्र ऐसी पार्टी है जो जनता के लिए सब कुछ कर सकती है। पेमा खांडू ने कहा कि भाजपा सभी राजनीतिक दलों में सबसे साफ-सुथरी पार्टी है। उन्होंने कहा कि भाजपा एकमात्र ऐसी पार्टी है जो चुनावों में धन संस्कृति के खिलाफ साहसपूर्वक बोल सकती है। उम्मीदवार के बेहतर प्रदर्शन को देखते हुए मैं आप सभी से निष्पक्ष चुनाव के लिए प्रचार करने का आग्रह करता हूं। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए कि कौन सा उम्मीदवार जनता को कितना पैसे या दूसरी चीजें दे सकता है। सीएम ने कहा कि वोट खरीदने वाला नेता कभी काम नहीं करेगा। आइए लोकतंत्र की पवित्रता बनाए रखने और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए इस कुप्रथा के खिलाफ लड़ाई में एकजुट हों। मुख्यमंत्री ने पार्टी कार्यकर्ताओं से केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और परियोजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने का आग्रह किया, जिससे कि सुदूर गांव के अंतिम व्यक्ति को पता चल सके कि भाजपा सरकार उसके लिए क्या कर रही है। वहीं, खांडू ने वेसांग में बनने वाले भाजपा जिला कार्यालय की आधारशिला रखी। उन्होंने सेप्पा में एक आउटडोर खेल स्टेडियम और सेप्पा शहर को न्यू सेप्पा से जोड़ने के लिए कामेंग नदी पर एक आरसीसी पुल की आधारशिला भी रखी।

## एलएसी पर स्थिति सामान्य : जीओसी

**गुवाहाटी ( हि.स. )।** सेना के पूर्वी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) लेफ्टिनेंट जनरल राणा प्रताप कलिता ने कहा है कि सिक्किम में भारत-चीन सीमा पर तथा अरुणाचल प्रदेश में लाइन ऑफ कंट्रोल पर फिलहाल स्थिति सामान्य है। उन्होंने कहा कि सेना के पूर्वी कमान के अधीन अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक चुनौतियां रहती हैं। जीओसी ने बताया कि पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों समेत पश्चिम बंगाल का प्रभार भी सेना के पूर्वी कमान पर है। उन्होंने कहा कि भारत-बांग्लादेश सीमा, भारत-चीन सीमा तथा भारत-म्यांमार सीमा पूर्वी कमान के कार्यक्षेत्र में पड़ता है, इसलिए इसकी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। जीओसी आज गुवाहाटी प्रेस क्लब में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि सेना के बारे में जानकारी की कमी होने की वजह से असम के युवा कम संख्या में सेना में भर्ती होते हैं। दूसरी ओर, उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोग उग्रवादी संगठनों में भर्ती होकर असम के युवाओं को गुमराह करके गलत रास्ते पर ले जाते हैं। उन्होंने कहा कि बीते 10 वर्षों में पूर्वोत्तर राज्यों में शांति आई है। यहां बहुत अधिक कार्य हो रहे हैं।

## अच्छा-भला हमारे लड़के मैच जीत जाते, पनौती ने हरवा दिया : राहुल

**जयपुर।** राजस्थान के जालोर में चुनाव प्रचार करने पहुंचे कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने वर्ल्ड कप फाइनल में भारत की हार का जिम्मेदार पीएम मोदी को ठहराया। उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री पर जमकर निशाना साधा। राहुल ने कहा कि अच्छा भला हमारे लड़के वर्ल्ड कप जीत जाते, लेकिन पनौती ने हरवा दिया। बता दें कि राहुल गांधी चुनाव प्रचार के लिए एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे इस दौरान उन्होंने पीएम मोदी का जिक्र कर निशाना साधा। इसी दौरान जनसभा में कुछ लोग पनौती पनौती चिल्लाने लगे। इस पर राहुल ने कहा कि अच्छा भला वहां हमारे लड़के वहां वर्ल्ड कप जीत जाते, लेकिन पनौती ने हरवा दिया, टीवी वाले ये नहीं कहेंगे, लेकिन जनता जानती है। मैच में हार के बाद से सोशल मीडिया पर *पनौती* शब्द ट्रेंड कर रहा है। मैच के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अहमदाबाद स्थित स्टेडियम में मौजूद थे। इस स्टेडियम का नाम प्रधानमंत्री मोदी के नाम पर रखा गया है। राहुल ने आरोप लगाया कि मोदी लोगों का ध्यान भटकाते हैं जबकि उद्योगपति अडाणी उनकी जेब काटते हैं। उन्होंने कहा कि मोदी टीवी पर आते हैं और *हिंदू-मुस्लिम* कहते हैं और कभी-कभी क्रिकेट मैच में चले जाते हैं। वो अलग बात है कि हरवा दिया... पनौती। कांग्रेस नेता ने कहा कि पीएम मतलब पनौती मोदी। राहुल की यह टिप्पणी प्रधानमंत्री मोदी द्वारा कुछ दिन पहले परोक्ष रूप से उन्हें (राहुल) *मूर्खों का सरदार* कहकर संबोधित किए जाने के बाद आई है।

## आतंकवाद मामले में एक और आरोपी गिरफ्तार

**जम्मू ( हि.स. )।** राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने जम्मू-कश्मीर में सक्रिय आतंकवादियों को ड्रोन के माध्यम से हथियारों की डिलीवरी से जुड़े पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी के एक प्रवक्ता ने कहा कि जम्मू क्षेत्र के कठुआ जिले का निवासी जाकिर हुसैन (22) इस मामले में गिरफ्तार होने वाला आठवां आरोपी है। इस मामले को एजेंसी ने पिछले साल 30 जुलाई को अपने हाथ में लिया था। स्थानीय पुलिस ने पिछले साल 29 मई को कठुआ के ढली इलाके के पास एक ड्रोन को रोकने और स्टीकी बमों के साथ अंडर बैरल ग्रेनेड लॉन्चर (यूबीजीएल) के कई राउंड की जब्ती के बाद मामला दर्ज किया था। प्रवक्ता ने कहा कि हुसैन को एनआईए की एक टीम ने सोमवार को जम्मू से गिरफ्तार किया था। प्रवक्ता ने बताया कि वह अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार से कश्मीर में सक्रिय आतंकवादियों तक गिराए गए हथियारों को इकट्ठा करने, प्राप्त करने और उन्हें पहुंचाने में शामिल था।

## खुलासा : फ्लिपकार्ट के लिफाफे में छिपाकर लाई जाती थी ड्रग्स

**नई दिल्ली।** दिल्ली के गौतमबुद्ध नगर से एक हैरतअंगेज मामला सामने आया है। इलाके में पुलिस ने फ्लिपकार्ट के लिफाफे में गांजा और चरस की तस्करी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। थाना बीटा-2 पुलिस और स्वाट टीम ने गिरोह का पर्दाफाश करते हुए महिला समेत चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। बीटा-2 पुलिस टीम और स्वाट टीम को 20 नवंबर को एक गोपनीय सूचना मिली थी, जिसके बाद चेकिंग के दौरान चारों आरोपियों (चिन्टू, बिन्टू उर्फ कालू, जयप्रकाश, वर्षा) को नवादा गोल चक्कर थाना क्षेत्र बीटा-2 से गिरफ्तार किया। पुलिस को इनके कब्जे से 20 किलो 390 ग्राम अवैध गांजा, 400 ग्राम अवैध चरस बरामद हुआ है। इसके अलावा पुलिस को घटना में इस्तेमाल एक कार, 148 फ्लिपकार्ट कम्पनी के लिफाफे, 38 पैकिंग पॉलीथिन, 4 मोबाइल फोन और एक ड्राइविंग लाइसेंस भी मिला है। स्वाट टीम व थाना बीटा-2 पुलिस द्वारा फ्लिपकार्ट के लिफाफे में गांजा व चरस रखकर तस्करी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश, महिला अभियुक्ता सहित 04 अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से 20 किलो 390 ग्राम गांजा, 400 ग्राम चरस, 04 मोबाइल फोन,वर्ना कार व मोटरसाइकिल बरामद। पुलिस के मुताबिक गिरोह में शामिल सभी शातिर किस्म के तस्कर हैं। पुलिस ने बताया कि गिरोह के नेटवर्क में रिंकू उर्फ सेठ भारी मात्रा में शिलॉग से गांजा और चरस लेकर आता है, जिसे बाद में चिन्टू और बिन्टू के माध्यम से डिस्ट्रीब्यूट कराने का काम किया जाता है। चिन्टू और बिन्टू दोनों भाई हैं, जो वर्षा और जयप्रकाश के दिए लोकेशन पर चरस व गांजे को ग्राहकों तक पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा कि चिन्टू और बिन्टू अपना नाम व पहचान छिपाने के लिए ग्राहक को वाट्सएप्प कॉल करते है, जिसके बाद वर्षा और जयप्रकाश से दिए लोकेशन पर माल को सप्लाई करते थे। वर्षा और जयप्रकाश एक दिन में 40 से 50 पुड़ियों की सप्लाई कर देते हैं। पुड़िया का वजन 10 ग्राम, 20 ग्राम व 50 ग्राम होता है। पुलिस से पकड़े जाने के डर से गुमराह करने के लिए ये लोग फ्लिपकार्ट के लिफाफे खरीदकर फ्लिप कार्ट के लिफाफों में गांजा और चरस को रखकर नोएडा, ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में सेक्टरों, कम्पनियों और यूनिवर्सिटी आदि में मोटरसाइकिल की सहायता से गांजा व चरस को ग्राहक तक पहुंचाते हैं। इनका पेमेंट आनलाइन किया जाता है और पैसे बिन्टू के खाते में आते थे। पुलिस के मुताबिक गिरोह के निशाने पर एजुकेशन हब के आसपास रहने वाले छात्र और बड़ी कंपनियां में काम करने वाले लोग हुआ करते थे। आरोपियों से बरामद गांजे की सप्लाई चैन के सम्बन्ध में गहनता से जानकारी की जा रही है। इसके अलावा फरार लोगों की गिरफ्तारी के लिए भी प्रयास जारी है। आरोपी युवती बीबीए की छात्रा बताई जा रही है जिसकी और डिटेल निकाली जा रही है।

# पृष्ठ एक का शेष

## आम समस्याओं से ...

विभाग ने पहले ही लगभग 3,000 रिक्तियों का विज्ञापन दिया है, और हम जल्द ही शिक्षा विभाग में 10,000 से अधिक रिक्तियों का विज्ञापन करने की योजना बना रहे हैं। हमारे निरंतर प्रयासों का उद्देश्य हमारे राज्य के युवाओं के लिए एक उज्ज्वल भविष्य बनाना है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि इस महीने स्वास्थ्य विभाग में 3,000 रिक्तियों के साथ पुलिस विभाग में अतिरिक्त 5,000 रिक्तियों की घोषणा की गई थी।

## हजेला ने वकील...

भारतीय नागरिकता के लिए आवेदन करने की अनुमति देने की प्रक्रिया में सॉफ्टवेयर में हेरफेर करने के गंभीर आरोप हैं। कोर्ट ने तीनों पक्षों के लिए अगली सुनवाई की तारीख 6 फरवरी 2024 तय की है। बर्मन ने 31 मार्च 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) की रिपोर्ट के बाद याचिका दायर की, जहां उन्होंने प्रक्रिया में अनियमितताओं की ओर इशारा किया और यहां तक कि हजेला और विप्रो के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की भी सिफारिश की। उन्होंने 19 अक्तूबर 2022 को मनी लॉन्ड्रिंग में संदिग्ध भूमिका के लिए हजेला, विप्रो और आईएसएस के खिलाफ पल्टन बाजार पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। लेकिन उनका मामला दर्ज नहीं किया गया और फिर बर्मन ने कामरूप (मेट्रो) के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत का दरवाजा खटखटाया। यहां तक कि सीजेएम कोर्ट ने भी उनकी अपील पर विचार करने से इनकार कर दिया। फिर बर्मन कामरूप (मेट्रो) सेशन कोर्ट गए। एनआरसी घोटाले की बहस के बीच, सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने गुवाहाटी स्थित तीन टेलीविजन पत्रकारों को इसके लाभार्थियों के रूप में नामित किया और उन्हें शर्मिंदा किया। उन पत्रकारों पर आईएसएस को डीईओ की आपूर्ति करने में शामिल होने और बाद में अवैध तरीकों से खुद को लाभान्वित करने का संदेह है। असम के लोगों को अभी भी याद है कि कैसे उन्होंने एक उत्कृष्ट अधिकारी के रूप में हजेला की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी और एनआरसी मसौदे को अंतिम बताया था, भले ही इसे अभी भारत के रजिस्ट्रार जनरल द्वारा अनुमोदित किया जाना बाकी है। प्रत्येक सोशल मीडिया उपयोगकर्ता ने तर्क दिया कि डीईओ को कानूनों के तहत आर्थिक रूप से मुआवजा दिया जाना चाहिए। विकास पर चिंता व्यक्त करते हुए, जर्नलिस्ट्स फोरम असम ने स्थानीय समाचार चैनल प्रबंधन से यह स्पष्ट करने का आग्रह किया कि उनके संगठन का कोई भी पत्रकार इस घोटाले में शामिल नहीं था, ताकि दर्शकों को पूरी मीडिया बिरादरी भ्रष्ट न लगे।

## त्रिशूर के स्कूल ...

ने स्कूल के अंदर घूमकर दो राउंड फायरिंग की। राहत की बात यह रही कि इस हादसे में कोई घायल नहीं हुआ। खबरों के मुताबिक, पूर्व छात्र जगन सुबह-सुबह त्रिशूर के विवेकोदयम स्कूल पहुंचा और अचानक स्टाफ रूम में घुसकर अपने बैग से बंदूक निकाल ली। बाद में जगन ने क्लास में जाकर छात्राओं और टीचर्स को डराया-धमकाया। पुलिस ने कहा कि आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है और जांच जारी है। इस बीच, घटना के तुरंत बाद जिला कलेक्टर वीआर कृष्ण तेजा स्कूल पहुंचे और घटना का जायजा लिया। उन्होंने माता-पिता से चिंता न करने को को कहा है, क्योंकि अब हालात स्थिर है। तेजा ने मीडिया को बताया कि स्कूल में एक युवक आया है। वह थोड़ा अस्थिर था और उसने अपनी पिस्तौल का इस्तेमाल किया और दो या तीन राउंड फायर किए। उसे हिरासत में ले लिया गया। चिंता करने की कोई बात नहीं है। उसे डॉक्टर के सामने पेश किया जाएगा।

## श्मशान घाट सिर्फ ...

इस्तेमाल हो रहा था। सरकारी निकाय ने यहां जातीय भेदभाव को बढ़ावा देकर कानून का उल्लंघन किया है। इस पर तुरंत रोक लगनी चाहिए। सीपीआई (एम) नेता गयाधर धल ने भी इसे अवैध बताया और कहा कि अन्य जाति को लोगों को भी इसका अधिकार है। उन्होंने कहा कि यह शमशान घाट संविधान के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। इससे जातिवाद को बढ़ावा मिलता है।

## कोकराझाड़ में हेलमेट...

निगरानी के लिए जिला प्रशासन ने आज एक अभियान चलाया। कोकराझाड़ सदर शहर में नाराबारी सुमन पेट्रोल पंप और रिलायंस पंप में भारत पेट्रोलियम और इंडियन ऑयल को आदेशों की अवहेलना करने पर रात के लिए खरीद-बिक्री बंद करने का आदेश दिया गया है। अभियान में एसडीओ मुख्यालय जीतूराज गोगोई, आपूर्ति निरीक्षक संजय गोस्वामी, पुलिस उपाधीक्षक देबजीत महंत और जिला परिवहन अधिकारी धजेन बसुमतारी उपस्थित थे।

## विशाखापत्तनम जासूसी मामला...

दर्ज किया। एनआईए ने इस साल जून में मामला अपने हाथ में लिया था। टीमों ने आज उस स्थान से दो मोबाइल फोन भी जब्त किए, जहां से शेख को गिरफ्तार किया गया था। टीम के द्वारा मारे गए अन्य स्थानों से दो और मोबाइल फोन और कई संवेदनशील दस्तावेज जब्त किए गए। इस साल 19 जुलाई को एनआईए ने फरार पाकिस्तानी नागरिक मीर बालाज खान समेत दो आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था। जांच से पता चला है कि मीर बालाज खान, गिरफ्तार आरोपी आकाश सोलंकी के साथ, एक जासूसी मॉड्यूल का हिस्सा थे, जो भारतीय नौसेना से संबंधित संवेदनशील महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर रहे थे और पाकिस्तान स्थित हैंडलर्स को लीक कर रहे थे। इस साल 6 नवंबर को, एनआईए ने दो अन्य आरोपियों के खिलाफ पूरक आरोप पत्र दायर किया, जिनकी पहचान मनमोहन सुरेंद्र पांडा और अल्वेन के रूप में की गई है। एनआईए ने कहा कि जबकि पांडा गिरफ्तार है, पाकिस्तानी इंटेलिजेंस ऑपरेटिव अल्वेन फरार है, क्योंकि वह पाकिस्तान में स्थित है। एजेंसी ने कहा कि मामले में जांच जारी है और अमान से हिरासत में पूछताछ से देशभर में रक्षा प्रतिष्ठानों से संबंधित संवेदनशील और वर्गीकृत जानकारी प्राप्त करने के लिए विदेशी-आधारित तत्वों द्वारा किए गए प्रयासों से संबंधित साजिश में और सुराग मिलने की उम्मीद है।

## पीएम मोदी और...

बढ़ावा देने वाले बयानों को देने पर लगाया जाता है। पुलिस ने बयान जारी करते हुए कहा कि दाऊद इब्राहिम गैंग का नाम लेकर मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम को धमकी भरा कॉल करने के मामले में एक शख्स को गिरफ्तार किया गया है। शख्स का दावा है कि दाऊद गैंग ने उसे पीएम मोदी और यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ की हत्या करने को कहा है। कॉल करने वाले शख्स ने जेजे अस्पताल को उड़ाने की धमकी भी दी है। आईपीसी की धारा 505 (2) के तहत केस दर्ज कर लिया गया। अक्तूबर में, मुंबई पुलिस को एक मेल मिला था जिसमें धमकी दी गई कि अगर भारत सरकार 500 करोड़ का भुगतान करने और कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई को रिहा करने में विफल रही तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अहमदाबाद में उनके नाम पर बने स्टेडियम को उड़ा दिया जाएगा। ईमेल में यह भी उल्लेख किया गया है कि आतंकवादी समूह ने हमलों को अंजाम देने के लिए पहले से ही लोगों को तैनात कर दिया था। पुलिस के अनुसार, धमकी भरा मेल शुरू में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को भेजा गया था, जो स्पष्ट रूप से यूरोप में उत्पन्न हुआ था और संघीय एजेंसी ने मुंबई पुलिस को इसके बारे में सचेत किया था। इससे पहले अगस्त में, केरल पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया था जिसने कथित तौर पर राज्य की दो दिवसीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी पर आत्मघाती हमले की धमकी वाला पत्र लिखा था। हालांकि, बाद में पता चला कि आरोपी ने अपने पुराने दोस्त और पड़ोसी को फंसाने के लिए पत्र लिखा था।

## गाजा में निर्दोष ...

भारत के पक्ष को दोहराते हुए कहा कि संकट के समाधान के लिए कुटनीति और वार्ता का सहारा लिया जाना चाहिए। इस सिलसिले में उन्होंने संबंधित पक्षों के बीच सीधी वार्ता का सुझाव दिया। फिलिस्तीनी जनता के हितों पर जोर देते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि दो देशों के अस्तीत्व संबंधी समाधान पर गंभीरता और सतत प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने मानवीय त्रासदी का सामना कर रही फिलिस्तीनी आवाम तक कारगर एवं सुरक्षित ढंग से मानवीय सहायता सुनिश्चित किए जाने पर भी जोर दिया। साथ ही उन्होंने सभी बंधकों की रिहाई पर भी जोर दिया। जयशंकर ने राष्ट्रपति रामाफोसा की ओर से आपात शिखरवार्ता आयोजित करने का स्वागत करते हुए इसे सामयिक कदम बताया। उन्होंने ब्रिक्स के सदस्य बनने जा रहे देशों के नेताओं को भी शिखरवार्ता में शामिल करने की पहल का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम एशिया के घटनाक्रम के बारे में विभिन्न विश्व नेताओं से बातचीत की है। प्रधानमंत्री ने शांति और सीधी एवं सार्थक शांति वार्ता के लिए माहौल बनाने पर जोर दिया है। जयशंकर ने फिलिस्तीन में प्रभावित लोगों की सहायता के लिए भारत की ओर से भेजी गई मानवीय सहायता का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारत ने अब तक 70 टन मानवीय सहायता भेजी है, जिसमें 70 टन दवा एवं चिकित्सा सामग्री है। यह राहत सहायता आगे भी जारी रहेगी। विदेश मंत्री ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी को इस समय एक जटिल स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। इसके बहुत से आयाम है। हमें इन सभी पर गौर करना है, साथ ही प्राथमिकताएं भी तय करनी है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि जमीनी स्तर पर तात्कालिक रूप से सुधार हो तथा स्थायी समाधान निकले। शिखरवार्ता में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिंगपिंग, साउदी शहजादे मोहम्मद बिन सलमान सहित अन्य शामिल हुए थे। ब्रिक्स अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने इजरायल की कड़ी निंदा की तथा उस पर गाजा में नरसंहार और युद्ध अपराध करने का दोषारोपण किया। वहीं राष्ट्रपति पुतिन ने फिलिस्तीन के मौजूदा हालात के लिए अमेरिका की वर्चस्व वादी नीतियों को दोषी ठहराया। चीन के राष्ट्रपति ने संकट से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा और सुरक्षा परिषद में पारित किए गए प्रस्तावों पर कारगर ढंग से अमल किए जाने पर जोर दिया।

## राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा...

निर्माण कराया जा रहा है। इनमें ठहरने और भोजन की उत्तम व्यवस्था मुहैया कराई जाएगी। बयान में अयोध्या विकास प्राधिकरण (एडीए) के सचिव सत्येंद्र सिंह के हवाले से यह जानकारी दी गयी है कि माझा गुप्तार घाट में 20 एकड़ भूमि में टेंट सिटी स्थापित की जाएगी। इसमें लगभग 20 से 25 हजार श्रद्धालुओं के रहने की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने बताया कि अयोध्या धाम में ब्रह्मकुंड के पास भी एक टेंट सिटी स्थापित की जा रही है। इसमें 35 टेंट लगेंगे, जिसमें लगभग 30 हजार श्रद्धालुओं के रुकने की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने बताया कि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से बाग बिजेसी में 25 एकड़ भूमि में टेंट सिटी स्थापित की जा रही है, जिसमें लगभग 25 हजार लोगों के रुकने की व्यवस्था हो सकेगी। इसके अलावा कारसेवकपुरम व मणिराम दास की छावनी में भी श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए टेंट सिटी स्थापित की जाएगी। सत्येंद्र सिंह ने बताया कि 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के समय कड़ाके की ठंड रहेगी। ऐसे में यहां आने वाले श्रद्धालुओं को ठहरने के लिए टेंट सिटी स्थापित की जा रही है। शीतकाल में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को देखते हुए टेंट सिटी का निर्माण इस प्रकार किया जाएगा कि श्रद्धालुओं को ठंड से राहत मिल सके। इसके लिए गद्दे-कंबल का भी प्रबंध हो रहा है। यहां ठहरने वाले श्रद्धालुओं के लिए शौचालय व स्नानगृह के अतिरिक्त भोजन के लिए भंडारागृह व मेडिकल शिविर का भी प्रबंध किया जाएगा। उन्होंने बताया कि एडीए की ओर से जो टेंट सिटी स्थापित की जा रही है वह ठेकेदारों द्वारा निर्मित की जाएगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होंगे।

## मिजोरम में शांतिपूर्ण ...

मिजोरम के चर्चों में होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों में बांधा पहुंचने का हवाला देते हुए मतगणना की तिथि को बदलने की मिजोरम के विभिन्न चर्च संगठनों द्वारा मांग की गई थी। लेकिन, केंद्र सरकार द्वारा इसमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया गया। चुनाव आयोग की स्वतंत्रता और निष्पक्षता को बरकरार रहने दी गई। डीजीपी ने कहा कि चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुसार चुनाव की प्रक्रिया पूरी होगी। हालांकि, चुनाव प्रचार के अंतिम दिन रविवार होने की वजह से राज्य में किसी भी राजनीतिक दल या उम्मीदवार ने इस दिन चुनाव प्रचार नहीं किया था। ज्ञात हो कि मिजोरम में रविवार को किसी भी प्रकार की गतिविधि नहीं होती है। चर्च द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी तरह पालन होता है। इसी बीच मिजोरम में मतदान 07 नवंबर को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो चुका है। डीजीपी ने कहा कि 3 दिसंबर को होने वाले मतगणना के लिए भारी मात्रा में सुरक्षा बलों की विभिन्न स्तर पर तैनाती की गई है। उन्होंने कहा कि वोटिंग मशीनों की पूरी तरह से सुरक्षा की जा रही है। उन्होंने बताया कि नागरिक प्रशासन को पुलिस प्रशासन सहायता देगी। इसके लिए केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल एवं अन्य केंद्रीय सुरक्षा एजेंसी तैयार हैं। डीजीपी ने कहा कि इन सब के अलावा आईआरबीएन तथा मिजोरम सशस्त्र पुलिस को भी विभिन्न स्तर पर तैनात किया गया है। एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डीजीपी ने कहा कि म्यांमार के साथ मिजोरम की लंबी सीमा लगी हुई है। म्यांमार से व्यापक पैमाने पर अवैध तरीके से हेरोइन, याबा टैबलेट, अवैध शराब, स्फटिक मेथ आदि का स्मगलिंग किया जाता है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि व्यापक पैमाने पर याबा टैबलेट जब्त किए गए हैं। बीते महीने में 75 करोड़ रुपए कीमत की स्फटिक मेथ जब्त की गई। ड्रग्स पर पूरी तरह से रोक लगाने के लिए सुरक्षा बल पूरी तरह से तत्पर हैं। उल्लेखनीय की वर्तमान विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान मिजोरम में ड्रग्स का प्रचलन एक बहुत बड़ा मुद्दा था। 40 सदस्यों वाली मिजोरम विधानसभा चुनाव में शामिल हुए सत्तारूढ़ मिजो नेशनल फ्रंट, भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, जोरम पीपुल्स मूवमेंट आदि पार्टियों के उम्मीदवारों की नजरें मतगणना पर टिकी हुई है।

## गांधी परिवार से ...

नवजीवन नामक अखबार शुरू किए। नब्बे के दशक में यह दोनों अखबार बंद हो गए। पर कांग्रेस के दौर में अखबार निकालने के नाम परभारत के कई शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई और लखनऊ में जमीनें आवंटित की गईं। अखबार बंद हो जाने के बाद एक योजना बनाकर दि एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) का कर्ज उतारने के लिए गांधी परिवार ने यंग इंडियन नामक कंपनी बनाई और एजेएल को कांग्रेस पार्टी के फंड से 90.21 करोड़ रुपए का कर्जा दिया, फिर कर्जा न लौटा पाने पर यंग इंडियन को ही उसका मालिकान हक सौंप दिया। यानी 90.21 करोड़ रुपए पार्टी फंड से देकर सोनिया परिवार ने दि एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) की देश भर में फैली हजारों करोड़ की सम्पत्ति का मालिकाना हक प्राप्त कर लिया। यह घोटाला वरिष्ठ अधिवक्ता व राजनेता सुब्रह्मण्यम स्वामी लोगों के सामने लाए और जनहित याचिका दाखिल कर इसके मुख्यालय हेराल्ड हाउस को केंद्र बनाया। उनका कहना था कि यंग इंडियन कंपनी बनाकर सोनिया परिवार ने गैरकानूनी तरीके से एजेएल का अधिग्रहण किया और इस प्रकार सोनिया परिवार और कांग्रेस के कुछ नेता देश भर में एजेएल से जुड़ी करीब 2 हजार करोड़ रुपए की संपत्ति के स्वामी बन गए हैं। इसके बाद आनन फानन में एजेएल को फिर से जीवित कर नेशनल हेराल्ड और नवजीवन का फिर से प्रकाशन शुरू कराया गया है। पर यंग इंडियन के एजेएल पर अधिग्रहण के तरीके को लेकर आर्थिक अपराध का मामला इससे खत्म नहीं हुआ है। उल्लेखनीय है कि न्यायालय में मामला जाने के बाद ईडी ने भी मामला दर्ज किया और वह कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, वर्तमान अध्यक्ष मलिल्कार्जन खड़गे, मोती लाल बोरा और अहमद पटेल सहित अनेक कांग्रेस नेताओं से पूछताछ कर चुकी है। ये सभी नेता सुप्रीम कोर्ट तक का दरवाजा खटखटा चुके हैं पर वहां से कोई राहत नहीं मिली है। सोनिया गांधी और राहुल गांधी समेत अनेक नेता इस मामले में निचली अदालत से जमानत पर हैं।

## नक्सलियों ने जन ...

से दो नक्सली मारे गए। पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल ने बताया कि घटना की जानकारी मिली है और इसकी जांच की जा रही है। उल्लेखनीय है कि कांकेर जिला में सोमवार को सुरक्षा बलों ने नक्सलियों की बड़ी साजिश को नाकाम करते हुए 3 पाइप बम, 2 कुकर बम बरामद किया है। मामले की पुष्टि कांकेर पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल ने की है। जवानों को सर्चिंग के दौरान ग्राम उलिया और माड़ पखांजूर के मध्य टेकरी के पास आईईडी मिला। जवानों ने इसे कब्जे में लेकर डिफ्यूज कर दिया। प्रथम चरण के चुनाव के दौरान इसी जगह पुलिस और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ भी हुई थी।

## पुलिस एनकाउंटर में घायल मोस्ट वांटेड ड्रग्स माफिया हेकमत अली

**नगांव ( हिंस )।** मोस्ट वांटेड ड्रग्स माफिया हेकमत अली पुलिस एनकाउंटर में घायल हो गया। पुलिस ने आज बताया कि काफी समय से पीछा कर रहे ड्रग्स माफिया हेकमत अली को गुप्त सूचना के आधार पर जिले के सामागुड़ी इलाके से बीते कल गिरफ्तार किया गया था। रात्रि के समय पुलिस उसे साथ लेकर उसके द्वारा बताए गए ठिकाने पर ड्रग्स बरामद करने पहुंची। अंधेरे का फायदा उठाकर भागने की कोशिश कर रहे ड्रग्स माफिया हेकमत पर पुलिस ने गोली चला दी। पुलिस ने उसके पैर पर गोली मारी, जिस कारण वह भाग नहीं सका। पुलिस ने उसे पकड़कर घायल अवस्था में अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करा दिया। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार ड्रग्स तस्कर पर इस पूरे इलाके में लंबे समय से ड्रग्स की तस्करी करने का आरोप है।

## नगांव में नौ किलो गांजा के साथ तस्कर गिरफ्तार

**नगांव ( हिंस )।** जिले के जामुगुड़ीहाट में नौ किग्रा गांजे के साथ पुलिस ने एक कुख्यात तस्कर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आज बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर जिले की जामुगुड़ी थाना पुलिस ने एक अभियान चलाया। अभियान के दौरान नौ किग्रा गांजा बरामद किया गया। पुलिस ने गांजे के साथ कुख्यात तस्कर अब्दुल शहीद को गिरफ्तार कर लिया। इस संदर्भ में पुलिस ने जामुगुड़ी थाना में एक प्राथमिक की दर्ज कर आगे के कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है।

# महिला हत्या के मामले में चार लोग गिरफ्तार

**कछार ( हिंस )।** कछार में हुई एक महिला की हत्या के मामले में आज चार लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया हैं। पुलिस ने बताया कि 19 नवंबर को देर शाम पुलिस को सूचना प्राप्त हुई थी कि जिले के लखीपुर थाना अंतर्गत टोलेंग्राम, पलोरबांड में सड़क किनारे एक अज्ञात महिला का शव पड़ा हुआ है। तदनुसार, पुलिस टीम मौके पर पहुंची और पूछताछ शुरू की। मृतक के शव की जांच कार्यकारी मजिस्ट्रेट द्वारा आवश्यक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए की गई। फिर मृतक के शव को स्थानीय पीएचसी में स्थानांतरित कर दिया गया। आगे की जांच करने पर शव की पहचान सोमा दास (27) के रूप में हुई। इसके बाद आवश्यक औपचारिकताओं के पालन के लिए शव को एसएमसीएच मुर्दाघर

में रखा गया है। पुलिस ने घटनास्थल का दौरा किया और आगे की जांच शुरू कर दी है। इसके अलावा, परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर मृतिका के पति प्रद्युत दास को हिरासत में लिया गया और गहन पूछताछ की गई, जिसने बाद में तीन अन्य लोगों के साथ मिलकर अपराध में शामिल होने की बात कबूल की। इसके बाद, उनके खुलासे और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर, एक अन्य मुख्य आरोपी अर्जुन बैस्णब (23) को हिरासत में लिया गया है। उक्त दोनों आरोपियों से पूछताछ के दौरान, उन्होंने मामले के सभी तथ्यों का खुलासा किया और अपने सह-सहयोगियों के नामों का खुलासा किया, अर्थात डुलोन बैष्णब (49) और रोनोजीत बैष्णब (26) को हिरासत में ले लिया गया। ये सभी अपराध को अंजाम देने में भी शामिल थे। तदनुसार, दुलोन बैष्णब और रोनोजीत बैष्णब को रात भर की तलाशी के बाद आज गिरफ्तार कर लिया गया। ये अपराध करने के बाद से पुलिस की गिरफ्तारी से बच रहे थे। उल्लेखनीय है कि अपराध में प्रयुक्त वाहन एमएल-04-ए-3452 (सफेद रंग की अल्टो कार) को भी बरामद कर विधिवत जब्त कर लिया गया। इस सिलसिले में लखीपुर थाने में भारतीय दंड संहिता की धारा 120(बी)/ 302/ 34 केस नंबर 314/ 23 मृतक की मां द्वारा दर्ज कराया गया। अब मामले को तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए अब तक एकत्र किए गए महत्वपूर्ण सबूतों को इकट्ठा कर पुलिस इसकी जांच कर रही है।

# बंगाईगांव : छठ पूजा के दौरान श्री अग्रवाल युवा परिषद ने भक्तों के बीच नि:शुल्क चाय-पानी की सहरानीय सेवा

**बंगाईगांव।** हाल ही में संपन्न छठ पूजा के दौरान श्री अग्रवाल युवा परिषद द्वारा सभी सदस्यों के सहयोग से पालपाड़ा घाट पर नि:शुल्क चाय-बिस्कुट-नमकीन की सुंदर व्यवस्था की थी जिसका सभी भक्तों ने भरपूर लाभ लिया। ज्ञात हो कि गत कई वर्षों से श्री अग्रवाल युवा परिषद के सदस्य छठ पूजा घाट पर उपस्थित सभी भक्तों को नि:शुल्क चाय, पानी, बिस्कुट, नमकीन आदि की सेवा करती आई है। श्री अग्रवाल युवा परिषद के अध्यक्ष गोविंद अग्रवाल एवं सचिव श्री रंजीत सुरेखा के नेतृत्व में परिषद के सदस्य नवीन अग्रवाल, रविकांत अग्रवाल, सुनील अग्रवाल, सुजीत घिरिया, जितेश बजाज, नीलम अग्रवाल, कोयल अग्रवाल, नीलू अग्रवाल, गरिमा अग्रवाल, विनीता अग्रवाल, आशा सुरेका, रीना अग्रवाल के अलावा महेश कुमार अग्रवाल का सक्रिय सहयोग रहा। ज्ञात हो की ये सदस्य अपने हाथों से चाय बनाकर भक्तों को पिलाते हैं। दूसरी तरफ पंपु हाउस घाट पर भी समाज के कुछ युवकों ने सराहनीय चाय पानी बिस्कुट व नमकीन

की अच्छी व्यवस्था की थी। इस घाट पर यह सेवा निर्मल बैद, दीपेश सुरेका, चंदन गुप्ता, धर्मेंद्र बैद, संजय सुरेका व निर्मल बेताल के अथक प्रयासों एवं सक्रिय सहयोग के कारण संपन्न हुई। दोनों घाटों पर समाज के युवा पीढ़ीयों द्वारा की गई नि:शुल्क सेवा के लिए सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की एवं आशा व्यक्ति की कि भविष्य में भी ऐसी सेवा समाज के द्वारा जारी रहेगी।

## भाजपा का कार्यालय हमारे लिए मंदिर सदृश : पीयूष

**चराईदेव ( हिंस )।** राज्य के सूचना प्रसारण, जल संसाधन आदि मामलों के मंत्री पीयूष हजारिका ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यालय हमारे लिए मंदिर के समान है। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यालय पार्टी के हर पदाधिकारी तथा कर्मी के लिए मंदिर की तरह है। आज उन्होंने पार्टी के सोनारी और सापेखाती मंडलों के नवनिर्मित कार्यालयों का उद्घाटन करने के बाद वहां आयोजित एक भव्य उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यालय का उद्घाटन करके वे बहुत उत्साहित हैं। दोनों कार्यालयों से निश्चित रूप से दोनों मंडलों के पदाधिकारियों को पार्टी के काम को जारी रखने में लाभ होगा। उल्लेखनीय है कि कार्यालय के उद्घाटन के पूर्व पार्टी कार्यकर्ताओं ने एक विशाल बाइक रैली के साथ मंत्री का स्वागत किया। बाद में इस रैली में मंत्री भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि पार्टी अधिकारियों के अपार स्नेह ने उन्हें प्रभावित किया है। समारोह में उनके साथ मंत्री जोगेन महन, सांसद तपन कुमार गोगोई, जिला, मंडल और बूथ पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं मौजूद थे।

## श्री श्याम परिवार का 62वां भजन-कीर्तन आयोजित

**नगांव ( विसं )।** श्री श्याम परिवार, नगांव के तत्वावधान में श्री श्याम कीर्तन का आयोजन किया गया। मिली जानकारी के अनुसार मनोज बजाज के नवनिर्मित व्यापारिक प्रतिष्ठान पर शनिवार को श्री श्याम बाबा का कीर्तन में सभी लोगो ने पूरे भक्ति के साथ आनंद लिया। इस कीर्तन के साथ श्री श्याम परिवार का 62वां कीर्तन पूरा हुआ है, जिसमें बाबा की अखण्ड ज्योत जगाई गई साथ ही सभी भक्तों को मोर छड़ी से आशीर्वाद दिया गया। श्री श्याम बाबा का श्रृंगार और भजन रस भक्तों का मन मोह रहा था। उल्लेखनीय है कि श्री श्याम परिवार, नगांव प्रत्येक उस घर या प्रतिष्ठान में श्री श्याम बाबा का दरबार बैठा कर कीर्तन का कार्यक्रम करते है। स्थानीय भजन गायक संदीप पारीक, अरूण शोभासरिया, संजय पोद्दार द्वारा गाये गए भजनों पर सभी भक्त मगन होकर नाचने पर मजबूर हो गए। श्री श्याम परिवार द्वारा बजाज परिवार को श्री श्याम बाबा की एक तस्वीर उपहार स्वरूप भेंट की गई।

आरती के पश्चात सभी भक्तों के लिए प्रसाद की व्यवस्था कीर्तन स्थल पर की गई थी। इसकी जानकारी राहुल भजनका ने दी।

## ओरांग में शिशु हत्याकांड के दो आरोपी गिरफ्तार

**उदालगुड़ी ( हिंस )।** बच्चे की हत्या के आरोपी मजनू अली तथा अन्य एक अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आज बताया कि सापमारी थाना प्रभारी सुनील सरकार के नेतृत्व में की गई छापेमारी में मजनू अली के साथ एक अन्य आरोपी सफीकुल इस्लाम को गिरफ्तार करने में सफलता मिली। उल्लेखनीय है कि 5 नवंबर को उदालगुड़ी के मेधीपारा में मेसर्स अख्तर फर्नीचर/टिम्बर एसओपी नामक अवैध मिल में एक बच्चे की बर्बर हत्या हुई। मिल के एक कर्मचारी मजनू अली ने कथित तौर पर 8 वर्षीय लड़के राशिद अंसारी का सिर टिंबर मशीन में घुसाकर उसकी हत्या कर दी थी। मजनू अली की तुरंत गिरफ्तारी की मांग की जा रही थी। आखिरकार 15 दिन बाद सापमारी पुलिस ने फरार मजनू अली को गिरफ्तार कर लिया। उसके साथ एक अन्य व्यक्ति शफीकुल इस्लाम को भी गिरफ्तार किया, जिसका नाम प्राथमिकी में मृतक के परिवार वालों द्वारा दर्ज कराया गया था।

# कामरूप जिले के गांवों में *विकसित भारत संकल्प यात्रा* अभियान शुरू

**रंगिया ( विभास )।** कामरूप जिले के गांवों में *विकसित भारत संकल्प यात्रा* नामक एक विशेष अभियान कल से शुरू होगा। इस अभियान का उद्देश्य देश के हर गांव में अत्याधुनिक वाहनों के माध्यम से सरकार की विभिन्न प्रमुख योजनाओं के बारे में लोगों को जागरूक करना और यह सुनिश्चित करना है कि सभी पात्र व्यक्तियों को इन योजनाओं का लाभ मिले। कृषि, पशुपालन, सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकी, ग्रामीण विकास, खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभागों द्वारा कार्यान्वित विभिन्न जन-उन्मुख योजनाओं के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए अभियान चलाया जाएगा। यह आयोजन सभी गांव पंचायत कार्यालयों या आसपास के किसी भी सुविधाजनक स्थान पर आयोजित किया जाएगा। योजना में भाग लेने वाले विभिन्न विभागों के अधिकारी लोगों को योजनाओं की प्रभावशीलता, लाभार्थियों के चयन की प्रक्रिया आदि के बारे में जानकारी देंगे और लोगों के सवालों के जवाब देंगे। इस कार्यक्रम के समुचित क्रियान्वयन के लिए जिला से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक नामित अधिकारियों को जिम्मेदारी दी जा चुकी है। इसके लिए गत 18 नवंबर को जिला विकास आयुक्त नरसिंह बे की अध्यक्षता में बैठक हुई बैठक में जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पराग कुमार काकोती

भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ कल दिनांक 22 नवंबर को सुबह 9.30 बजे कमलपुर विकास क्षेत्र अंतर्गत केंदुकोना गांव पंचायत में किया जाएगा। इसी दिन दोपहर 1.30 बजे से 3.30 बजे तक बाईहाटा पंचायत में *विकसित भारत संकल्प यात्रा* होगी। कार्यक्रम आगामी 27 नवंबर तक कमलपुर प्रखंड के विभिन्न गांवों में यह कार्यक्रम आयोजित करने के पश्चात 28 नवंबर से 3 दिसंबर तक बिहदिया जाजीकोना विकास क्षेत्र और 4 से 7 नवंबर तक बेजेरा विकास क्षेत्र और 7 से 14 दिसंबर तक रंगिया विकास क्षेत्र के अंतर्गत गांव पंचायतों में आयोजित किया जाएगा।

## एनएससीएन (आर) कैडर अरुणाचल प्रदेश में गिरफ्तार

**इटानगर ( हिंस )।** अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले में सेना ने एनएससीएन (आर) उग्रवादी संगठन के एक सदस्य को गिरफ्तार किया है। सेना की डिगबोई बटालियन और सोहा पुलिस थाना की एक टीम के संयुक्त अभियान में गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार एनएससीएन (आर) कैडर अमान जुग्ली को देवमाली के सोहा से गिरफ्तार किया गया। एनएससीएन (आर) कैडर एक स्वयंभू कैप्टन है। वह खारसांग, नामफाई और देवमाली इलाकों में जबरन वसूली की गतिविधियों में कथित तौर पर शामिल था। पकड़ा गया व्यक्ति चांगलांग जिले का रहने वाला बताया जा रहा है। गिरफ्तार कैडर को आगे की पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया गया है।

# आईटीए सेंटर में *हार्मनी 2023* का उद्घाटन

### शिशु निकेतन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का दो दिवसीय वार्षिक समारोह शुरू

**गुवाहाटी ( विभास )।** माछखोआ स्थित प्रागज्योति आईटीए सांस्कृतिक केंद्र में मंगलवार को शिशु निकेतन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के वार्षिक समारोह *हार्मनी 2023* का विधिवत शुभारंभ किया गया। समारोह का उद्घाटन स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पवन कुमार अग्रवाला ने किया। इस मौके पर स्कूल प्रबंधन समिति के सचिव प्रो. प्रदीप कुमार जैन, कोषाध्यक्ष किशन लोहिया, सयुक्त सचिव नवल किशोर मोर, प्राचार्य श्रीमती रीना भौमिक, उप प्राचार्य सरवरी दास सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। समारोह में स्वागत संबोधन देते हुए स्कूल की प्राचार्य श्रीमती रीना भौमिक ने कहा कि शिक्षा कक्षा की चारदीवारी के भीतर होने वाली गतिविधियों से कहीं अधिक है। उन्होंने बच्चों के समग्र विकास के

लिए स्कूल द्वारा की जाने वाली विविध गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पवन कुमार अग्रवाला ने अपने प्रेरक शब्दों से विद्यार्थियों को प्रेरित किया। इस दौरान सचिव प्रो. प्रदीप कुमार जैन ने भी अपने विचारो से बच्चों को प्रोक्साहित किया। इस मौके पर स्कूल पत्रिका *शिशु ज्योति* के 25वें संस्करण का विमोचन उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने किया। पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों का विहंगम दृश्य प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर सत्र 2022 के कक्षा टॉपर्स को अकादमिक पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही कुछ शिक्षण संकाय को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। हार्मनी 2023 नामक इस समारोह में भक्ति से लेकर देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक मुद्दे, पौराणिक नाटक के माध्यम से अतीत का महिमामंडन जैसे प्रदर्शनों की एक श्रृंखला शामिल थी। पर्यावरण बचाओ विषय पर एक माइम शो भी प्रस्तुत किया गया। समारोह के पहले दिन धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय की उपप्राचार्या श्रीमती सरवरी दास ने दिया। समारोह में विद्यालय प्रबंध समिति की ओर से कृष्ण कुमार जालान, रमेश चंद जैन, कैलाश नाथ मित्तल, अमनदीप कौर, समानिया अतिथि मनीष भौमिक सहित विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक एवं समाज के अन्य गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

# तीन दिवसीय हेल्थकेयर फेस्टिवल 2.0 हुआ शुभारंभ

**नगरबेड़ा ( विभास )।** भारत के पहले राज्य के रूप में असम में स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में दूसरा स्वास्थ्य देखभाल महोत्सव -2.0 कल से तीन दिवसीय कार्यक्रम के साथ शुरू हो गया है। स्वास्थ्य देखभाल महोत्सव का उद्देश्य मुख्य रूप से स्वास्थ्य क्षेत्र की गुणवत्ता निर्धारित करना, बुनियादी ढांचे में सुधार करना और आम जनता को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की डिलीवरी सुनिश्चित करना है। इसके लिए स्वास्थ्य देखभाल उत्सव आलोपति लघु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कल और आज यानी 20 और 22 नवंबर से सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। हेल्थ केयर फेस्टिवल-2.0 में बरपेटा जिला स्वास्थ्य विभाग के तहत कुल 63 अस्पतालों का आकलन करने के उद्देश्य से शुरू किए गए। स्वास्थ्य देखभाल उत्सवों में से, बरपेटा जिले में 42 और बजली जिला परिसर के भीतर 21 अस्पतालों को जिला स्वास्थ्य विभाग के साथ-

साथ दो जिला प्रशासनों द्वारा आवश्यक प्रशिक्षण मूल्यांकन अधिकारियों को पहले ही दिया जा चुका है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अध्यक्ष मोयेजउद्दीन अहमद ने संवाददाताओं को यह जानकारी दी। राज्य सरकार की ओर से बरपेटा जिला स्वास्थ्य विभाग के लिए बाहरी मूल्यांकन के लिए नौ उच्च पदस्थ प्रशासनिक अधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया है। इसके अलावा, बरपेटा में फखरुद्दीन अली अहमद मेडिकल कॉलेज बरपेटा से 22 और जिला प्रशासन के तहत विभिन्न विभागों के 63 शीर्ष अधिकारियों को अंतर-अंतिम अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया। उल्लेखनीय है कि स्वास्थ्य सेवा महोत्सव के पहले दिन आईपीएस अधिकारी डॉ. राजामार्तंडन और बाघबर विधानसभा क्षेत्र के विधायक शर्मन अली अहमद के साथ कार्यक्रम में भाग लिया था। दूसरे दिन यानी आज स्वास्थ्य केंद्र में आकलन अधिकारी के रूप में महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, बरपेटा की रितुमणि पसानी और फखरुद्दीन अहमद मेडिकल कॉलेज ऑफ गायनेकोलॉजी एंड ऑब्स्टेट्रिक्स विभाग के डॉ. हफीजुर्रहमान उपस्थित थे। दो दिवसीय स्वास्थ्य देखभाल महोत्सव कार्यक्रम में आलोपति चर लघु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. खैरुल आलम ने स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों के साथ भाग लिया और कार्यक्रम का सहयोग किया।

## रंगिया में आयोजित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण एवं विशेष पुरस्कार समारोह का समापन

**रंगिया ( विभास )।** कामरूप जिले के रंगिया में उद्यमिता विकास प्रशिक्षण का समापन और विशेष पुरस्कार प्रदान समारोह सोमवार को सफलता के साथ संपन्न किया गया। सौंदर्य चिकित्सा और कॉस्मोलोजी में उद्यमिता विकसित करने के उद्देश्य से स्थानीय बोनगांव जनजातीय संघ प्रांगण में पिछले छह सप्ताह से आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में स्वेछासेवी संस्था समृद्धि, नॉर्थ ईस्ट इंटरप्रिनारशिप डेवलोपमेन्ट आर्गेनाईजेशन और सृजनी वेलफेयर सोसायटी द्वारा तीन उद्यमियों नीलिमा शर्मा, अंजन कलिता और नीलोत्पल कलिता को विशेष सफलता का पुरस्कार प्रदान किया गया। साथ ही इसी कार्यक्रम में प्रशिक्षण में भाग लेने वाले अन्य 20 उधमियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया। वहीं इस दौरान 4 प्रिशिक्षार्थियो को विशेष पारदर्शी पुरस्कार से नवाजा गया। समापन समारोह कार्यक्रम का संचालन स्वेछासेवी संस्था समृद्धि के सचिव दिकेन डेका द्वारा किया गया जिसमें राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्रशिक्षक हितेंद्र शर्मा,

एमएसएमईडीएफओ गुवाहाटी के सह संचालक एस पाल और स्वास्थ्यकर्मी अमूल्य वैश्य, रंगिया मानवेन्द्र बालिका महाविद्यालय की अध्यापिका रूमी कलिता, सफल उद्यमी जुनू कलिता, प्रशिक्षण संयोजक सविता देवी, मास्टर प्रशिक्षक करवी डेका, नमिता कलिता, भाग्यश्री देवी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों द्वारा प्रशिक्षण में भाग लेने वाले उद्यमियों को प्रमाण पत्र व पुरस्कार प्रदान गया।

## नारायणी सेवा समिति ने मनाया नारायणी जन्मोत्सव

**गुवाहाटी ( विभास )।** नारायणी सेवा समिति गुवाहाटी के सौजन्य से नारायणी सती दादी का जन्मोत्सव माहेश्वरी भवन में भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर नारायणी देवी का भव्य दरबार सजाकर नारायणी राणी सती दादी की प्रतिमा स्थापित कर चुनड़ी व गजरा पहनाया गया। इससे पहले मुख्य यजमान राजेश जालान ने धर्मपत्नी बबीता जालान सहित पूजा अर्चना व आरती की एवं कुमारी कन्या का पूजन करके उन्हें भेंट दी गई। दिव्य ज्योति प्रज्वलन के पश्चात मंगल पाठ वाचिक प्रीति जालान ने संगीतमय मंगल पाठ का वाचन किया। मंगल पाठ में स्वागत नृत्य, जन्मोत्सव पर थाल बजाना एवं जन्मोत्सव बधाई वितरण के पश्चात हल्दी उत्सव, मेहंदी उत्सव, चुनड़ी उत्सव, चुडा उत्सव, गजरा उत्सव, सिंदूर उत्सव की श्रृंखला में गीत व नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। उसके पश्चात सवामणि भोग लगाकर राणी सती दादी नारायणी देवी की गीत और नृत्य के माध्यम से नजर उतारी गई। अंत में महा आरती के पश्चात प्रसाद का भोग लगाकर प्रसाद वितरण किया गया।

## नगांव : श्री गोपाल गौशाल में दो दिवसीय गोपाष्टमी मेला संपन्न

**नगांव ( विसं )।** श्री गोपाल गौशाला, नगांव के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी दो दिवसीय गोपाष्टमी मेले का आयोजन रविवार और सोमवार को दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर गौशाला परिसर को विद्युत रोशनी एंव फूलों सजाया गया। रविवार पहले दिन के कार्यक्रमों क में गौशाला समिति के अध्यक्ष राधेश्याम लोहिया, सचिव रामावतार अग्रवाल सहित अन्य लोगो ने गौ-माता की पूजा अर्चना की। दोपहर को राधा-कृष्ण बनो प्रतियोगिता एंव स्वेक्षिक वेश बुशा प्रतियोगिता का व राधा-कृष्ण बनो प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस मौके पर बच्चों के झुलने की व्यवस्था आयोजन समिति द्वारा की गई थी। इन व्यवस्थाओं का बच्चों ने भरपूर लुफ्त उठाया। वहीं ब्रह्मपुर की नामोति पार्टी के

सदस्यों ने शानदार नाम कीर्तन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सोमवार को दूसरे दिन प्रात: से ही गौ भक्तों का आना आरंभ हुआ और शाम तक गौ पूजन का क्रम जारी रहा। श्री गोपाल गौशाल के तत्कालीन अध्यक्ष सांवरमल खेतावत सहित कई गणमान्य गौ भक्तों ने गौ माता की पूजा की। गौ ग्रास आदि के स्टाल में आयोजन समिति ने सभी प्रकार की वस्तुओं की उत्तम व्यवस्था कर रखी थी जिसे गौ पूजा करने आएं भक्तों को किसी तरह की परेशानी नही हुई। दोपहर में हवन-पूजन का आयोजन भी किया गया जिसके यजमान गोपाल किशन रुठिया थे। श्री रुठिया दंपत्ति ने हवन-पूजन की विधि संपन्न करवाई। बाद में एक धार्मिक नृत्य नाटिका का प्रदर्शन किया गया। इस नाटिका में अंजली अग्रवाल, नितू पोद्दार, डिंपल शर्मा, शिल्पा भरतीया, मोनिका जाजोदिया, पिंकी कनोई, निमिषा अग्रवाल, कविता अग्रवाल, निधि तोदी, मयंक शर्मा ने भाग लिया। उक्त दो दिवसीय गोपाष्टमी मेले के आयोजन सफल बनाने मे, जगदीश प्रसाद सोलंकी, संजय पोद्दार जुगल मोर, नितू पोद्दार सहित तमाम सदस्यो का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम की सफलता उपरांत श्री गोपाल गौशाल के अध्यक्ष राधेश्याम लोहिया व सचिव रामावतार अग्रवाल ने सभी सहयोगियो का धन्यवाद ज्ञापन किया।

# कांग्रेस भ्रष्टाचार, परिवारवाद जैसी 3 बुराइयों का प्रतीक : मोदी

**कोटा, (हि.स.)।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को बारां के अंता और कोटा के दशहरा मैदान में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारत की आजादी को 75 वर्ष पूरे हो गए। अब हमारे सामने विकसित भारत का लक्ष्य है। राजस्थान को विकसित बनाए बिना भारत को विकसित बनाने का लक्ष्य अधूरा है। जब तक भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण नामक देश के तीन दुश्मन हमारे बीच हैं, तब तक इस संकल्प का पूरा होना मुश्किल है। कांग्रेस इन तीन बुराइयों की सबसे बड़ी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आजकल राजस्थान की लाल डायरी की सबसे अधिक चर्चा है। इस साल लाल डायरी के पन्ने जैसे-जैसे खुल रहे हैं, वैसे-वैसे जादूगर के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही हैं। लाल डायरी में साफ-साफ लिखा है कि कांग्रेस सरकार ने पांच वर्षों में आपके जल, जंगल और जमीन को कैसे बेचा है। सूरसेन गोडावण अभयारण्य में क्या हुआ, ये आप मुझसे ज्यादा जानते हैं। अवैध खनन के तार किससे जुड़े हैं, ये किसी से छिपा नहीं है। मैंने कहीं पढ़ा कि कांग्रेस के विधायक ने यहां के मंत्री के लिए कहा है- 'भाया रे भाया खूब खाया। एक गांव तो पूरा ही खाया।' कांग्रेस में मंत्री हो, विधायक हो, सब बेलगाम हैं और जनता त्रस्त है। मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने चंबल रिवर फ्रंट में कैसे-कैसे घोटाले किए हैं, वो भी आपसे छिपा नहीं है। लोगों पर दबाव बनाकर कांग्रेस ने जिन घंटी को जबरन खुलवाने की कोशिश की, उसने एक गरीब मजदूर और एक इंजीनियर का जीवन छीन लिया। आज लोग खुलकर आरोप लगा रहे हैं कि गहलोत सरकार 25 नवंबर को वोटिंग वाले दिन एक घंटा खुलवाने का दबाव डाल रही थी। राजस्थान में बनने वाली भाजपा सरकार न सिर्फ हादसे की जांच कराएगी बल्कि सबको न्याय भी सुनिश्चित करेगी। कांग्रेस की जनता ने राजस्थान को लुटेरों, दंगाइयों, अत्याचारियों, अपराधियों के हवाले कर दिया है। इसलिए आज राजस्थान का बच्चा-बच्चा कह रहा है गहलोतजी कोनी मिले वोट जी। मैं तो एक महीने से छोटे-छोटे बच्चों के वीडियो देख रहा हूं। ये वाक्य बच्चे बोलते हैं। मोदी ने कहा कि राजस्थान में समाज विरोधी ताकतों के हौसले बुलंदी पर हैं। राजस्थान में इंसान का सरेआम गला काटा जा रहा है, जश्न मनाया जा रहा है। झालावाड़ में दलित युवकों के

साथ क्या हुआ, ये भी पूरे देश ने देखा है। तीज-त्योहार के लिए मशहूर राजस्थान में राम नवमी, होली, हनुमान जयंती जैसे त्योहार दंगों की भेंट चढ़ गए। कांग्रेस सरकार में छबड़ा में क्या हुआ था, ये कोई क्या भूल सकता है क्या? इन दंगाइयों पर कड़ा एक्शन होना चाहिए था। ये जेल में होने चाहिए थे लेकिन यहां छबड़ा दंगों का आरोपित सीएम के सरकारी आवास पर रेड कारपेट पर चलता है। उन्होंने कहा कि अभी-अभी दिवाली गई है। हमारी माताएं-बहनें 15-16 घंटे घर में काम करती हैं। हर दिन घर को साफ-सुथरा रखती है, जब दिवाली आती है तो कोने-कोने में सफाई करती है। ये चुनाव भी दिवाली है, हम सबको मिलकर सफाई करनी है। इस बार ऐसी सफाई करो कि किसी कोने में भी कांग्रेस बचनी नहीं चाहिए। ये माताओं-बहनों से सिखोगे कुछ, तब जाकर दिवाली मनेगी। महिला सुरक्षा और महिला कल्याण भाजपा सरकार की प्राथमिकता है। अपनी बहनों को धुएं से मुक्ति मिले, इसलिए आपके इस भाई ने मुफ्त गैस कनेक्शन दिए हैं। इस रक्षा बंधन पर भी हमने उज्ज्वला गैस कनेक्शन पर बड़ी राहत दी थी। अब राजस्थान भाजपा ने गैस के सिलेंडर को और भी सस्ते में देने का ऐलान किया है। मोदी ने कहा कि कांग्रेस की लुटेरी सरकार जनता से किस तरह खिलवाड़ करती है, ये भी राजस्थान के लोग भली-भांति जानते हैं। कांग्रेस ने यहां बिजली बिल कम करने को कहा था लेकिन अब गहलोत सरकार हजारों भाई-बहनों को बिजली के बिल की रिकवरी के नोटिस भेज रही है। यही कांग्रेस का दोगलापन, फरेब और झूठ का गुब्बारा है। कांग्रेस की नीतियों के कारण आज राजस्थान उन राज्यों में से एक है, जहां बेरोजगारी और महंगाई सबसे अधिक है। राजस्थान में भाजपा सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर टैक्स कम किया था लेकिन यहां भी कांग्रेस सरकार ने टैक्स वापस बढ़ाकर लोगों की जेब काट ली है। मोदी ने कहा कि सहरिया समाज सहित सभी आदिवासी भाई-बहनों के लिए मोदी ने सरकार का खजाना खोल दिया है। 15 नवंबर को पीएम जन मन महायोजना शुरू की है। इस योजना पर केंद्र की भाजपा सरकार 24 हजार करोड़ रुपये खर्च करने जा रही है। आदिवासी समाज में सिकल सेल, एनीमिया की बीमारी दूर करने के लिए भी राष्ट्रीय अभियान शुरू किया है। आदिवासी बच्चों के लिए भाजपा की केंद्र सरकार ने 30 से ज्यादा एकलव्य स्कूल खोले हैं। किसान कल्याण भाजपा की प्राथमिकताओं में से एक है। झालावाड़ के संतरे पूरे देश में प्रसिद्ध है। बारां के लहसुन का तड़का देश-विदेश तक पहुंचे, हम इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। राजस्थान भाजपा ने यह भी तय किया है कि सरकार बनने के बाद पीएम सम्मान किसान निधि की राशि भी 12 हजार की जाएगी।

# टनल एक्सपर्ट अर्नोल्ड बोले, वर्टिकल ड्रिलिंग से निकलेगी सिलक्यारा सुरंग में फंसे श्रमिकों की राह

## -रेस्क्यू को पहुंचा डीआरडीओ का रोबोट

**-डिक्स ने कहा, भरोसा रखें 41 आदमी घर आने वाले हैं, यही हमारा मिशन**

**उत्तरकाशी, (हि.स.)।** उत्तराखंड के उत्तरकाशी की सिलक्यारा निमार्णाधीन टनल से 10वें दिन में भरोसा और पक्का हो गया। इस सुरंग में फंसी 41 जिंदगियों को बचाने की मुहिम को धार कैसे दी जाएगी, इसकी जानकारी अंतरराष्ट्रीय टनल एक्सपर्ट अर्नोल्ड डिक्स ने दी। अंतरराष्ट्रीय टनलिंग विशेषज्ञ, अर्नोल्ड डिक्स उम्मीद की किरण लेकर आए हैं। वे खुश हैं और उन्होंने अपनी खुशी का इजहार खुलकर किया है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ घंटे अच्छे रहे और मंगलवार की सुबह वाकई अच्छी है। बोले- पिछले कुछ घंटों में हमें जो खबर मिली है, वो निश्चित रूप से शानदार है...उन लोगों के चेहरे देखना बहुत अच्छा है, जिन्हें हम घर लाने जा रहे हैं। हमारे पास उनके लिए भोजन है और उनसे संपर्क साधना अब आसान है। डिक्स ने 10वें दिन की सुबह को शुभ बताया। वजह है मजदूरों तक ड्राई फ्रूट्स के बाद खिचड़ी पहुंची फिर कैमरा पहुंचा। जिन्हें देखने को पूरा भारत तरस गया था, इसमें वो दिखे। सब कुशल मंगल है। परिवार ने भी कहा कि अब उम्मीद जगी है। डिक्स ने आगे कहा-हम अलग-अलग मोर्चों से भिड़े हुए हैं। ये एक अच्छी सुबह है। साइट तैयार होने के बाद वर्टिकल ड्रिलिंग शुरू हो जाएगी। एक्सपर्ट रेस्क्यू टीम के काम से प्रसन्न दिखे। बोले- वर्टिकल ड्रिलिंग के लिए जरूरी है कि वो सटीक हो... और मुझे लगता है कि यहां टीम ने अद्भुत काम किया है। यह शानदार है...वर्टिकल ड्रिलिंग के लिए दो स्थानों की पहचान की गई है...विश्वास है कि हम इन लोगों को सकुशल बचा लेंगे। भरोसा रखें 41 आदमी घर आने वाले हैं, बिना किसी दिक्कत के यही हमारा मिशन है।

**सिलक्यारा में रेस्क्यू को पहुंचा डीआरडीओ का रोबोट** - उत्तरकाशी की सिलक्यारा निमार्णाधीन टनल में फंसे 41 मजदूरों को निकालने के लिए डीआरडीओ का रोबोट पहुंच चुका है। क्योंकि जिस स्थान से ह्यूम पाइप के के लिए श्रमिकों को निकालने के लिए रास्ता बनाया जा रहा वहां भूस्खलन का भारी खतरा है। इसके लिए एक रोबोट की मांग की गई है जिसके लिए आपदा सचिव डा. रणजीत सिन्हा ने रोबोट के लिए प्रयास किया। इसके बाद डीआरडीओ यहां पर रोबोट ले लाया है। गौरतलब है कि डीआरडीओ भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय का आरएंड डी विंग है, जो अत्यधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकियों और महत्वपूर्ण रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए भारत को सशक्त बनाने की दृष्टि के साथ है, जबकि हमारे सशस्त्र बलों को राज्य के साथ देश स्तर पर आधुनिक तकनीक, प्रौद्योगिकी, उपकरणों और तकनीक से लैस करता है। तीनों सेनाओं की निर्धारित आवश्यकताओं के अनुसार हथियार प्रणाली और उपकरण उपलब्ध कराता है। डीआरडीओ ने आत्मनिर्भरता से देश-दुनिया में अपना लोहा मनवाया है। उसने मिसाइलों की अग्नि और पृथ्वी श्रृंखला जैसे रणनीतिक प्रणालियों और प्लेटफार्मों के सफल स्वदेशी विकास और उत्पादन; हल्के लड़ाकू विमान, तेजस मल्टी बैरल रॉकेट लांचर, पिनाका वायु रक्षा प्रणाली, आकाश; रडार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली की ; एक विस्तृत श्रृंखला आदि ने भारत की सैन्य ताकत को क्वांटम जम्प दिया है।

# आबकारी घोटाला: मनीष सिसोदिया कोर्ट में हुए पेश, अगली सुनवाई 11 दिसंबर को

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में आरोपित और दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया आज राऊज एवेन्यू कोर्ट में पेश हुए। इस मामले की अगली सुनवाई 11 दिसंबर को होगी। सुनवाई के दौरान आज कोर्ट ने सिसोदिया के वकीलों से कहा कि आप मामले के ट्रायल में देरी करना चाहते हैं। 10 नवंबर को कोर्ट ने सिसोदिया को अपनी बीमार पत्नी से मिलने की इजाजत दी थी। 30 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने सिसोदिया को जमानत देने से इनकार कर दिया था। 25 अप्रैल को सीबीआई ने इस मामले में दिल्ली में पूरक चार्जशीट दाखिल की थी। सीबीआई ने इस मामले में सिसोदिया को भी आरोपित बनाया था। पूरक चार्जशीट में सिसोदिया के अलावा जिन लोगों को आरोपित बनाया गया, उनमें बुची

बाबू, अर्जुन पांडेय और अमनदीप ढल शामिल हैं। बुची बाबू तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसी राव की बेटी के. कविता के सीए रह चुके हैं। सिसोदिया को सीबीआई ने 26 फरवरी को गिरफ्तार किया था। 25 नवंबर 2022 को सीबीआई ने पहली चार्जशीट दाखिल की थी। कोर्ट ने 15 दिसंबर 2022 को पहले चार्जशीट पर संज्ञान लिया था। कोर्ट ने आरोपितों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 120बी और भ्रष्टाचार निरोधक कानून की धारा 7, 7ए और 8 के तहत आरोप तय किए थे। पहली चार्जशीट में कोर्ट ने जिन आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट पर संज्ञान लिया है, उनमें कुलदीप सिंह, नरेंद्र सिंह, विजय नायर, अभिषेक बोइनपल्ली, अरुण रामचंद्र पिल्लै, मुत्थू गौतम और समीर महेंद्रू शामिल हैं।

# दिल्ली में पराली से वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान संभव

**अजय त्यागी**

**नई दिल्ली।** दिल्ली में पराली की वजह से उत्पन्न भीषण वायु प्रदूषण की समस्या आने वाले दिनों में और गहराने की संभावना है। यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान केंद्र और राज्यों की सरकारें पिछले कई सालों के दौरान ढूंढ नहीं पाई हैं। अब जर्मनी की सॉफ्टवेयर कंपनी एसएपी के डिप्टी-चेयरमैन पुनित रेनजेन का मानना है कि पराली जलाने की वजह से दिल्ली में पैदा हुई वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान हो सकता है। भारतीय अमेरिकी रेनजेन ने हरियाणा और पंजाब में शुरू की गई दो पायलट परियोजनाओं के आधार पर यह दावा किया है। पुनित रेनजेन के मुताबिक यह बहुत गंभीर स्थिति है और इसके कई कारण हैं, लेकिन दिल्ली में वायु गुणवत्ता संबंधी समस्याओं में पराली जलाने का योगदान लगभग 25 से 30 प्रतिशत का है। उत्तर भारत विशेषकर पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पराली जलाने के 80 हजार मामले होते हैं। करीब 1.3 करोड़ टन पराली जलाई जाती है। इससे 1.9 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैस वायुमंडल में फैलती हैं। शीर्ष भारतीय-अमेरिकी मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) ने पराली जलाने की वजह से 1.5 करोड़ समायोजित जीवन वर्ष का नुकसान होता है जो सालाना दो लोगों की मृत्यु के बराबर है। डेलॉयट के वैश्विक सीईओ एमेरिटस ने कहा कि इससे 30 करोड़ डॉलर के राजस्व का नुकसान होता है। यह उत्तर भारत, दिल्ली और अन्य जगहों पर वायु गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला एक बड़ा मुद्दा है। इसका समाधान किया जा सकता है।

यह एक समाधान योग्य समस्या है। रेनजेन ने कहा कि पिछले दो वर्षों से वह हरियाणा सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और पराली जलाने के मामलों में कमी आई है। रेनजेन ने कहा इस साल हम नौ जिलों के 660 गांवों में काम कर रहे हैं। इससे हरियाणा में आग जलाने की घटनाओं में 58 प्रतिशत की कमी आई है। यह एक समाधान योग्य समस्या है। हम पंजाब के पटियाला जिले में भी काम कर रहे हैं। ताकि यह दिखाया जा सके कि हमारा कार्यक्रम इस मुद्दे का समाधान कर सकता है।

# वैक्सीनेशन, एलोपैथिक दवाइयों के लिए भ्रामक विज्ञापन हटाए पतंजलि, वर्ना लगेगा भारी जुमार्ना : सुप्रीम कोर्ट

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** सुप्रीम कोर्ट ने एलोपैथिक दवाइयों और वैक्सीनेशन के खिलाफ जारी विज्ञापनों पर पतंजलि आयुर्वेद को फटकार लगाई है। कोर्ट ने पतंजलि आयुर्वेद को चेतावनी दी कि वो ऐसे भ्रामक विज्ञापन हटाएं, वर्ना भारी जुमार्ना लगाया जाएगा। कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वो स्वास्थ्य संबंधी भ्रामक विज्ञापनों पर नियंत्रण के लिए प्रस्ताव लेकर आएं। पहले की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने बाबा रामदेव की टिप्पणी पर नाराजगी जताई थी। कोर्ट ने कहा था कि बाबा रामदेव को क्या हुआ है। योग को लोकप्रिय बनाने के लिए हम उनकी इज्जत करते हैं परन्तु उन्हें इलाज के दूसरे तरीकों पर यूं सवाल नहीं उठाना चाहिए। उन्हें दूसरों की आलोचना करने से बचना चाहिए।

याचिका इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) ने दायर की है। याचिका में बाबा रामदेव के कोरोना वैक्सीन और एलोपैथिक दवाइयों को लेकर दिए गए बयान पर नियंत्रण लगाने का दिशानिर्देश जारी करने की मांग की गई है। आईएमए ने याचिका में कहा है कि आयुष कंपनियां भी अपने बयानों से आम जनता को भ्रमित कर रही हैं। वे कहती हैं कि डॉक्टर एलोपैथिक दवाइयां लेते हैं लेकिन उन्हें भी कोरोना ने अपना शिकार बनाया। आईएमए ने कहा है कि इस तरह की भ्रामक बयानबाजी पर रोक लगाने की जरूरत है। आईएमए ने अपनी याचिका में केंद्र सरकार, एडवरटाइजिंग स्टैंडर्ड्स काउंसिल ऑफ इंडिया, सेंट्रल कंज्यूमर प्रोटेक्शन अथॉरिटी और पतंजलि आयुर्वेद के अलावा केंद्र सरकार और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार मंत्रालय को ऐसे विज्ञापनों और बयानों पर रोक लगाने का दिशानिर्देश जारी करने की मांग की गई है। उल्लेखनीय है कि बाबा रामदेव के एलोपैथिक पर दिए गए बयानों के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट में भी याचिका दायर की गई है। हाई कोर्ट सुनवाई के दौरान बाबा रामदेव के बयानों पर आपत्ति जता चुका है।

# डीडीए की 27 हजार फ्लैट्स के लिए 24 से होगी बुकिंग जल्दी से करें आवेदन

**अजय त्यागी**

**नई दिल्ली।** दिल्ली विकास प्राधिकरण 24 नवंबर से अपनी हाउसिंग स्कीम शुरू करने जा रही है। इसके तहत 27 हजार फ्लैटों की पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर बुकिंग ली जाएगी। यह हाउसिंग स्कीम दो चरणों में होगी। पहला चरण 24 नवंबर से शुरू होगा, जिसमें अलग-अलग लोकेशनों के लिए पहले एलआईजी और ईडब्ल्यूएस कैटेगरी के लिए आवेदन लिए जाएंगे। वहीं दूसरा चरण नवंबर के अंतिम सप्ताह में शुरू होगा, जिसमें 11 लग्जरी फ्लैट्स भी शामिल शामिल किए जाएंगे। इस स्कीम में भी पिछली हाउसिंग स्कीम की तरह ऑनलाइन

माध्यम से ही आवेदन भरे जा सकेंगे। सभी फ्लैट्स प्रॉपर्टी फ्री होल्ड और पुरानी दर पर बिक्री के लिए इस बार रखी गई हैं। डीडीए हाउसिंग स्कीम के तहत 27 हजार फ्लैट्स का आवंटन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर होगा। अधिकांश फ्लैट द्वारका, लोकनायकपुरम और नरेला में हैं। डीडीए के मुताबिक आवेदक रजिस्ट्रेशन फीस देकर इस स्कीम में शामिल हो सकेंगे। रजिस्ट्रेशन के बाद आवेदक को 20 दिनों का समय मिलेगा। जिसमें वे अपनी प्राथमिकता के अनुसार चयनित फ्लैट के लोकेशन, फ्लैट आदि को देखने के लिए जा सकेंगे। इसके लिए डीडीए अपने अधिकारियों के नंबर भी आवेदकों को मुहैय्या करवाएगी, जिससे वो आसानी से फ्लैट तक पहुंच और पूरी जानकारी प्राप्त कर सकें। यह योजना पहले आओ पहले पाओ के तर्ज पर चलाई जाएगी। स्कीम के नए नियम के तहत वे लोग भी इस हाऊसिंग स्कीम में आवेदन कर सकेंगे जिनके पास 67 स्क्वायर मीटर या इससे छोटे साइज के फ्लैट या प्लॉट हैं।

# दिल्ली के मुख्य सचिव के मानहानि मामले में हाई कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली के मुख्य सचिव नरेश कुमार की ओर से द वायर वेबसाइट के खिलाफ दायर मानहानि केस पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। जस्टिस मनोज ओहरी ने दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रखा। दिल्ली के मुख्य सचिव नरेश कुमार ने भ्रामक लेख प्रकाशित करने का आरोप लगाते हुए द वायर के खिलाफ मानहानि याचिका दाखिल की है। नरेश कुमार ने अपनी अर्जी में कहा कि द वायर द्वारा उनपर लगाए गए आरोप झूठे, निराधार और

भ्रामक हैं। साथ ही सभी आरोप सच और सही तथ्यों से पूरी तरह अलग हैं। अर्जी में कहा गया है कि वायर ने अपने लेख के जरिए उनको दोषी ठहरा दिया और लेख से ऐसा लग रहा है कि वह किसी अवैध गतिविधि में शामिल हैं।

# रैपिड रेल प्रोजेक्ट के लिए धन नहीं देने पर सुप्रीम कोर्ट का दिल्ली सरकार को अल्टीमेटम

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** सुप्रीम कोर्ट ने रैपिड रेल प्रोजेक्ट के लिए दिल्ली सरकार के फंड न देने पर नाराजगी जताई है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आपके पास विज्ञापन का पैसा है। जरूरी काम के लिए नहीं हैं। हम विज्ञापन बजट जब्त करने का आदेश देते हैं। कोर्ट ने कहा कि एक हफ्ते तक आदेश स्थगित रहेगा। तब तक कदम उठा लें यानी एक हफ्ते में 415 करोड़ रुपये रैपिड रेल प्रोजेक्ट के लिए दे दें। इसके पहले भी 24 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार की खिंचाई की। कोर्ट ने दिल्ली सरकार को रैपिड रेल प्रोजेक्ट के लिए 2 हफ्ते में 415 करोड़ रुपये देने कहा था। जस्टिस संजय किशन कौल की अध्यक्षता वाली बेंच ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा था कि आपने तीन साल में विज्ञापन पर 1100 करोड़ खर्च किए लेकिन आम लोगों से जुड़ी अहम परियोजना के लिए हिस्सा नहीं दिया। क्या हमें एक साल का विज्ञापन बजट जब्त करने का आदेश देना होगा। तीन जुलाई को सुप्रीम कोर्ट ने रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम के लिए धन उपलब्ध कराने में असमर्थता व्यक्त करने पर दिल्ली सरकार को फटकार लगाई थी। कोर्ट ने कहा था कि रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम जैसे प्रोजेक्ट्स फंड के कारण रुकने नहीं चाहिए। कोर्ट ने प्रोजेक्ट के लिए फंड मुहैया ना कराने पर नाराजगी जताते हुए दिल्ली सरकार से तीन सालों के विज्ञापनों पर खर्च का विस्तृत ब्योरा देने को कहा था। दरअसल, 21 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार को रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम कोरिडोर को 500 करोड़ रुपये का योगदान देने का निर्देश देते हुए सरकार से पर्यावरण मुआवजा शुल्क के फंड से यह राशि मुहैया कराने को कहा था। इस पर दिल्ली सरकार द्वारा असमर्थता जाहिर करने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने आप सरकार के द्वारा पिछले तीन सालों में दिए गए विज्ञापन की विस्तृत रिपोर्ट दाखिल करने को कहा है। दरअसल सेमी हाईस्पीड रेल कॉरिडोर के जरिए दिल्ली से मेरठ के बीच 82.15 किमी की दूरी 60 मिनट में तय होगी। 24 स्टेशनों वाला रीजनल रैपिड ट्रांसिट सिस्टम कॉरिडोर दिल्ली में सराय काले खां से मोदीपुरम, मेरठ तक का बनाया जा रहा है। इसकी अनुमानित लागत करीब 31,632 करोड़ रुपये है।

# गुरुपतवंत सिंह पन्नू का गुर्गा मलख दिल्ली से गिरफ्तार, कई जगहों पर लिखे थे खालिस्तानी नारे

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** आतंकवादी गुरुपतवंत सिंह पन्नू के एक गुर्गे को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने गिरफ्तार किया है। उसकी पहचान मलख सिंह के रूप में हुई है। उसने पन्नू के इशारे पर राजधानी दिल्ली के अलावा गुरुग्राम और हरियाणा के कई इलाकों में खालिस्तान के समर्थन में नारे लिखे थे। मलख सिंह से पूछताछ में पुलिस को पता चला है कि वह पन्नू के साथ लगातार संपर्क में था। उल्लेखनीय है कि एयर इंडिया को उड़ाने की धमकी देने के मामले में एनआईए की टीम ने प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस के आतंकी गुरु पतवंत सिंह पन्नू के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी।

उसके खिलाफ आईपीसी के साथ-साथ गैरकानूनी गतिविधि, रोकथाम कानून की आतंकवाद से संबंधित विभिन्न धाराओं के तहत भी केस दर्ज किया गया है। इससे पहले भी एनआईए पन्नू के खिलाफ 2019 में आतंकी गतिविधियों के आरोप में केस दर्ज कर चुकी है। इसी साल सितंबर में अमृतसर और चंडीगढ़ स्थित उसकी संपत्तियों को भी जब्त किया जा चुका है। पश्चिमी दिल्ली के जनकपुरी, विकासपुरी, पश्चिम विहार समेत कई इलाकों के दीवारों पर 'राष्ट्र विरोधी' और 'खालिस्तान समर्थित नारे' लिखे मिले थे। मामले की जानकारी मिलने पर पुलिस ने माहौल बिगाड़ने की कोशिश में जुटे लोगों पर केस दर्ज कर सभी नारों को हटवाया।

# युवाओं में दिल का दौरा पड़ने की घटनाओं का कोरोना वैक्सीन से कोई संबंध नहीं : आईसीएमआर

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के अध्ययन के मुताबिक युवाओं में दिल का दौरा पड़ने की घटनाओं का कोरोना वैक्सीन से कोई संबंध नहीं है। कोरोना टीकाकरण के कारण युवाओं में अचानक मृत्यु की घटनाएं नहीं बढ़ी हैं, बल्कि उनके पारिवारिक स्वास्थ्य इतिहास और जीवन शैली इसके लिए जिम्मेदार हो सकती है। मंगलवार को आईसीएमआर ने जारी अध्ययन रिपोर्ट में बताया कि देश में युवा वयस्कों में अचानक मृत्यु की आशंका कोरोना के बाद अस्पताल में भर्ती होने, मृत्यु का पारिवारिक स्वास्थ्य इतिहास और जीवन शैली इसके कारण हो सकते हैं। आईसीएमआर ने इस अध्ययन में 47 अस्पतालों को शामिल किया था, जिसमें 18-45 वर्ष के आयु के बीच के मरीजों को

शामिल किया गया था, जिन्हें कोई दिल से संबंधित बीमारी या दूसरी गंभीर बीमारी नहीं थी लेकिन कोरोना के बाद उनकी अचानक मौत हो गई। आईसीएमआर ने साल 2021 से 2023 के दौरान अस्पष्ट कारणों से हुई मौत को शामिल कर उनके कारणों पर अध्ययन किया। अध्ययन में यह भी कहा गया है कि मौजूदा प्रदूषण की स्थिति, धूम्रपान, शराब की लत या बहुत ज्यादा शारीरिक व्यायाम भी अचानक हुए मौत के कारण हो सकते हैं। इसके साथ ज्यादा शराब के सेवन से भी अचानक मौत का खतरा बढ़ता है। हालांकि पिछले दो सालों में अचानक हुई मौतों के पीछे स्पष्ट कारण अलग अलग हो सकते हैं। उल्लेखनीय है कि जीबी पंत अस्पताल द्वारा एक रिसर्च में भी कोरोना वैक्सीन और हार्ट अटैक के जोखिम बढ़ने के बीच कोई संबंध नहीं मिला है। इस स्टडी में कुल 1578 लोगों को शामिल किया गया था। अध्ययन में कोरोना का टीका लेने के बाद दिल का दौरा पड़ने के कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं मिले हैं।

# गहलोत सरकार 4 साल कुर्सी की लड़ाई लड़ती रही और सूबा विकास को तरसता रहा : पीयूष गोयल

**अजमेर, (हि.स.)।** केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण, कपड़ा मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि राजस्थान में बीते 5 साल के शासन में से 4 साल तक गहलोत सरकार कुर्सी की लड़ाई के साथ-साथ भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण को बढ़ावा देने में लगी रही। इस सरकार ने विकास तो छोड़िए, केन्द्रीय योजनाओं का क्रियान्वयन, पानी-बिजली समेत अन्य मूलभूत सुविधाओं को जुटाने तक का प्रयास नहीं किया। आज राजस्थान में जो कुछ विकास दिख रहा है, वह मोदी सरकार की मेहरबानी है। कपड़ा मंत्री गोयल मंगलवार दोपहर किशनगढ़ के आरके कम्युनिटी सेंटर में किशनगढ़ भाजपा की ओर से आयोजित प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। गोयल ने कहा कि राजस्थान तीन तरफ से गुजरात, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से घिरा है। इन तीनों राज्यों के मुकाबले राजस्थान में विकास की दर काफी कमजोर है। गहलोत सरकार चार साल तक कुर्सी की लड़ाई लड़ती रही। ऐसे में राजस्थान में थोड़ा-बहुत जो विकास का पहिया घूम रहा है, वह मोदी सरकार की बदौलत है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में किशनगढ़ मार्बल-ग्रेनाइट और कपड़े के निर्यात के हब के तौर पर उभरा है। यहां के कारोबारी भी बिजली जैसी समस्याओं से दो-चार हो रहे हैं। सरकार उन्हें बिजली तक नहीं दे पा रही है। जितनी बिजली दी जा रही है, उस पर भी सैकड़ों रुपये टैक्स वसूले जा रहे हैं। बिजली की किल्लत से कारोबारी प्रोडक्शन लॉस झेल रहे हैं। गोयल ने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकारें जिन-जिन राज्यों में हैं, वहां भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण चरम पर है। गहलोत सरकार की इसी तुष्टिकरण की नीति से जयपुर सीरियल ब्लास्ट के सभी आरोपित

छूट गए। इस सरकार ने 66 हजार करोड़ का खनन घोटाला कर राजस्थान को शर्मसार किया है। यह सरकार उद्योग और व्यापार के लिए नासूर है। इस सरकार में उद्योगों के लिए कुछ नहीं हुआ। हम 2017 से 2019 तक राजस्थान के साथ मिलकर रेलवे के विस्तार का प्रोजेक्ट बना रहे थे लेकिन 2018 में सरकार बदलते ही गहलोत सरकार ने जमीन देने से हाथ खड़े कर प्रोजेक्ट को रोक दिया। यह सरकार मार्बल उद्योग की जीएसटी को लेकर भी अपनी बात जिम्मेदार तरीके से नहीं कर पाई। गोयल ने आरोप लगाया कि हम 2 लाख करोड़ की निवेश योजना लेकर आए लेकिन जब एनालिसिस किया तो पता चला कि राजस्थान में इस योजना में अंगुलियों पर गिनने लायक निवेशक भी नहीं मिले। सरकार को कुर्सी का मोह नहीं छूट रहा और राजस्थान गर्त में जाता रहा। इस सरकार में निवेश के प्रति भी कारोबारी रुचि नहीं दिखा पाए। गहलोत के शासन में उन्हें जमीन, बिजली, पानी और एनओसी के लिए भटकना पड़ता है। उन्होंने कहा कि जब निवेशक के मन में सरकार की ईमानदारी बैठती है, तब वह निवेश प्रस्ताव लाता है और कौशल विकास की योजनाएं बनती है। इस सरकार के शासन में कानून व्यवस्था की स्थिति खराब है। ऐसे में व्यापारी और उद्योगपति भी भयभीत है। राजस्थान बीते 5 सालों में ढांचागत विकास में पिछड़ता रहा है। मोदी सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए गोयल ने कहा कि राजस्थान में डबल इंजन की सरकार बनते ही यहां विकास फरार्टे भरता नजर आएगा। सम्मेलन को सांसद और भाजपा प्रत्याशी भागीरथ चौधरी ने भी संबोधित किया।

# देश के 30 हजार मंदिरों को मुक्त करायेंगे : नीरज दौनेरिया

**लखनऊ, (हि.स.)।** बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक नीरज दौनेरिया ने कहा कि हम देश के 30 हजार मंदिरों को मुक्त करायेंगे। सर्वविदित है कि मुगल आक्रान्ताओं ने हमारे मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई हैं। जिस भी जिले में ऐसे स्थल हैं, उन्हें मुक्त कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि अयोध्या हुई हमारी है अब मथुरा - काशी की बारी है। हिन्दू शक्तिशाली होगा तो हर समस्या का समाधान होगा। हिन्दू समाज को हम संगठित करेंगे। जिस हिन्दू समाज को कमजोर माना जाता था, शौर्य का जागरण करने के बाद उसी हिन्दू समाज ने गुलामी के ढ़ांचे को ध्वस्त कर दिया। बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक दो दिवसीय प्रवास पर लखनऊ आये थे। इस दौरान उन्होंने बजरंग दल के पदाधिकारियों के साथ बैठक की। नीरज दौनेरिया ने बताया कि बजरंग दल ने देश में 88 लाख गोवंश को

कसाइयों के हाथों कटने से बचाया है। देशभर में विश्व हिन्दू परिषद 550 गोशालाएं चला रही है। बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक ने कहा कि भारत अनादिकाल से हिन्दू राष्ट्र है। हमें पक्का व सच्चा हिन्दू बनना है। इसलिए हमारे आचार-विचार, व्यवहार, आचरण, रहन-सहन व पहनावे से हिन्दू दिखना चाहिए। हमें देश व धर्म को इतना सशक्त बनाना है कि कोई हमारे ऊपर आक्रमण करने की हिम्मत न कर सके। बजरंग दल के राष्ट्रीय संयोजक ने कहा कि युवाओं में देवभक्ति के साथ-साथ देशभक्ति का जागरण करने के लिए गांव-गांव बलोपासना केन्द्र संचालित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि 22 जनवरी 2024 को हम देशभर में राम मंदिर वाली दिवाली मनायेंगे। अनेकों संघर्षों के बाद श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर बन रहा है। पहले बजरंग दल के कार्यकर्ता गांव-गांव यह बताने के लिए गये थे कि राम लला ताले के अंदर हैं, उन्हें मुक्त कराना है। शौर्य जागरण यात्रा के माध्यम से बजरंग दल ने देशभर को बताया कि अयोध्या में राम मंदिर बन रहा है। बजरंग दल के कार्यकर्ता देशभर के प्रत्येक गांव में घर-घर श्रीराम जन्मभूमि का पूजित अक्षत देने जायेंगे। संबंधित गांव के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के दिन होने वाले कार्यक्रम में शामिल होने का आमंत्रण देंगे।

# देव दीपावली की तैयारियां शुरू, नौ जोन और 11 सेक्टर में बांट कर सुरक्षा प्रबंध

**वाराणसी, (हि.स.)।** देव दीपावली पर्व की प्रशासनिक तैयारियां शुरू हो गई हैं। पर्व पर गंगा किनारे उमड़ने वाली लाखों की भीड़ के सुरक्षा प्रबंध को लेकर वाराणसी पुलिस कमिश्नरेट भी सतर्क है। माना जा रहा है कि 10 लाख से अधिक श्रद्धालु देव दीपावली की भव्यता देख सकते हैं। वाराणसी पुलिस कमिश्नरेट ने भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था का खाका भी तैयार कर लिया है। इस बार देव दिवाली 27 नवम्बर को होगी। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार देव दीपावली पर्व पर वाहनों का दबाव कम करने के लिए शहर में 31 स्थान पर वाहन पार्किंग की व्यवस्था रहेगी। इसके साथ ही भीड़ प्रबंधन का काम ट्रैफिक पुलिस और पुलिस मिलकर 54 प्वाइंट से करेगी। प्रशासन का पूरा प्रयास है कि नागरिक सहूलियत के साथ गंगा घाटों तक जाकर उत्सव का लुत्फ उठाने के बाद बगैर किसी दिक्कत के अपने गंतव्य को वापस लौट जाएं।

**इन स्थानों पर वाहन पार्किंग की व्यवस्था -** सूजाबाद पुलिस चौकी के सामने, चौकाघाट पुलिस चौकी के दाएं-बाएं, सर्व सेवा संघ भवन का खाली मैदान, बेनिया बाग, मजदा सिनेमा, गोदौलिया, सनातन धर्म इंटर कॉलेज, जयनारायण इंटर कॉलेज, संपूणानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, राजकीय क्वींस इंटर कॉलेज, काशी विद्यापीठ, रामलीला मैदान लकड़ीमंडी, नटराज सिनेमा सिगरा, एंग्लो बंगाली इंटर कॉलेज, रवींद्रपुरी में सड़क के दोनों ओर की पटरी, गर्ल्स हिंदू कॉलेज कमच्छा, सामने घाट पश्चिमी स्कूल के बगल में, सामने घाट पश्चिमी सनबीम स्कूल के बगल में, नरिया से हैदराबाद गेट रोड पर, नगवा चौराहा, संत रविदास गेट, संत रविदास गेट से हनुमान मंदिर तिराहा, बैंक ऑफ बड़ौदा तिराहा (रविदास गेट से आगे), रवींद्रपुरी-शिवाला कूड़ा घर मोड़, होटल ब्राडवे तिराहा, अग्रवाल तिराहा शिवाला, आशापुर फ्लाईओवर से हवेलिया तिराहा तक सड़क के दोनों ओर, कटिंग मेमोरियल स्कूल (छोटा/बड़ा), सेंट मेरी स्कूल कैंटोनमेंट के सामने की सड़क, एफसीआई गोदाम के पास, भास्करा पोखरा। पर्व पर रामनगर, आदमपुर, कोतवाली, चौक, दशाश्वमेध, लक्सा और भेलूपुर थाना क्षेत्र में 21 जगह बैरियर लगाए जाएंगे। पर्व पर चांदपुर चौराहा, आजमगढ़ अंडरपास, तरना पुल और आशापुर ओवरब्रिज पूर्वी से शहर की ओर रोडवेज या निजी बसें नहीं आने दी जाएंगी। देव दीपावली पर ही सभी 84 गंगा घाटों को नौ जोन, 11 सेक्टर और 32 सब सेक्टर में बांटकर सुरक्षा व्यवस्था का खास प्रबंध किया गया है। अत्यधिक भीड़ वाले घाटों पर क्यूआरटी की 20 टीम तैनात रहेंगी। 11 विशेष टीमें लाउडहेलर के साथ घाटों पर पेट्रोलिंग करेंगी। 17 प्रमुख घाटों पर एंटी रोमियो स्क्वॉड की टीमें रहेंगी। महिलाओं की सुरक्षा के लिए 11 पिंक बूथ बनेंगे। उधर, सोमवार शाम को जिलाधिकारी एस. राजलिंगम और नगर आयुक्त ने सर्किट हाउस, पुलिस लाइन चौराहा होते हुए मकबूल आलम रोड, चौकाघाट फ्लाई ओवर, चौकाघाट लकड़ी मंडी होते हुए सिटी स्टेशन, गोल गड्ढा, डाटपुल राजघाट होते हुए नमो घाट तक निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने शहर के सभी मार्ग पर प्रकाश व्यवस्था, साफ-सफाई, कहीं पर भी सीवर ओवरफ्लो एवं वाटर लीकेज की समस्या न होने पाये का निर्देश दिया।

# अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला के रेल मंडप में बरेका के निर्यातित रेल इंजन मॉडल आकर्षण

## - रेल मंडप में बरेका प्रगतिशील यात्रा को प्रदर्शित कर रहा, आगंतुक नारी शक्ति को समर्पित विशेष सेल्फी बूथ पर पहुंच रहे

वाराणसी, (हि.स.)। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 42वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले (आईआईटी-ीएफ) के रेल मंडप में बनारस रेल इंजन कारखाना (बरेका) के निर्यातित रेल इंजन मॉडल आकर्षण का केन्द्र बने हुए है। 14 से 27 नवंबर तक चलने वाले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भारतीय रेलवे ने रेल मंडप में अपनी यात्रा को प्रदर्शित किया है। साथ ही यह बताया है कि कैसे भारतीय रेलवे ने विश्व के अन्य देशों में लोको, कोच और डेमू ट्रेनों का निर्यात कर वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। इसके अलावा मंडप में नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन को लेकर भारतीय रेलवे की प्रतिबद्धता को भी दिखाया गया है। मेले में बनारस रेल इंजन कारखाना में निर्मित रेल इंजनों जिन्हें विभिन्न देशों तंजानिया, वियतनाम, बांग्लादेश,श्रीलंका, मलेशिया, सूडान, म्यांमार, अंगोला, सेनेगल, माली, मोजांबिक में निर्यात किया गया है। उन सभी रेल इंजन मॉडलों को एक विशेष बूथ पर आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया गया है। जो मेले में आगंतुकों विशेष कर बच्चों का अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। बरेका के जनसम्पर्क

अधिकारी के अनुसार बरेका ने अब तक 172 रेल इंजनों का विभिन्न देशों में निर्यात किया है। रेल मंडप के बाहरी हिस्से में वंदे भारत ट्रेन के मॉडल व रघुनाथ मंदिर से प्रेरित जम्मू तवी रेलवे स्टेशन के प्रस्तावित डिजाइन को दिखाया गया है, जो अमृत भारत स्टेशन पुनर्विकास योजना को प्रदर्शित करता है।

इस मंडप में विभिन्न प्रारूपों को प्रदर्शित किया गया है। इनमें यूएसबीआरएल परियोजना (कटरा-बनिहाल खंड), राष्ट्रीय हाई स्पीड रेल परियोजना पर प्रस्तावित सूरत स्टेशन, वंदे भारत ट्रेन, पंबन ब्रिज वर्टिकल गर्डर (पुल की डाट), बोगीबील ब्रिज और दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे आदि शामिल हैं। मंत्रालय ने रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव के मार्गदर्शन में बदलते भारत की अवसंरचना की विषयवस्तु के साथ हॉल नंबर-5 में रेल मंडप स्थापित किया है। रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष और सीईओ जया वर्मा सिन्हा ने इस रेलवे मंडप का उद्घाटन किया। रेल मंडप को भारत के बुनियादी ढांचे में रूपांतरण, विरासत भी विकास भी, नारी शक्ति का उत्सव, ज्ञान वृक्ष जैसे खंडों में विभाजित किया गया है। कोई व्यक्ति हर एक खंड में मॉडल और उससे संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकता है। वहीं, नारी शक्ति खंड में एक सेल्फी बूथ आगंतुकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

# 131 कार्यों का सांसद ने किया लोकार्पण

**बस्ती (हिस.)।** सांसद हरीश द्विवेदी (सहप्रभारी बिहार) द्वारा क्षेत्र पंचायत रामनगर बस्ती के 442.10 लाख के कुल 131 कार्यों का लोकार्पण एंव विकास पुस्तिका अंक-2 का विमोचन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष प्रमुख संघ बस्ती मण्डल प्रमुख यश-ाकान्त सिंह द्वारा उपस्थित समस्त माननीयों का स्वागत करते हुए विकास खण्ड अन्तर्गत संचालित समस्त योजनाओं के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी दी गई. तथा विकास खण्ड में कई सड़कों के पुनः निर्माण कराये जाने हेतु सांसद से अनुरोध किया गया। सांसदने कहा कि जनपद बस्ती को एक अग्रणी जनपद बनाना हैज इसके लिए भरसक प्रयास किया जा रहा है। सांसद ने सांसद खेल मह-ाकुम्भ अधिक से अधिक खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभाग किए जाने की अपील की। उन्होंने कहा कि कि ग्रामीणों में छिपी प्रतिभा को निखारने के लिए इस सांसद खेल महाकुम्भ का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। सांसद द्वारा 05 विद्यालय के प्रधानाध्यापक को

टैबलेट वितरण किया गया। उसके पश्चात विभागों द्वारा लगाये गये स्टाल का भ्रमण किया गया। उक्त कार्यक्रम के दौरान अध्यक्ष प्रमुख संघ जनपद सिद्धार्थनगर प्रमुख लवकुश ओझा, अध्यक्ष प्रमुख संघ जनपद संतकबीरनगर प्रमुख राम मिलन यादव पूर्व जिलाध्यक्ष प्रेम सागर तिवारी, महेश शुक्ल, आदि उपस्थित रहे।

# बलिया के हिस्ट्रीशीटर पर कार्रवाई न होने से हड़ताल का एलान

**लखनऊ, (हि.स.)।** लोक निर्माण विभाग के बलिया कार्यालय परिसर में आतंक का पर्याय बने हिस्ट्रीशीटर अपराधी के विरुद्ध कार्रवाई न किये जाने से डिप्लोमा इंजीनियर्स में भारी आक्रोश है। इसमें आक्रोशित डिप्लोमा इंजीनियरों ने चेतावनी देते हुए आगे प्रदेश में हड़ताल करने का एलान कर दिया है। मंगलवार को यह जानकारी डिप्लोमा इंजीनियर मनोज कुमार श्रीवास्तव ने दी है। उन्होंने बताया कि बलिया परिसर में हिस्ट्रीशीटर अपराधी, जो विगत पांच-छह वर्षों से लगातार अधिशासी अभियंता, सहायक अभियंता, अवर अभियंता एवं अन्य कार्मिकों के साथ दुर्व्यवहार, मारपीट एवं शासकीय कार्य में व्यवधान डालते हुए लोक निर्माण विभाग परिसर में भय का माहौल व्याप्त किये हुए है। पुलिस की ओर से भी कोई कार्रवाई

नहीं होती है। उन्होंने कहा कि बलिया के समस्त अवर अभियंता एवं कार्मिक विगत 15 दिनों से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। अन्य संगठनों यथा राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद एवं राज्य कर्मचारी महासंघ की ओर से मांग की गयी है कि जल्द से जल्द अपराधी तत्व को गिरफ्तार किया जाये। ताकि डिप्लोमा इंजीनियर्स अपने को सुरक्षित समझें।

# पलामू में महायज्ञ और कथा की निकली भव्य कलश यात्रा, देवकीनंदन ठाकुर हुए शामिल

**पलामू, (हि.स.)।** जिला मुख्यालय मेदिनीनगर के हाउसिंग कॉलोनी बारालोटा में परशुराम सेना युवा वाहिनी के तत्वावधान में आयोजित श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ सह श्रीमद्भागवत कथा को लेकर मंगलवार को शहर में भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। इस धार्मिक आयोजन में चर्चित भागवत कथा वाचक देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज शामिल हुए। कलश यात्रा यज्ञ स्थल से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्ग से होते हुए कोयल नदी तट तक निकाली गयी।

यहां नदी का जल कलशों में भरकर पुनः स्थल पर पहुंच कर उसकी स्थापना की गयी। कलश यात्रा में हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गयी। 9 दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज हेलीकॉप्टर से चियांकी हवाई अड्डा पर उतरे। वहां उनका भव्य स्वागत युवा वाहिनी के अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम में आयोजन समिति के मुख्य संरक्षक अर्जुन पांडे उर्फ गुरु पांडे, अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी सहित बड़ी संख्या में परशुराम सेना युवा वाहिनी के पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल थे।

# रांची के भगवान जगन्नाथपुर मंदिर में चोरी

**रांची, (हि. स.)।** धुर्वा थाना क्षेत्र स्थित जगन्नाथ मंदिर में चोरी का मामला मंगलवार को प्रकाश में आया है। जगन्नाथपुर मंदिर परिसर के भीतर ही पुजारी का कमरा बना हुआ है। सोमवार की देर रात मंदिर परिसर स्थित पुजारी के कमरे से 20 हजार रुपये नगद, पेन ड्राइव, मंदिर के सज-ावट के सामान और साउंड सिस्टम को गायब कर दिया गया है। मंदिर में चोरी की घटना के बाद मामले की जानकारी धुर्वा पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की पहचान में जुटी हुई है।

चोर खिड़की के ग्रिल को काटकर पुजारी के कमरे में प्रवेश किया और फिर कमरे के अंदर रखें सामान लेकर फरार हो गए। धुर्वा थाना प्रभारी विमल नंदन सिन्हा ने बताया कि पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। साथ ही मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है।

# रांची हिंसा मामले की अगली सुनवाई 19 दिसंबर को

**रांची, (हि.स.)।** झारखंड हाई कोर्ट में मंगलवार को रांची में 10 जून, 2022 को हुई हिंसा मामले की एनआईए जांच को लेकर दायर जनहित याचिका की आंशिक सुनवाई को हुई। याचिकाकर्ता की अधिवक्ता के आग्रह पर कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 19 दिसंबर निर्धारित की है। पिछली सुनवाई में कोर्ट ने याचिकाकर्ता से पूछा था कि वह कैसे इस केस को एनआईए को ट्रांसफर करने की मांग कर रहे हैं। क्या इसका कोई साक्ष्य है कि यह घटना शेड्यूल ऑफेंस के तहत आ रही है। एनआ-ईए और राज्य सरकार ने कोर्ट को बताया था कि यह मामला शेड्यूल ऑफेंस के दायरे में नहीं आता है। रांची हिंसा मामले में दायर पंकज कुमार यादव की जनहित याचिका में हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन

ओवैसी, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया के महासचिव यास्मीन फारूकी समेत रांची उपायुक्त, एसएसपी, मुख्य सचिव, एनआईए, ईडी को प्रतिवादी बनाया है।

अदालत से मामले की एनआईए जांच कराकर झारखंड संपत्ति विनाश और क्षति निवारण विधेयक 2016 के अनुसार आरोपितों के घर को तोड़ने का आदेश देने का आग्रह किया है। याचिका में रांची की घटना को प्रायोजित बताते हुए एनआईए से जांच करके यह पता लगाने का आग्रह किया है कि किस संगठन ने फंडिंग कर घटना को अंजाम दिया।

# सैलानियों से गुलजार होने लगे हैं खूंटी के पर्यटन स्थल

**खूंटी, (हि.स.)।** दुर्गा पूजा, दीपावली, छठ जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों के बीत जाने के बाद खूंटी क्षेत्र में वनभोज उत्सव की शुरूआत हो गई है। जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों पेर-वांघाघ, पंचघाघ, लतरातू जलाशय, लटरजंग डैम, रानी फॉल, उलूंग जल प्रपात, सप्तधारा सहित अन्य पर्यटन स्थल नवंबर महीने के अंतिम सप्ताह से सैलानियों से गुलजार होने लगे हैं। भगवान बिरसा मुंडा जैसे अमर शहीद, मारंग गोमके जयपाल सिंह मुंडा जैसे खिलाड़ियों की धरती खूंटी हमेशा से ही सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। प्रकृति ने खूंटी जिले को पेरवाघाघ जल प्रपात पंचघाघ, रानी फॉल, दशम फॉल, रिमिक्स फाल, उलूंग जलप्रपात, सप्तधारा, पाड़ी पुड़िंग, जैसे अनुपम पर्यटन स्थल दिये हैं, तो बाबा आम्रेश्वर धाम, नकटी देवी, सोनमेर मात मंदिर, पाट पहाड़ करां जैसे कई विख्यात धार्मिक स्थल प्रदान किये हैं, जो सैलानियों और धार्मिक अस्था वाले लोगों को बरबस ही अपनी ओर खींच लाते हैं। इन स्थलों में आकर सैलानी अपने को प्रकृति के निकट महसूस करते हैं। इनके अलावा कर्रा

प्रखंड को लतरातू जलाशय, खूंटी का लटरजंग डैम, पेलौल डैम जैसे मानव निर्मित पर्यटन स्थल भी इन दिनों पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। हर साल अंतिम वर्ष की विदाई और नववर्ष के स्वागत में दूर-दूर से सैलानी इन स्थलों में पहुंचते है और प्रकृति के अनुपम उपहार और सौंदर्य को निहारते है।

वैसे तो सालों भर इन पर्यटन और धार्मिक स्थलों में लोगों का आवगमन होता रहता है, पर नवंबर से फरवरी महीने तक हर दिन इन क्षेत्रों में सैलानियों की भारी भीड़ जुटती है। प्रकृति की अनमोल सुंदरता वाले दर्शनीय स्थल, पहाड़ी वादियों के बीच से बहती नदियों को निहारना काफी मनमोहक लगता है। जरूरत है इन मनमोहक स्थलों पर सुरक्षा के व्यापक उपाय करने के साथ इनको विकसित करने की।

**नहीं हो सका पर्यटन स्थलों का अपेक्षित विकास -** इन पर्यटक स्थलों के समग्र विकास को लेकर स-रकार और स्थानीय प्रशासन द्वारा कुछ खास नहीं किया जा सका है। इस ओर से प्रशासनिक रवैया लगभग उ-दासीन ही रहा है। खूंटी जिले के पर्यटन स्थलों की चर्चा तो खूब होती है, पर धरातल पर कोई पहल होती नहीं दिखाई देती है। जिले के पर्यटन स्थलों में कहीं भी सैलानियों के ठहरने के लिए किसी प्रकार का कोई इंतजाम नहीं है। इतना ही नहीं, सैलानियों के खाने-पीने और अन्य सुविधाओं की भी पर्याप्त सुविधा उपलब्ध नहीं है। सड़कों की स्थिति को भी अब तक सुधारा नहीं जा सका है।

# जीएम और डीआरएम ने भागलपुर रेलवे स्टेशन का किया निरीक्षण

**भागलपुर, (हि.स.)।** मालदा रेल डि-विजन के किऊल, भागलपुर और जमालपुर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण मंगलवार को मालदा डिवीजन के जीएम ए पी द्विवेदी और डीआरएम विकास कुमार चौबे ने किया। भागलपुर पहुंचे मालदा डिवीजन के जीएम और डीआरएम ने भागलपुर स्टेशन के कई विभागों का निरीक्षण किया। यात्रियों के लिए मूलभूत सुविधा, स्टेशन परिसर की साफ-सफाई, बिजली की व्यवस्था, यात्रियों के पीने के स्वच्छ पानी, कैंटीन में खाने की गुणवत्ता और शौचालय की सफाई तक का निरीक्षण किया गया। इस दौरान जीएम ने 450 करोड़ रुपये की लागत से भागलपुर रेलवे स्टेशन के कायाकल्प जल्द होने की बात क-ही। इस दौरान परिचालन, इंजीनियरिंग, ट्रैक्शन, सेफ्टी समेत अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद थे। सभी से डीआरएम ने भागलपुर और किऊल के बीच बनने वाली थर्ड लाइन की प्रगति रिपोर्ट भी ली। साथ ही साथ जमालपुर में भी डीआरएम और जीएम ने कई यार्ड का निरीक्षण किया। भागलपुर पहुंचने के बाद छठ पूजा पर स्पेशल ट्रेन को लेकर उन्होंने कहा कि मैं खुद छठ करता हूं। मेरे परिवार में छठ पर्व होता है। मैं छठ के महत्व को जानता हूं। मैंने कई छठ पर्व के दौरान लोकल और एक्सप्रेस ट्रेनों को चलाया है। वहीं उन्होंने कहा कि यशवंतपुर में बोगी बढ़ाने की भी बात चल रही है। जल्द उसे भी पूरा किया जाएगा और हेड क्वार्टर में लखनऊ बरौनी पर भी विचार जल्द ही की जाएगी। राजधानी और अगरतला की बुकिंग शुरू हो गई है। यह भागलपुर शहर के लिए बड़ी खुशी की बात है। इसे अभी एक दिन के लिए किया गया है।

# नीतीश कुमार को शर्म नहीं आती, इतने अहंकारी कि कहते हैं जो पिएगा वो मरेगा: प्रशांत किशोर

**पटना, (हि.स.)।** जन स्वराज पार्टी के प्रमुख प्रशांत किशोर ने मंगलवार को प्रेस वार्ता में बिहार की नीतीश स-रकार पर तंज कहते हुए कहा कि इस आदमी को इस बात का अहंकार हो गया है कि हम यहां से हट ही नहीं सकते। प्रशांत किशोर ने कहा कि सीतामढ़ी और गोपालगंज में बीते दिन है 10 लोगों की मौत शराब पीने से हो गई लेकिन सीएम कहते हैं कि जिलाधिकारी को निर्देश दिया है। बीते दिनों छपरा में जहरीली शराब पीने से 70 लोगों की दुखद मृत्यु हो गई थी और ये आदमी पॉकेट में हाथ डालकर कहता था कि जो पिएगा वो मरेगा। ऐसे आदमी को बिहार के लोग अगर वोट देते हैं, तो गलती नीतीश कुमार की नहीं है बिहार की जनता की है। प्रशांत किशोर ने कहा कि आपके बच्चों का जो निवाला छीन लिया, आपके बच्चों की जिसने पढ़ाई की व्यवस्था भंग करके अनपढ़ बना

दिया, आपके बच्चों को जिसने मजदूर बना दिया उस आदमी को आप जाकर वोट देते हैं, तो आपसे बड़ा गुनाहगार कौन है? जनता सबसे बड़ी गुनाहगार है। नेता तो अपनी कुर्सी के लिए वोट मांग रहा है, जनता की क्या मजबूरी है? प्रशांत किशोर ने कहा कि इसमें सबसे बड़ी दुखद बात ये है कि बिहार धरती ही देश में एक मात्र ऐसा राज्य है, जहां 10 लोगों की जहरीली शराब पीने से मौत हो जाए और राज्य का मुखिया नीतीश कुमार इतना अहंकारी है कि देखने तक नहीं गया। ये अहंकार क्यों है ? क्योंकि ये आदमी जानता है कि वोट आप किसी को दीजिएगा । मुख्यमंत्री तो मुझे ही बनना है। फेविकोल लगाकर कुर्सी पर बैठ गया है। चाहे भाजपा को वोट दीजिए, लालटेन को दीजिए, नीतीश को दीजिए या फिर कांग्रेस को वोट दीजिए हर बार मुख्यमंत्री यही आदमी बन जाता है।

# 3760 शिक्षकों को मिला नियुक्ति पत्र, 1957 शिक्षकों को विद्यालय किया गया आवंटित

**भागलपुर, (हि.स.)।** जिले में चयनित 3,760 शिक्षकों को मंगलवार को नियुक्ति पत्र दिया गया। साथ ही प्राथमिक माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को विद्यालय भी आवंटन कर दिया गया। जिला शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार ने बताया कि आज 1957 शिक्षकों को विद्यालय आवंटित कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि नियुक्ति पत्र देने के समय हम लोगों ने कई कमरा बना रखा था। ताकि किसी शिक्षकों को परेशानी ना हो। पहले अभिभावकों की भीड़ काफी हो गई थी। अभिभावकों की भीड़ हटते ही सारा कुछ सही हो गया और शिक्षकों को नियुक्ति पत्र देने में आसानी हुई। सभी शिक्षक संतुष्ट और काफी खुश भी नजर आ रहे हैं। उच्च माध्यमिक के शिक्षकों को इंटरस्तरीय जिला स्कूल में नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। वहीं माध्यमिक शिक्षकों को नव स्थापित

जिला स्कूल में नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। जबकि प्राथमिक शिक्षकों को राजकीय बालिका हाई स्कूल में नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। हर केंद्र पर विषयवार कमरे और रोल नंबर लिखे हुए थे। ताकि किसी भी नवनियुक्त शिक्षकों को नियुक्ति पत्र लेने में किसी तरह की परेशानियों का सामना न करना पड़े। उन्होंने बताया कि जो नियोजित शिक्षक हैं, उन्हें 30 नवंबर तक आवंटित स्कूल में हर हाल में ज्वाइन कर लेना है। जबकि जो नवीनियुक्त शिक्षक हैं उन्हें अब तक आवंटित किए गए स्कूल में ज्वाइनिंग करना है। नहीं तो उनकी चयन प्रक्रिया रद्द कर दी जाएगी। इस-ाको लेकर शिक्षा विभाग द्वारा पत्र भी जारी कर दिया गया है। वही नियुक्ति पत्र पाकर शिक्षकों में खासा उल्लास देखा गया।

## संपादकीय

# क्रिकेट की अनहोनी

टीम इंडिया 'अजेय चैम्पियन' नहीं बन सकी। एकदिनी क्रिकेट का विश्व चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया बना, जो पांच बार इस खिताब को जीत चुका था और फाइनल मुकाबले के दबावों तथा मनोविज्ञान को अच्छी तरह जानता था। टीम इंडिया कई फाइनल मुकाबले खेल चुकी है, लेकिन आखिरी चरण में उसके हाथ-पांव फूलने लगते हैं, नतीजतन 2013 में 'आईसीसी चैम्पियन्स ट्रॉफी' जीतने के बाद आज तक टीम इंडिया कोई विश्व-खिताब नहीं जीत पाई है। बेशक 'विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप' हो या टी-20 मुकाबलों के फाइनल हों, टीम इंडिया की परिणति और नियति 'उपविजेता' वाली हो गई है। बेशक टीम इंडिया ने एकदिनी क्रिकेट के विश्व कप में 10 लीग मैच और एक सेमीफाइनल मैच एकतरफा और निरंतर जीते थे, लिहाजा 'अजेय' मानना गलत नहीं था। हमने ऑस्ट्रेलिया समेत विश्व की तमाम श्रेष्ठ टीमों को पराजित किया। यह कोई तुक्का नहीं था। सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज एवं 'प्लेयर ऑफ दि टूर्नामेंट' विराट कोहली (765 रन), सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज मुहम्मद शमी (24 विकेट) और बुमराह (20 विकेट) और सर्वश्रेष्ठ कप्तान रोहित शर्मा (597 रन) आदि के सम्मान-पुरस्कार भी हमारे हिस्से आए, लेकिन कुछ तो गलत गणनाएं हुई थीं कि हम 'विश्व विजेता' नहीं बन पाए। विश्व के नंबर वन बल्लेबाज आज भी शुभमन गिल हैं और चौथे-पांचवें स्थान पर क्रमशः विराट कोहली और रोहित शर्मा हैं। सिराज आज भी विश्व के नंबर 2 के गेंदबाज हैं। बल्लेबाजों के वर्ग में पहले पांच स्थान पर ऑस्ट्रेलिया का कोई भी बल्लेबाज नहीं है। टीम इंडिया ने विश्व कप में कुल 3160 रन बनाए हैं। यह भी सर्वाधिक है। ये कोई सामान्य आंकड़े नहीं हैं। फिर भी सवाल हो सकता है कि फाइनल में रवीन्द्र जडेजा और कुलदीप यादव की स्पिन गेंदबाजी का वह करिश्मा कहां काफूर हो गया, जो पूरे टूर्नामेंट के दौरान आतंक और आश्चर्य बना हुआ था? सवाल हमारी धीमी बल्लेबाजी पर भी स्वाभाविक है, क्योंकि तीन विकेट गिरने के बाद हमारे बल्लेबाजों ने 20 ओवर में सिर्फ 72 रन ही बनाए? खेल के 40 ओवर में एक भी छक्का नहीं लगा। आखिरी 10 ओवर में 5 विकेट खोकर 43 रन ही बन पाए! सूर्यकुमार यादव अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी साबित नहीं कर पाए। दिलचस्प यह है कि बुमराह और शमी ने 47 रन पर ही ऑस्ट्रेलिया के 3 विकेट उखाड़ दिए थे, लेकिन उसके बाद ट्रेविस हेड (137 रन) और लाबुशेन (नाबाद 58 रन) की शतकीय साझेदारी ने हमारा सपना 'छन' से तोड़ दिया। 'अजेय चैम्पियन' बनने की उम्मीदें और सच भी छीन लिए। आघात जरूर लगा है, लेकिन यह निराशा का वक्त नहीं है। इसकी समीक्षा भी खुद हमारे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों को करनी चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए। अभी तो हमारी अपनी जमीन पर 'विश्व विजेता' ऑस्ट्रेलिया के साथ टीम इंडिया को टी-20 की सीरीज खेलनी है। उसके बाद दक्षिण अफ्रीका भी जाना है। 2025 में 'चैम्पियन्स ट्रॉफी' प्रतियोगिता विश्व कप से कमतर नहीं है। यह हमारे खिलाड़ियों की टांग खींचने का भी वक्त नहीं है। टीम इंडिया के 11 चेहरों ने मैदान पर विलक्षणता दिखाई है और भारत के बारे में बड़ी तस्वीर पेश की है। प्रधानमंत्री मोदी ने ठीक ही कहा है कि हम आज भी अपनी टीम पर गर्व है। हम आज भी टीम के साथ हैं और आगे भी रहेंगे। यह खेल-भावना का संदर्भ और सरोकार है। कमोबेश 19 नवम्बर हमारा दिन नहीं था। इस खेल ने यह भावना पेश की है कि भारत समग्रता में एक राष्ट्र है।

टीम इंडिया कई फाइनल मुकाबले खेल चुकी है, लेकिन आखिरी चरण में उसके हाथ-पांव फूलने लगते हैं, नतीजतन 2013 में 'आईसीसी चैम्पियन्स ट्रॉफी' जीतने के बाद आज तक टीम इंडिया कोई विश्व-खिताब नहीं जीत पाई है। बेशक 'विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप' हो या टी-20 मुकाबलों के फाइनल हों, टीम इंडिया की परिणति और नियति 'उपविजेता' वाली हो गई है। बेशक टीम इंडिया ने एकदिनी क्रिकेट के विश्व कप में 10 लीग मैच और एक सेमीफाइनल मैच एकतरफा और निरंतर जीते थे, लिहाजा 'अजेय' मानना गलत नहीं था। हमने ऑस्ट्रेलिया समेत विश्व की तमाम श्रेष्ठ टीमों को पराजित किया। यह कोई तुक्का नहीं था। सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज एवं 'प्लेयर ऑफ दि टूर्नामेंट' विराट कोहली (765 रन), सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज मुहम्मद शमी (24 विकेट) और बुमराह (20 विकेट) और सर्वश्रेष्ठ कप्तान रोहित शर्मा (597 रन) आदि के सम्मान-पुरस्कार भी हमारे हिस्से आए, लेकिन कुछ तो गलत गणनाएं हुई थीं कि हम 'विश्व विजेता' नहीं बन पाए। विश्व के नंबर वन बल्लेबाज आज भी शुभमन गिल हैं और चौथे-पांचवें स्थान पर क्रमशः विराट कोहली और रोहित शर्मा हैं। सिराज आज भी विश्व के नंबर 2 के गेंदबाज हैं। बल्लेबाजों के वर्ग में पहले पांच स्थान पर ऑस्ट्रेलिया का कोई भी बल्लेबाज नहीं है। टीम इंडिया ने विश्व कप में कुल 3160 रन बनाए हैं। यह भी सर्वाधिक है। ये कोई सामान्य आंकड़े नहीं हैं। फिर भी सवाल हो सकता है कि फाइनल में रवीन्द्र जडेजा और कुलदीप यादव की स्पिन गेंदबाजी का वह करिश्मा कहां काफूर हो गया, जो पूरे टूर्नामेंट के दौरान आतंक और आश्चर्य बना हुआ था? सवाल हमारी धीमी बल्लेबाजी पर भी स्वाभाविक है

## बजाय नकद राशि हस्तांतरण और मुफ्त की स्कीमों की घोषणाएं प्रमुखता से होने लगी हैं

# बर्बादी का दूसरा नाम है मुफ्तखोरी

अश्वनी महाजन

चुनाव हमारे लोकतंत्र के उत्सव के रूप में जाने जाते हैं। आजादी के बाद चुनावों की सतत प्रक्रिया के चलते भारत दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रीय देश के रूप में उभरा है। यह समय है राजनीतिक दलों द्वारा अपने-अपने चुनाव घोषणापत्रों के माध्यम से मतदाताओं को अपने दलों की नीतियों और प्रस्तावित कार्यक्रमों से अवगत करवाने का। इतिहास में सभी राजनीतिक दल मतदाताओं को अपने वादों से लुभाने का प्रयत्न करते ही रहे हैं, लेकिन पिछले लगभग डेढ़ दशक में चुनावी वादों का प्रकार बदला है।

नवंबर 7 से शुरू होकर 30 नवंबर 2023 तक देश के पांच महत्वपूर्ण राज्यों में चुनाव होने जा रहे हैं। चुनाव हमारे लोकतंत्र के उत्सव के रूप में जाने जाते हैं। आजादी के बाद चुनावों की सतत प्रक्रिया के चलते भारत दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रीय देश के रूप में उभरा है। यह समय है राजनीतिक दलों द्वारा अपने-अपने चुनाव घोषणापत्रों के माध्यम से मतदाताओं को अपने दलों की नीतियों और प्रस्तावित कार्यक्रमों से अवगत करवाने का। इतिहास में सभी राजनीतिक दल मतदाताओं को अपने वादों से लुभाने का प्रयत्न करते ही रहे हैं, लेकिन पिछले लगभग डेढ़ दशक में चुनावी वादों का प्रकार बदला है। इन वादों में नीतियों और कार्यक्रमों की बजाय नकद राशि हस्तांतरण और मुफ्त की स्कीमों की घोषणाएं प्रमुखता से होने लगी है। महिलाओं, किसानों, विद्यार्थियों और कई बार अल्पसंख्यकों और अन्य कमजोर वर्गों को नकद हस्तांतरण, समस्त जनता को मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त यात्रा समेत कई मुफ्तखोरी की स्कीमों की घोषणाएं अब एक आम बात हो गई है। मध्य प्रदेश में कांग्रेस पार्टी ने किसानों के कर्ज माफ करने के अलावा मुफ्त बिजली, गैस सिलेंडर की सब्सिडी, महिलाओं को 1500 रुपए प्रति माह, युवाओं को 3000 रुपए बेरोजगारी भत्ते के अलावा कई अन्य मुफ्त की स्कीमों की घोषणा की है। इसी प्रकार की घोषणाएं अलग-अलग राजनीतिक दलों द्वारा की गई हैं। मतदाताओं को रिझाने का हरसंभव प्रयास किया जा रहा है। ऐसे में विचार करने का विषय है कि क्या यह हमारे लोकतंत्र की स्वस्थ परंपरा है। क्या हमारी सरकारें इन मुफ्त स्कीमों के लिए धन जुटा पाएंगी? कहीं राज्य सरकारों पर कर्ज का बोझ तो नहीं बढ़ जाएगा? इन मुफ्त की योजनाओं का सरकारी योजनाओं, सामाजिक क्षेत्रों पर खर्च और उनके स्तर पर इनका क्या प्रभाव पड़ेगा? इन सभी प्रश्नों पर विचार करना जरूरी हो गया है।

अन्य देशों के उदाहरण : दुनिया के कई देशों में मुफ्तखोरी के कारण सरकारी कर्ज के बढ़ने और कई देशों के तो उसके कारण बर्बाद होने के भी कई उदाहरण मिलते हैं। वेनेजुएला और श्रीलंका इत्यादि के उदाहरणों से पता चलता है कि उन जैसे धनाढ्य देश भी मुफ्तखोरी की गलत आर्थिक नीतियों के चलते गरीब देशों से भी बदतर हालत में पहुंच सकते हैं, तो पाकिस्तान सरीखे विकासशील देशों की बिसात ही क्या है। वर्तमान में कल्याणकारी राज्य के नाम पर मुफ्त की स्कीमों के कारण कई



**अमीर देशों की भी एक लंबी सूची है, जो आज भारी कर्ज में डूबे हुए हैं और अब वे इन स्कीमों को चलाने में सक्षम नहीं हैं।**

राज्यों पर बढ़ता कर्ज : लेकिन मुफ्तखोरी की यह बीमारी अब भारत के कई राज्यों में फैलती जा रही है। इस माह होने वाले चुनावों में तो राजनीतिक दलों ने मुफ्तखोरी की योजनाओं की घोषणाओं की झड़ी लगा दी है। मुफ्त बिजली, मुफ्त यातायात, महिलाओं को अनुदान राशि, युवाओं को बेरोजगारी भत्ता इत्यादि के साथ-साथ मुफ्त वाहन और कई अन्य मुफ्तखोरी की स्कीमों के बारे में हम रोज सुन रहे हैं। कुछ समय पहले भारतीय रिजर्व बैंक और भारत के महालेखाकार एवं अंकेक्षक (कैग) ने अपनी-अपनी रिपोर्टों में मुफ्तखोरी के कारण राज्यों पर बढ़ते कर्ज के बारे में आंकड़े प्रकाशित किए हैं और यह चिंता व्यक्त की है कि जहां-जहां मुफ्तखोरी की स्कीमें ज्यादा चल रही हैं, वहीं-वहीं पर राज्यों पर कर्ज भी बढ़ता जा रहा है। गौरतलब है कि एफआरबीएम अधिनियम के अनुसार किसी भी राज्य में ऋण-जीएसडीपी (राज्य का सकल घरेलू उत्पाद) का लक्षित अनुपात 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। लेकिन कैग का कहना है कि देश के अधिकांश राज्यों में यह अनुपात इस लक्षित अनुपात से कहीं ज्यादा है। पंजाब में यह 48.98 प्रतिशत, राजस्थान में 42.37 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में 37.39 प्रतिशत, बिहार में 36.73 प्रतिशत, आंध्र प्रदेश में 35.30 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 31.53 प्रतिशत, तेलंगाना में 27.80 प्रतिशत, तमिलनाडु में 27.27 प्रतिशत और छत्तीसगढ़ में 26.47 प्रतिशत तक पहुंच गया है। और यदि राज्य के सरकारी उद्यमों और राज्य सरकार द्वारा दी गई गारंटियों को भी शामिल कर लिया जाए तो 2020-21 तक राजस्थान में ऋण जीएसडीपी अनुपात 54.94 प्रतिशत और पंजाब में तो यह 58.21 प्रतिशत तक पहुंच चुका था। आंध्र प्रदेश में भी यह 53.77 प्रतिशत आकलित किया गया है। इसके बाद तेलंगाना में यह 47.89 प्रतिशत, मध्यप्रदेश में 47.13 प्रतिशत तक पहुंच चुका है। पश्चिम बंगाल और बिहार में भी यह क्रमशः 40.35 प्रतिशत और 40.51 प्रतिशत है और तमिलनाडु में यह 39.94 प्रतिशत है। कैग का यह भी कहना है कि राज्यों का कर्ज लक्षित अनुपात की तुलना में लगातार बढ़ता जा रहा है। यह राज्यों के लिए ही नहीं, देश के लिए भी चिंता का विषय है। आंध्र प्रदेश के बारे में रिजर्व बैंक का कहना है कि पंजाब के बाद आंध्र प्रदेश मुफ्त की योजनाओं पर खर्च करने वाला देश का दूसरा ऐसा राज्य है। गौरतलब है कि पंजाब में कुल कर राजस्व का 45.5 प्रतिशत मुफ्त की योजनाओं पर खर्च होता है और आंध्र प्रदेश में 30.3 प्रतिशत। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद की बात करें तो पंजाब में राज्य सकल घरेलू उत्पाद का 2.7 प्रतिशत मुफ्त की योजनाओं में खर्च होता है तो आंध्र प्रदेश में 2.1 प्रतिशत। इसके अलावा मध्य प्रदेश में सब्सिडी पर खर्च कर राजस्व का 28.8 प्रतिशत, झारखंड में यह 26.7 प्रतिशत है। गौरतलब है कि कैग के आकलन के अनुसार उन राज्यों पर कर्ज ज्यादा है, जहां मुफ्त की स्कीमों पर ज्यादा खर्च किया जा रहा है। इसमें सबसे ऊपर पंजाब और आंध्र प्रदेश हैं जहां कुल राजस्व का भारी हिस्सा मुफ्त की योजनाओं पर खर्च होता है। आंध्र प्रदेश के अलावा दक्षिण का एक अन्य प्रांत तमिलनाडु है जो मुफ्त की योजनाओं पर खर्च करता है।

जरूरी मदों पर खर्च में कटौती : जब कोई प्रांत मुफ्त की स्कीमों पर अपने कर राजस्व का इतना बड़ा हिस्सा खर्च कर देता है तो स्वाभाविक रूप से आवश्यक सेवाओं और इंफ्रास्ट्रक्चर पर उसका पूंजीगत खर्च कम हो जाता है। राज्य सरकार पर कर्ज बढ़ता चला जाता है, जिसके चलते भविष्य में भी सामाजिक सेवाओं जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ-साथ यातायात और अन्य आवश्यक सेवाएं भी प्रभावित होती हैं। किसी भी राज्य के विकास के लिए जरूरी है कि उसमें निवेश बढ़े। इन्फ्रास्ट्रक्चर के अभाव में निवेश प्रभावित होता है और उसके कारण राज्य का विकास भी। जरूरी है कि राज्यों द्वारा दी जा रही मुफ्त की स्कीमों पर अंकुश लगाकर देश के विकास को गति दी जाए।

रेटिंग पर भी असर : हमें समझना होगा कि भारत राज्यों का एक संघ है, इसलिए, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार दोनों के ऋण मिलाकर संपूर्ण सरकार के ऋण माने जाते हैं।

# चंदरेयां नोटां ने मेरा चन्न परदेसी कीता

गांव-मुहल्ले में गिना-चुना सैनिक, इंजीनियर, रेलवे, कारखाने तथा फैक्टरी या किसी अन्य व्यवसाय में काम करने वाला व्यक्ति ही बाहर किसी देश तथा प्रदेश में होता था अन्यथा शिक्षक, क्लर्क, सिपाही, फारेस्ट गार्ड, मैकेनिक, कारपेंटर, चपरासी तो लगभग प्रत्येक परिवार में मौजूद रहता था। परिवारों का आकार बड़ा होता था। परिवार में आठ-दस भाई-बहन होना सामान्य था। रोजगार के अवसर उपलब्ध थे, परन्तु बहुत शिक्षित तथा व्यवसाय अनुसार योग्यता पूर्ण करने वाले लोग बहुत कम मिलते थे। बुजुर्ग अपने किसी लाडले पुत्र को अधिक नहीं पढ़ाते थे। उसे घर गृहस्थी, खेती बाड़ी तथा परिवार समाज के व्यवहार की दृष्टि से शिक्षण-प्रशिक्षण देते थे। परिवार में नौकरी करने वाले घर चलाने वाले व्यक्ति तथा उसके परिवार का पूरी तरह से ध्यान रखते।

इस आलेख का शीर्षक आम तौर पर ट्रकों के पीछे लिखा रहता है, क्योंकि ट्रक का ड्राइवर परिवार के भरण पोषण के लिए हमेशा घर से दूर तथा सफर में ही रहता है। लगभग दो-तीन दशक पूर्व यह बात इसलिए समझ नहीं आती थी क्योंकि ज्ञान, अनुभव और समझ भी कम थी। उस समय आबादी भी अधिक नहीं थी तथा गरिमापूर्ण तरीके से भरण-पोषण के अवसर भी मौजूद थे। घर के युवा तथा बड़े अपने गांव-शहर के आसपास ही मौजूद रहते थे। कोई न कोई काम-धंधा तथा नौकरी करने के बाद शाम को या सप्ताह के अंत में घर आ जाते थे। गांव-मुहल्ले में गिना-चुना सैनिक, इंजीनियर, रेलवे, कारखाने तथा फैक्टरी या किसी अन्य व्यवसाय में काम करने वाला व्यक्ति ही बाहर किसी देश तथा प्रदेश में होता था अन्यथा शिक्षक, क्लर्क, सिपाही, फारेस्ट गार्ड, मैकेनिक, कारपेंटर, चपरासी तो लगभग प्रत्येक परिवार में मौजूद रहता था। परिवारों का आकार बड़ा होता था। परिवार में आठ-दस भाई-बहन होना सामान्य था। रोजगार के अवसर उपलब्ध थे, परन्तु बहुत शिक्षित तथा व्यवसाय अनुसार योग्यता पूर्ण करने वाले लोग बहुत कम मिलते थे। बुजुर्ग अपने किसी लाडले पुत्र को अधिक नहीं पढ़ाते थे। उसे घर गृहस्थी, खेती बाड़ी तथा परिवार समाज के व्यवहार की दृष्टि से शिक्षण-प्रशिक्षण देते थे। परिवार में नौकरी करने वाले घर चलाने वाले व्यक्ति तथा उसके परिवार का पूरी तरह से ध्यान रखते। घर के बुजुर्ग भी संवेगात्मक, भावनात्मक, सुरक्षात्मक तथा मनोवैज्ञानिक रूप से सन्तुष्ट रहते। घर-परिवार तथा रिश्तेदारी में सरकारी नौकरी करने वालों की शान ही निराली थी। गांव तथा समाज के लोगों को अपने मित्र-सज्जन, भाई-बन्धु से आशा भी होती थी। सब अवसरों पर नौकरीशुदा व्यक्ति का आदर सम्मान होता था। परिवार, गांव तथा समाज में हर व्यक्ति की पहचान तथा मान-सम्मान था। बहुत अधिक इच्छा, आशा, अपेक्षा तथा पैसे की भूख भी नहीं होती थी। बाहर से कोई परदेसी, अप्रवासी तथा कोई बाहरी व्यक्ति कामकाज के लिए नहीं आता था। दूरसंचार तथा आने-जाने के संसाधन सीमित थे। सरकारी रोजगार के अवसर भी उपलब्ध थे। संसाधनों के अभाव में जीवन कष्टदायक तो था, फिर भी शान्ति, संतुष्टि तथा संतोष था। कुछ दशकों के उपरांत घर-परिवार, समाज, प्रांत, देश तथा विदेश में ऐसी परिवर्तन की हवा चली कि सब कुछ बदल गया। सामाजिक आचार-व्यवहार, साधन, संसाधन, व्यक्ति की सोच तथा व्यवस्थाओं की नीतियों में परिवर्तन हुआ। वैश्विक स्तर पर शिक्षा, आर्थिकी, संसाधन, विज्ञान, संचार, तकनीक, भौतिकवाद नीतियों ने हमारे जीवन में आशातीत परिवर्तन कर दिया। इस परिवर्तन से जहां हमारी जीवन शैली बदल गई, वहीं हम ही अपने से तथा अपनों से ही दूर होते गए। हमारा सामान्य तथा प्राकृतिक जीवन पूरी तरह से परिवर्तित हो गया। परिवार, गांव तथा समाज टूटते तथा बिखरते गए। परिणामस्वरूप नई सोच, नया व्यवहार, नई संस्कृति तथा सभ्यता का जन्म हुआ। हम अपने आप तथा अपने परिवार तक सीमित तथा संकुचित होते गए। सामाजिक तथा सामूहिक सरोकार लगभग समाप्त ही हो गए। हम व्यक्तिवादी, स्वार्थी, सीमित तथा संकुचित हो चुके हैं। चारों ओर छीना-झपटी, अवसरवादिता तथा असंतोष व्याप्त है। खुमार बाराबंकवी का एक शे'र याद आ रहा है : 'चरागों के बदले मकां जल रहे हैं/ नया है जमाना, नई रौशनी है।' वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में हर परिवार में एक या दो बच्चे हैं। छोटे से बड़ा व्यक्ति अपने बच्चों को अच्छी और महंगी शिक्षा देने को प्रयासरत तथा प्रतिबद्ध है। माता-पिता बच्चों की ख्वाहिशें पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। व्यवस्थाओं के प्रयासों से शिक्षा में गुणवत्ता बहुत दूर होती गई। कार्य संस्कृति लगभग समाप्त हो ही है। सरकारी उपक्रमों में रोजगार उपलब्ध ही नहीं। अगर किसी को मौका मिलता है तो लोग काम नहीं करना चाहते। बहुत ही कम लोग ईमानदारी तथा संकल्पित होकर कार्य कर रहे हैं। जो व्यक्ति समर्पित भाव से कार्य करना चाहता है, उसकी कोई पहचान नहीं है। जिम्मेदारी तथा कर्मठता से कार्य करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। जान-पहचान तथा प्रभावशाली व्यक्तियों का बोलबाला हो गया है। रोजगार के अवसर न के बराबर हैं। जहां रोजगार उपलब्ध है, वहां सामान्य रूप से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावशाली व्यक्तियों तथा व्यवस्थाओं का हस्तक्षेप हो ही जाता है। योग्यता को दरकिनार होते देखा जाता है। किसी भी कीमत पर हम अवसरों को हथियाना चाहते हैं। नई पीढ़ी को विभिन्न विकारों तथा नशों ने घेर रखा है। अच्छी शिक्षा तथा संस्कारों से युक्त कुछ युवा बहुत ही प्रखर, प्रतिभाशाली तथा योग्य हैं। बहुत संस्कारी तथा ज्ञान-ध्यान रखते हैं। महंगी शिक्षा प्राप्त इन योग्य तथा प्रखर बुद्धि से युक्त युवाओं को घर के आसपास रोजगार उपलब्ध नहीं हैं। सरकारों तथा व्यवस्थाओं में उनकी योग्यता, शिक्षा तथा कौशल के मुताबिक वेतन तथा पैकेज देने की क्षमता नहीं है। इसलिए वे अच्छे पैकेज तथा सुख-सुविधाओं के लिए महानगरों या फिर विदेशों का रुख करते हैं। निजी कम्पनियां पैसा अवश्य देती हैं, लेकिन दिन-रात काम लेकर जान निकल कर रख देती हैं। साल-छह महीने के बाद भी छुट्टी नहीं दी जाती। माता-पिता तथा परिजन विवाह, शादियों, शुभ अवसरों तथा तीज-त्योहारों पर अपने लाडलों की प्रतीक्षा करते हैं।



## देश दुनीया से

# वैश्विक संस्थाएं और विनाशकारी 'खेल'

यह विडंबना है कि जब सारे विश्व को एक स्वर में यह कहने के लिए एकजुट करने की आवश्यकता है कि आतंकवाद को कहीं से कोई समर्थन नहीं दिया जाएगा, तब कथित विश्व मंच के नेता जिहादियों की भाषा में बात कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस आज तक कोई भी युद्ध, तनाव या टकराव रोक तो नहीं सके हैं, लेकिन उन्होंने यह कह कर आग में घी जरूर डाल दिया है कि 'यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि हमास द्वारा किए गए हमले शून्य में नहीं हुए', क्योंकि फिलिस्तीनी '56 वर्ष के दम घुटने वाले कब्जे के अधीन हैं।' इससे एक विश्व संस्था के रूप में संयुक्त राष्ट्र की उपयोगिता संदिग्ध हो गई है। गुटेरेस जैसे व्यक्ति के संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रमुख बने रहने से इसकी अवशोषप्रायः गरिमा भी समाप्त हो जाएगी। एक अपाहिज संस्था के शीर्ष पदाधिकारी भी अगर समझ की दृष्टि से अपाहिज हों, तो ऐसी संस्था विश्व परिस्थिति के लिए पूर्णतः अप्रासंगिक सिद्ध हो जाती है। संयुक्त राष्ट्र पहले ही उधार का जीवन जी रहा है और अब वह यहां भी दीवालिया होता नजर आ रहा है। वास्तव में 21वीं सदी को अलग और सार्थक वैश्विक संगठन की आवश्यकता है। गुटेरेस का प्रकरण इस दिशा में आगे बढ़ने का एक ठोस आधार और अवसर होना चाहिए। वास्तव में अधिकांश विश्व मंच सिर्फ सैर-सपाटे और राजनीति के अड्डे बन चुके हैं, लगभग सभी का उद्देश्य संदिग्ध हो चुका है और कोई भी किसी के भी प्रति जिम्मेदार नहीं है। उदाहरण के लिए, कोविड महामारी के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं, विश्व स्वास्थ्य संगठन भी बुरी तरह विफल रहा है। जिसे विश्व स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार माना जाता है, वह इस महामारी के दौरान लगातार चीन का बचाव करता रहा। इसके मुखिया टेड्रोस ए. गेब्रेयेसस ने तो कोरोना के मनुष्य से मनुष्य में नहीं फैलने जैसा बयान भी दिया था, जिसे पूरी दुनिया ने देखा है। रूस-यूक्रेन तो छोड़िए, मध्य पूर्व के सभी युद्धों में संयुक्त राष्ट्र विफल रहा है। लेकिन हमास-इस्राइल युद्ध की स्थिति को गुटेरेस के बयान ने व्यापक संदेहों की ओर खतरनाक ढंग से धकेल दिया है। जो खतरनाक वायरस का राजनीतिक स्वार्थ की दृष्टि से बचाव कर सकता है, वह भविष्य में जैविक शस्त्रों का भी बचाव कर सकता है। जो निर्दोष नागरिकों पर हमास के भयानक आतंकवादी हमले को उचित ठहरा सकता है, वह पाकिस्तानी इस्लामी आतंकवादियों का भी बचाव कर सकता है। ऐसी संस्था तो विश्व शांति और मानवता के लिए, एक अभिशाप है। क्या एंटोनियो गुटेरेस को अनुमान है कि युद्ध, आतंकवाद, आम नागरिकों का नरसंहार आदि क्या होता है? क्या 56 वर्ष की बात करने वाले गुटेरेस जानते हैं कि हमास क्या है? क्या अब संयुक्त राष्ट्र संघ ऐसे भ्रष्ट निजी सैन्य गिरोहों की सत्ता को मान्यता देने के प्रति गंभीर है? अगर गुटेरेस इससे भी अंजान हैं, तो यह और बड़ी विडंबना है, क्योंकि खुद हमास ने इस तथ्य को छिपाने का कभी प्रयास नहीं किया है कि इस्माइल हनीये सहित उसके अन्य शीर्ष नेता हमेशा कतर के शानदार पांच सितारा होटलों में रहते हैं और वे न फिलीस्तीन के नेता हैं, न गाजा पट्टी हमास को किसी ईमानदारी का या नेता होने का दिखावा करने की भी परवाह नहीं है। हमास ने जनता के नाम पर मिले दान के पैसों का इस्तेमाल अपने ऐशोआराम और आतंकवाद का सामान जुटाने में किया है। क्या एंटोनियो गुटेरेस को अनुमान है कि उन्होंने क्या किया है? उन्होंने न केवल आम नागरिकों की हत्याओं को उचित ठहराया है, बल्कि नागरिकों का प्रयोग हथियार के रूप में करने को भी जायज ठहराया है। इसके अलावा, आतंकवाद के पक्ष में एक उल्लेखनीय बयान उपलब्ध करा कर उन्होंने इसे कभी न खत्म होने वाली कहानी में भी बदल दिया है। गुटेरेस ने अपना बयान वापस नहीं लिया है। मात्र यह कहा है, 'मेरे कहने का मतलब ये नहीं था कि मैं हमास के हमलों को सही ठहरा रहा हूं..।'

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस आज तक कोई भी युद्ध, तनाव या टकराव रोक तो नहीं सके हैं, लेकिन उन्होंने यह कह कर आग में घी जरूर डाल दिया है कि 'यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि हमास द्वारा किए गए हमले शून्य में नहीं हुए', क्योंकि फिलिस्तीनी '56 वर्ष के दम घुटने वाले कब्जे के अधीन हैं।' इससे एक विश्व संस्था के रूप में संयुक्त राष्ट्र की उपयोगिता संदिग्ध हो गई है। गुटेरेस जैसे व्यक्ति के संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रमुख बने रहने से इसकी अवशोषप्रायः गरिमा भी समाप्त हो जाएगी। एक अपाहिज संस्था के शीर्ष पदाधिकारी भी अगर समझ की दृष्टि से अपाहिज हों, तो ऐसी संस्था विश्व परिस्थिति के लिए पूर्णतः अप्रासंगिक सिद्ध हो जाती है। संयुक्त राष्ट्र पहले ही उधार का जीवन जी रहा है और अब वह यहां भी दीवालिया होता नजर आ रहा है।

## कुछ अलग

# नए भविष्य के लिए

हिमाचल प्रदेश मंत्रिमंडल की बैठक ने सुक्खू सरकार के इरादों की पुनःपुष्टि करते हुए कुछ फैसले ऐसे भी लिए जिनसे न्याय फिर से परिभाषित होता है। प्रशासनिक ट्रिब्यूनल फिर लौट रहा है, क्योंकि सरकार की इच्छाशक्ति अपने निर्णयों के स्तंभों को ठोस जमीन पर खड़ा करना चाहती है। प्रायः कानून की चारदीवारी को राजधानी शिमला के वजूद में देखा गया है, जहां प्रदेश की उच्च अदालत का सिंहासन बोलता है। कर्मचारी मामले भी अपनी घुटन मिटाने के लिए कानून की आबोहवा में, शिमला की दूरबीन से जो देखते रहे, उन्हें फिर से प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के दायरे में लाने का संकल्प प्रतिपादित हो रहा है। हालांकि कर्मचारी मसलों में सरकारों के सौहार्द परवान चढ़ते रहे, लेकिन कानून के दायरे में हिफाजत का सफर बार-बार बदला। कभी सारे कर्मचारी विषय अदालत की फरियाद में हुजूम बन गए, तो कभी प्रशासनिक ट्रिब्यूनल ने अपने ढांचे में फरियाद को मंडी व धर्मशाला तक पहुंचा दिया, ताकि मामलों को सुनने का आधार पूरे प्रदेश की तासीर को संबोधित कर सके। उम्मीद है एक बार फिर प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के माध्यम से कर्मचारी मसले, हिमाचल के क्षेत्रीय अपेक्षाओं के साथ त्वरित राहत का जाम पिएंगे। कर्मचारियों के लिए अपनी पैरवी के सबूत उठा-उठा कर शिमला में जाकर जंग जीतना आसान नहीं, लेकिन ट्रिब्यूनल के माध्यम से यही सफर अगर धर्मशाला-मंडी में कट जाए, तो बोझ भी घट जाएगा। बहरहाल यह मामला प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के औचित्य को सिद्ध कर रहा है, तो न्याय की इसी दलील पर हाई कोर्ट की सर्किट बैंच या स्थायी बैंच का प्रश्न भी अकसर उतावला हो जाता है। तर्क इसी क्रम और ताकत से ताकते रहे हैं और गुजारिश यह रही कि कम से कम हाई कोर्ट की एक अदद सर्किट बैंच धर्मशाला के लिए मंजूर हो जाए। पिछले चालीस सालों से प्रयासरत प्रदेश के एक बड़े भू भाग के लिए न्याय की यह मांग फिलहाल सियासी इच्छाशक्ति की मोहताज रही है, जबकि हिमाचल विधानसभा का एक पूरा शीतकालीन सत्र इसी तर्क की गवाही में तपोवन में आयोजित होने लगा है। इस बार 19 से 23 दिसंबर तक यही सत्र फिर से हिमाचल की नब्ज की परख करेगा। बहरहाल मंत्रिमंडल की बैठक में मुख्यमंत्री की ऊर्जा व उनके बहुप्रतीक्षित फैसलों का इंतजार था और इस दृष्टि से ब्यास बेसिन में 50 क्रशर को फिर से शुरू करने की घोषणा ने कई तरह के आर्थिक संबंध पैदा किए हैं। बरसात के महीनों ने सरकार को बाध्य कर दिया था कि ऐसे फैसले की हूक में मनोरथ कमाया जाए, लेकिन जीवन रुकता कहां है। इनसान हमेशा अपनी ही हानियों की भरपाई में उम्र लगा देता है, दर्द के अध्यायों को फाड़ देता है या उसी पहाड़ से टकराता रहता है जो सदियों से टूट रहा है। बेशक ब्यास नदी के तट इस बार खूब रोए और बर्बादी के आलम में कई कश्तियां टूटी थीं, लेकिन प्रकृति की साझी विरासत में सिर्फ एक कहर ही नहीं चुना जा सकता।

## दृष्टिकोण

# गोबर के गुलगुले

देश में जब तक आजादी का अमृत काल नहीं उतरा था, आम जनता गुड़ से बने गुलगुले खाती थी। उस वक्त हिन्दी की एक मशहूर कहावत चलती नहीं दौड़ती थी- गुड़ खाए, गुलगुलों से परहेज। लेकिन जब से भक्तों ने गुड़ की जगह गोबर खाना शुरू किया है, लगता है इस कहावत को बदलने का समय आ गया है। अब कहना हो तो कहना चाहिए- गोबर खाय, गुलगुलों से परहेज। मुझे लगता है कि जो भक्त हैं, अगर उन्हें तनिक भी प्रेरित किया जाए तो वे गोबर के गुलगुले खाने से परहेज नहीं करेंगे। जब कई भक्त बाकायदा गोबर खाने के वीडियो बना कर सोशल मीडिया पर अपलोड कर सकते हैं तो वे इसके गुलगुले खाने से क्यों कर परहेज करेंगे। बस थोड़ी सी मोटीवेशन की जरूरत है। जब लोग बिना मोटीवेशन के ही इज़राइल के समर्थन में हमास से लड़ने गाज़ा जा सकते हैं तो मोटीवेशन के बाद हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए गोबर के गुलगुले भी खा सकते हैं। रही बात लद्दाख में चीनी कब्ज़े की तो उसे छुड़ाने के लिए किसी भी भक्त को अपने आपको वालंटियर करने की आवश्यकता नहीं। अपनी ज़मीन है, अगर किसी को दे भी दी तो हमारी मजूरी। फिर हमारा तो इतिहास ही रहा है कि हम सभी मेहमानों का स्वागत पान पराग, क्षमा करें धूमधाम से करते हैं। हमारे लिए अतिथि देवो भव:। चीन हमारा खास मेहमान है। हमारा देश चीनी सामान का सबसे बड़ा आयातक है। हम अपनी दिवाली उनकी झालरों, लालटेन और लैम्पों से रौशन करते हैं। हमारे विदेश मंत्री एस. जयशंकर कहते हैं कि चीन हमसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। हम उससे पंगा नहीं ले सकते। जब किसी से पंगा लेने की हिम्मत न हो तो बेहतर होता है कि उसकी जी-हुजूरी की जाए। उसे झूला झुलाया जाए। फिर उसे मनचाहा नाम दे दिया जाए। क्या फर्क पड़ता है। खाने तो गुलगुले ही हैं, वह भी गोबर के। जब लोग बिना किसी मोटीवेशन के सड़कों पर गायों को खुला छोड़ सकते हैं और गोभक्ति की मोटीवेशन पर किसी विधर्मी की मॉब लिंचिंग कर सकते हैं तो क्या थोड़ी सी प्रेरणा मिलने अपनी गो-माता के सम्मान में गोबर के गुलगुले नहीं खा सकते। यूँ भी चुनावों के दौरान प्रधानमंत्री सहित हमारे नेता जिस भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि माननीयों सहित आम जन भी बिना किसी शर्मो-हया के गोबर खाने में मस्त हैं। प्रधानमंत्री का पद भले बड़ा हो, लेकिन उस पर बैठने वाले व्यक्ति का कद इतना छोटा हो गया है कि उस पर बैठा आदमी अक्सर परी कथाओं के बौने की तरह अदृश्य हो उठता है। वह आँखें फाड़ कर देखने पर तभी नज़र आता है जब उसकी ज़बान से निकलने वाला अगड़म-बगड़म लोगों के कान में गड़ता है। यह गोबर के गुलगुलों का ही प्रभाव है कि देश वैश्विक गुरू बनने के बाद आत्ममुग्धता की पींगें झूल रहा है और सम्मोहित लोग भूखे पेट राष्ट्रवाद के गीत गाते हुए झूम रहे हैं। भूख का इलाज भले गोबर न हो, लेकिन गोबर कैंसर का उपचार बेहद कारगर ढंग से कर सकता है। मुझे इस बात की पूरी उम्मीद है कि आने वाले समय में अगर लोग राष्ट्रवाद के नाम पर सरकार को सहयोग देते हो सकता है कि सरकार गोबर की प्रोसेसिंग के लिए श्रेष्ठतम वैश्विक प्रौद्योगिकी वाले प्लांट लगाने के बाद गोबर के उत्तम गुणवत्ता वाले गुलगुलों का उत्पादन करे जो न केवल खाने में स्वादिष्ट हों, बल्कि सुपाच्य भी हों। इससे सरकार को अस्सी करोड़ लोगों को प्रति माह दिए जाने वाले निःशुल्क पाँच किलो राशन से भी छुटकारा पाने में मदद मिलेगी।

# चीन पर फिलीपीन के राष्ट्रपति मार्कोस की दो टूक, कहा–एक इंच जगह भी नहीं देंगे, देश झुकेगा नहीं

**होनोलुलू ।**
चीन की विस्तारवादी नीति से दक्षिण चीन सागर में हालात और गंभीर होते जा रहे हैं। फिलीपीन के राष्ट्रपति फर्डिनेंड मार्कोस जूनियर ने कहा है कि स्थिति अधिक गंभीर इसलिए हो गई है क्योंकि चीन ऐसे क्षेत्र में अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है जहां कई देशों के प्रतिस्पर्धी क्षेत्रीय दावे हैं। चीन लगातार फिलीपीन तट के करीब एटोल व शोल तट के लिए अपनी रुचि बढ़ा है, लेकिन हम उसे एक इंच भी जगह नहीं देंगे। मार्कोस ने कहा इस कारण यहां के हालात सुधरने के बजाय और खराब होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा, दुर्भाग्य से मैं यह रिपोर्ट नहीं कर सकता कि हालात में सुधार हो रहा है, क्योंकि स्थिति पहले से भी ज्यादा गंभीर हो गई है। फिलीपीन के राष्ट्रपति सान फ्रांसिस्को में एक क्षेत्रीय शिखर बैठक से लौटते वक्त अमेरिकी सैन्य नेताओं और स्थानीय फिलिपीनो समुदाय से मिलने के लिए हवाई में रुके थे। इस यात्रा का मार्कोस जूनियर को भू-राजनीतिक और व्यक्तिगत महत्व दोनों हासिल हुआ है। उनकी यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब अमेरिका और फिलीपीन अपने लंबे समय से चले आ रहे गठबंधन को मजबूत कर रहे हैं। समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के तहत चीन के व्यापक ऐतिहासिक दावों को अमान्य करने के बावजूद बीजिंग ने इस मध्यस्थता को पूरी तरह से मानने से खारिज कर दिया है। मार्कोस ने कहा कि उनका देश झुकेगा नहीं।

### द्वीपों का सैन्यीकरण किया

अमेरिका का कहना है कि चीन ने इस क्षेत्र में बनाए गए कई द्वीपों का सैन्यीकरण किया है। उसने यहां जहाज-रोधी और विमान-रोधी मिसाइल प्रणालियों, लेजर और जैमिंग उपकरण तथा लड़ाकू विमान तैनात किए हैं। चीन ने सेकेंड थॉमस शोल पर एक अलग फिलीपीन समुद्री चौकी को भी बाधित कर दिया है। यहां वह आए दिन फिलीपीन के जहाजों को टक्कर मारकर हटा रहा है।

### मलयेशिया जैसे पड़ोसियों से किया संपर्क

फिलीपीन ने दक्षिण चीन सागर के संबंध में एक अलग आचार संहिता पर चर्चा के लिए मलयेशिया और वियतनाम जैसे पड़ोसियों से संपर्क किया है, ताकि चीन के साथ एक व्यापक क्षेत्रीय समझौता किया जा सके। राष्ट्रपति मार्कोस ने फिलीपीन के एकमात्र संधि सहयोगी अमेरिका के साथ मजबूत संबंधों को फिर से मजबूत करते हुए चीन के आक्रामक व्यवहार की शिकायत भी की है।

## न्यूज ब्रीफ

### लश्कर-ए-तैयबा आज से हमारे लिए भी आतंकी संगठन, मुंबई हमलों की 15वीं बरसी से पहले इजराइल का बड़ा एलान

**यरुशलम ।** इजराइल और हमास के बीच संघर्ष को शुरू हुए अब डेढ़ महीने से ज्यादा समय बीत चुका है। इसमें हजारों लोगों की जान जा चुकी है। इस बीच भारत ने इजराइल पर हुए हमले की कड़ी निंदा करते हुए इसे आतंकवाद तक करार दे दिया। अब इजराइल ने आतंक को लेकर भारत की दृढ़ता का समर्थन करते हुए पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा को अपनी आतंकी संगठनों की सूची में शामिल कर लिया है। भारत में इजराइली दूतावास ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इजराइली दूतावास की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि 26/11 के मुंबई हमलों की 15वीं बरसी के मद्देनजर इजराइल ने लश्कर-ए-तैयबा को आतंकी संगठन घोषित करने का फैसला किया है। इस बारे में भारत सरकार की तरफ से इजराइल से कोई अपील नहीं की गई, इसके बावजूद देश की तरफ से खुद यह कदम उठाया गया है। इजराइली दूतावास ने कहा कि इसे लेकर सभी तरह के जरूरी दस्तावेजी कार्यवाही और सत्यापन पूरा कर लिया गया है और इसी के साथ अब लश्कर-ए-तैयबा इजराइल की अवैध आतंकी संगठनों की सूची में शामिल हो गया है। गौरतलब है कि मुंबई में 26 नवंबर 2008 को लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकवादियों ने मुम्बई को बम विस्फोटों और गोलीबारी से दहला दिया था। इस आतंकी हमले में 166 लोग मारे गए थे और 300 से ज्यादा लोग घायल हुए थे। यह हमला 29 नवंबर तक चला था। इसमें नौ आतंकवादी भी मारे गए थे और जिंदा पकड़े गए आतंकवादी कसाब को बाद में फांसी दी गई थी। पाकिस्तानी आतंकियों ने यहूदियों के उपासना स्थल चबाड हाउस (नरीमन हाउस) को भी निशाना बनाया था। दो हमलावरों ने यहूदियों को बंधक बना लिया था। यहां उन्होंने रब्बी गैब्रिएल होल्ट्जबर्ग और उनकी गर्भवती पत्नी रिवकाह होल्ट्जबर्ग सहित छह लोगों की हत्या कर दी थी।

### कैदी से रिश्वत मांगने के आरोप में भारतीय मूल का जेल वॉर्डन दोषी करार

**सिंगापुर ।** सिंगापुर में एक भारतीय मूल के जेल वॉर्डन को कैदी से रिश्वत मांगने के मामले में दोषी करार दिया है। उस पर आरोप था कि उसने एक कैदी को जेल से बाहर स्थानांतरित करने के बदले आठ लाख से अधिक रुपये यानी 1,33,000 डॉलर की रिश्वत की मांग की थी। अब इसी मामले में उसे दोषी ठहराया गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, 56 वर्षीय कोबी कृष्ण अयावू को अपने साथ काम करने वाले कर्मचारियों को कैदी की जानकारी देखने के लिए जेल प्रणाली का इस्तेमाल करने के लिए उकसाने का भी दोषी पाया गया है। अदालत जनवरी में सजा सुनाएगी। कोबी ने अपने ऊपर लगे 10 आरोपों का विरोध किया था, जिनमें से ज्यादातर चोंग केंग ची नाम के कैदी से रिश्वत मांगने के थे, लेकिन उन सभी में उसे दोषी ठहराया गया। अभियोजन पक्ष ने दलील दी थी कि कोबी ने सितंबर 2015 से मार्च 2016 के बीच चोंग से रिश्वत मांगी थी। इनमें कार लोन की किस्तों का भुगतान, घर का नवीनीकरण, जन्मदिन समारोह और क्रेडिट कार्ड बिल शामिल थे। दरअसल, चोंग ने अपनी प्रेमिका के सात साल के बेटे के साथ तबतक दुर्व्यवहार किया था, जबतक उसकी मौत नहीं हो गई। इसी मामले में साल 2005 में उसे 20 साल की हिरासत की सजा सुनाई गई थी।

### अगवा पोत छुड़ाने के लिए हूती विद्रोहियों से चर्चा कर रहा जापान, कंपनी के नाम से हुआ भ्रम

**यरूशलम ।** तुर्किये से भारत आ रहे मालवाहक जहाज गैलेक्सी लीडर के जापानी संचालक एनवाईके लाइन ने कहा है कि अपहरण के समय जहाज में कोई माल नहीं था। जापान ने जहाज अगवा किए जाने की निंदा की है। मुख्य कैबिनेट सचिव हिरोकाजु मात्सुनो ने कहा कि जापानी सरकार हूती विद्रोहियों के साथ चर्चा कर चालक दल की शीघ्र रिहाई का प्रयास कर रही है। चालक दल में शामिल 25 लोगों में कोई भारतीय नहीं है। हूतियों ने लाल सागर से मालवाहक जहाज को इसलिए अगवा किया है क्योंकि वे पोत को इजराइल का मानते हैं। जहाज के मालिकों को रे कार कैरियर्स नामक कंपनी से जोड़ा गया है। इसकी स्थापना इजराइल के कारोबारी अब्राहम रामी उंगर ने की है। कंपनी के नाम से हूतियों को लगा कि ये जहाज इजराइल का है। हालांकि, जहाज का स्वामित्व एक ब्रिटिश कंपनी के पास है और इसे जापानी कंपनी संचालित करती है। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने लाल सागर में इजराइल से जुड़े जहाजों को निशाना बनाने का संकल्प लिया है। इस महीने की शुरुआत में हूती सैन्य प्रवक्ता ने कहा था कि जब तक इजराइली आक्रामकता बंद नहीं हो जाती, तब तक वे मिसाइलों और ड्रोन के साथ हमले जारी रखेंगे।

# अब उत्तर कोरिया करने जा रहा जासूसी सेटेलाइट को लॉन्च ; औपचारिक सूचना जारी की

**प्योंगयांग ।**
**दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया के बीच की खींचतान जगजाहिर है। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन अपने मिसाइल परीक्षणों के लिए जाने जाते हैं। वहीं एक बार फिर उन्होंने पूरी दुनिया को चौंकाया है। दरअसल, उत्तर कोरिया ने उपग्रह प्रक्षेपण की औपचारिक सूचना जारी की है। जिसके बाद से तनाव और बढ़ गया है। उत्तर कोरिया ने यह सूचना बुधवार को ही जारी कर दी थी। गौरतलब है कि उसका यह कदम दक्षिण कोरिया की चेतावनियों और प्योंगयांग पर बैलिस्टिक मिसाइल प्रौद्योगिकी का उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाने वाले कई संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों के बावजूद उठाया है।**

### पिछले दो प्रयास रहे थे विफल

उत्तर कोरिया के पहले जासूसी उपग्रह को कक्षा में स्थापित करने के पिछले दो प्रयास विफल रहे, और अगस्त में आखिरी प्रयास के बाद, उत्तर कोरिया के वैज्ञानिकों ने अक्टूबर में फिर से प्रयास करने का वादा किया था।

सितंबर में उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन की दुर्लभ विदेश यात्रा और रूस के सबसे आधुनिक अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र का दौरा करने के बाद यह प्रक्षेपण पहला होगा, जहां राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्योंगयांग को उपग्रह बनाने में मदद करने का वादा किया था।

उत्तर कोरिया का नोटिस जापान और दक्षिण कोरिया को अमेरिका द्वारा सैकड़ों मिसाइलों की संभावित बिक्री की निंदा के बाद आया है, जिसमें उसने इसे एक खतरनाक कृत्य बताया जो क्षेत्र में तनाव बढ़ाता है और हथियारों की एक नई होड़ लाता है।

### क्या है उत्तर कोरिया की योजना

उपग्रह प्रक्षेपण के उत्तर कोरिया के नोटिस के बाद, जापानी प्रधान मंत्री के कार्यालय ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि देश अमेरिका, दक्षिण कोरिया और अन्य लोगों के साथ मिलकर उत्तर कोरिया से दृढ़ता से आग्रह करेगा कि वह इसके साथ आगे न बढ़े।

प्योंगयांग एक सैन्य जासूसी उपग्रह को कक्षा में स्थापित करने की मांग कर रहा है, उसका कहना है कि वह अमेरिकी और दक्षिण कोरियाई सैनिकों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए उपग्रहों के एक बेड़े की योजना बना रहा है।

### पहले भी किया था उपग्रह प्रक्षेपित

उत्तर कोरिया ने 31 मई को एक उपग्रह प्रक्षेपित किया जो समुद्र में गिर गया। बताया कि इंजन और ईंधन प्रणाली में अस्थिरता के कारण नया चोलिमा-1 लॉन्चर विफल हो गया। देश ने 24 अगस्त को मिशन को पूरा करने की कोशिश की, लेकिन रॉकेट बूस्टर के तीसरे चरण में समस्या आने के बाद यह फिर से विफल हो गया।

अमेरिका और उसके सहयोगियों ने उत्तर कोरिया के उपग्रह प्रणालियों के परीक्षणों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों का स्पष्ट उल्लंघन बताया है, जो उत्तर कोरिया के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों पर लागू प्रौद्योगिकी के किसी भी विकास पर रोक लगाता है।

# यूएन में फिर उठा इजराइल-हमास संघर्ष का मुद्दा, भारत ने मानवीय आधार पर युद्ध विराम के प्रयासों को सराहा

**संयुक्त राष्ट्र/जिनेवा ।**
इजराइल और हमास के बीच पिछले कई दिनों से युद्ध जारी है, जिसमें अब तक 12 हजार से अधिक लोगों की मौत हो गई। इस बीच, भारत ने मानवीय आधार पर युद्ध विराम के प्रयासों को सराहा। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय समुदाय के उन प्रयासों की भी सराहना की है जिनका उद्देश्य तनाव कम करना और फलस्तीन के लोगों को तत्काल मानवीय सहायता प्रदान करना है।

### भारत का संदेश स्पष्ट

गाजा पट्टी में मानवीय स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र महासभा में पूर्ण सत्र की अनौपचारिक बैठक में संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने जोर देकर कहा कि भारत का संदेश स्पष्ट और सुसंगत रहा है।उन्होंने कहा, भारत अंतरराष्ट्रीय समुदाय के उन सभी प्रयासों का स्वागत करता है, जो संघर्ष को कम करने की दिशा में प्रयास करते हैं और फलस्तीनियों को तत्काल मानवीय सहायता प्रदान करने में सक्षम बनाते हैं।

### तनाव बढ़ने से रोका जाए

उन्होंने आगे कहा, हम आतंकवाद के सभी स्वरूपों का दृढ़ता से विरोध करते हैं। स्पष्ट रूप से हिंसा के खिलाफ हैं और अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन करने के पक्ष में हैं। साथ ही यह सुनिश्चित करते हैं कि आगे और तनाव बढ़ने से रोका जाए, मानवीय सहायता जारी रहे, सभी बंधकों को बिना शर्त रिहा किया जाए। इसके अलावा, सभी पक्ष शांति एवं स्थिरता की जल्द बहाली की दिशा में काम करें। कंबोज ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि भारत मानवीय आधार पर युद्ध विराम के प्रयासों का भी स्वागत करता है। पिछले हफ्ते, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पूरे गाजा में तत्काल मानवीय आधार पर युद्ध विराम का आह्वान किया ताकि गाजा पट्टी में मदद पहुंचाई जा सके। इसके लिए पंद्रह सदस्यीय परिषद ने पिछले बुधवार को एक प्रस्ताव पारित किया था, जिसमें हमास और अन्य समूहों, विशेष रूप से बच्चों द्वारा बंधक बनाए गए सभी लोगों की तत्काल और बिना शर्त रिहाई के साथ-साथ तत्काल मानवीय पहुंच सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया था। माल्टा द्वारा तैयार किए गए प्रस्ताव के पक्ष में 12 वोट पड़े। इस प्रस्ताव के विरोध में कोई नहीं था।

# इमरान ने मेरी शादीशुदा जिंदगी बर्बाद कर दी, बुशरा बीबी के पूर्व पति ने किया चौंकाने वाला खुलासा

**इस्लामाबाद ।**
इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी के पूर्व पति खावर फरीद मानेका ने चौंकाने वाला खुलासा किया है। दरअसल खावर फरीद मानेका ने इमरान खान के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए हैं और पीटीआई चीफ पर उनकी शादीशुदा जिंदगी बर्बाद करने का आरोप लगाया है। मानेका ने ये भी कहा कि इमरान खान ने बुशरा बीबी से शादी के लिए उनकी तलाक की प्रक्रिया को भी जल्दी कराया। मानेका ने एक पाकिस्तानी मीडिया चैनल से बातचीत में बताया कि पिंकी (बुशरा बीबी) ने तलाक से छह महीने पहले ही उनका घर छोड़ दिया था और अपने पिता के घर रहने लगी थीं। मानेका ने कहा कि हमारी शादी 28 साल तक चली। हमारी शादीशुदा जिंदगी काफी खुशहाल थी लेकिन इमरान ने पीर-मुरीदी की आड़ में मेरी शादीशुदा जिंदगी को बर्बाद कर दिया। मानेका ने बताया कि इमरान मेरी इजाजत के बिना भी मेरे घर आते थे। वह इमरान के उनके घर आने और पत्नी से मुलाकात से खुश नहीं थे। मानेका ने एक घटना को याद करते हुए बताया कि एक बार उन्होंने अपने घर के नौकरी की मदद से इमरान खान को घर से बाहर निकाल दिया था। मानेका का आरोप है कि उनके बुशरा बीबी से तलाक के डेढ़ महीने बात ही इमरान ने बुशरा बीबी से निकाह कर लिया था।

# हमास के नरसंहार का इजराइल ने जारी किया वीडियो, लोगों को बेरहमी से गोलियां मारते दिखे बंदूकधारी

**तेल अवीव ।**
**इजराइल ने हमास के आतंकियों द्वारा बीती 7 अक्तूबर को किए गए नरसंहार का एक और वीडियो साझा किया है। यह फुटेज सिक्योरिटी कैमरे में कैद हुआ, जिसमें बंदूकधारी बेरहमी से लोगों को मारते दिख रहे हैं। वीडियो में दिख रहा है कि हमास के आतंकी किस तरह से लोगों का पीछा कर उन्हें नजदीक से गोली मार रहे हैं।**

### अच्छाई और बुराई के बीच लड़ाई

बता दें कि हमास के हमले के जवाब में इजराइल गाजा पट्टी पर हमास के ठिकानों पर बमबारी कर रहा है, जिसमें हजारों लोग मारे जा चुके हैं। इसे लेकर इजराइल की दुनियाभर में आलोचना हो रही है। ऐसे में इजराइल की सरकार ने भी हमास के आतंकियों के हमले की वीडियो जारी की है ताकि जनमत को अपने पक्ष में मोड़ा जाए। इजराइल के विदेश मंत्रालय से जुड़े एक हैंडल से सोशल मीडिया पर यह वीडियो शेयर किया गया है। इस वीडियो के कैप्शन में लिखा गया है यह लड़ाई अच्छाई और बुराई के बीच है।

### किबुत्ज अलुमिम का बताया जा रहा वीडियो

वीडियो में दिख रहा है म्यूजिक फेस्टिवल के दौरान लोग हमास के आतंकियों से जान बचाकर भाग रहे हैं। वीडियो के अंत में दिख रहा है कि हमास के आतंकी एक महिला का पीछा करते हैं और उसे नजदीक से गोलियां मार देते हैं। जिससे महिला वहीं गिर पड़ती है। वीडियो में आवाज नहीं है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि यह वीडियो फुटेज किबुत्ज अलुमिम की है। बता दें कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गाजा में सीजफायर की मांग तेज हो रही है, जिसके चलते इजराइल पर दबाव बढ़ रहा है।

गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय का दावा है कि इजराइली हमले में अब तक गाजा पट्टी में 13,300 लोग मारे गए हैं, इनमें 5600 बच्चे शामिल हैं। वहीं हमास के 7 अक्तूबर के हमले में इजराइल में 1400 लोगों की मौत हुई थी और 240 लोगों को बंधक बनाया गया था। पश्चिमी देश इजराइल का समर्थन कर रहे हैं लेकिन गाजा में मृतकों का आंकड़ा जिस तेजी से बढ़ रहा, उसके बाद इजराइल पर भी सीजफायर का दबाव बढ़ता जा रहा है।

## पन्नूं के सिखों को उड़ान न भरने की धमकी देने पर हंगामा

# एसएफजे को नो फ्लाई लिस्ट में शामिल करने की मांग

**वाशिंगटन ।**
अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के एक पैनल ने आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नूं और उसके प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) को नो फ्लाई लिस्ट में शामिल करने की मांग की है। दरअसल, भारत की राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने पन्नूं के खिलाफ भारत में परिवहन क्षेत्र को लक्षित और बाधित करने के कथित प्रयास के लिए मामला दर्ज किया है। पन्नूं ने एक वीडियो जारी कर सिखों को जान का खतरा बताते हुए 19 नवंबर और उसके बाद एयर इंडिया से उड़ान न भरने की सलाह दी है।

**अलगाववादी सिख नेता के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें** – भारतीय-अमेरिकियों और भारतीय-कनाडाई लोगों के एक समूह फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज (एफआईआईडीएस) ने कनाडा के अंदर आतंक और नफरत फैलाने को लेकर पैनल चर्चा के प्रतिभागियों ने जोर देकर कहा कि अब समय आ गया है कि सरकारें एसएफजे के अलगाववादी सिख नेता के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें।

**भारत विरोधी गतिविधियों एसएफजे पर प्रतिबंध** – एसएफजे अमेरिका स्थित एक संगठन है, जिसे भारत विरोधी गतिविधियों के लिए गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत भारत में प्रतिबंधित किया है। इस समूह पर साल 2019 में प्रतिबंध लगाया गया था। वहीं, एक जुलाई 2020 में पन्नुन को अलगाववाद को बढ़ावा देने और पंजाबी सिख युवाओं को हथियार उठाने के लिए कथित तौर पर प्रोत्साहित करने के लिए यूएपीए के तहत व्यक्तिगत आतंकवादी भी घोषित किया गया था।

**अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को गलत तरीके से पेश किया** – एफआईआईडीएस खांडेराव कंद

ने कहा, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने आतंकवाद की स्वतंत्रता के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को गलत तरीके से पेश किया है। साथ ही निज्जर की हत्या के लिए भारत के खिलाफ उनके आरोपों ने कनाडा में भारत विरोधी और हिंदू विरोधी अपराधों को भड़काया है। ऐसा लगता है कि उनकी नीतियां चरमपंथ के खतरों की अनदेखी कर रही हैं जो कनाडा पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।

**नो फ्लाई लिस्ट में क्यों नहीं रखा** – कंद ने आगे कहा, पैनल के सदस्यों ने सवाल किया कि गुरपतवंत पन्नूं और एसएफजे के सदस्यों को एयर इंडिया से यात्रा करने की धमकी देने के लिए नो फ्लाई लिस्ट में क्यों नहीं रखा गया है

**नफरत के ऐतिहासिक बीज बोए** – इसके अलावा, कैलिफोर्निया स्थित सुखी चहल ने कहा कि अंग्रेजों और कांग्रेस पार्टी दोनों ने हिंदुओं और सिखों के बीच नफरत के ऐतिहासिक बीज बोए थे। सिख फॉर जस्टिस ने सिखों का प्रतिनिधित्व नहीं किया बल्कि हिंदुओं तथा सिखों के खिलाफ नफरत का प्रचार किया। चहल ने सामूहिक जिम्मेदारी से इस विमर्श को खत्म करने, मूक सिख समुदाय के साथ जुड़ने और यह स्वीकार करने का आग्रह किया कि कई सिख नकली खालिस्तानियों के प्रभाव का शिकार हुए हैं, जिन्हें पश्चिमी राज्यों द्वारा अच्छी तरह से वित्त पोषित किया जाता है।

**उदारवादी आवाजों को दबा रहे** – कनाडा की रुचि वालिया ने हिंदुओं और सिखों की एकता के महत्व का उल्लेख किया। वहीं, कैनेडियन हिंदूज फॉर हार्मनी के प्रवक्ता विजय जैन ने जोर देकर कहा कि कट्टरपंथी उदारवादी आवाजों को दबा रहे हैं और शांति व सद्भाव के लिए खतरा हैं। उन्होंने सामुदायिक और राजनीतिक स्तर पर जुड़ाव के महत्व पर जोर दिया।

**45 साल पहले कनाडा** – एफआईआईडीएस के विश्लेषक मोहन सोंटी ने कहा कि कनाडा में भारतीयों को मौजूदा खतरा, विशेष रूप से खालिस्तानी आतंकवादियों से करीब 45 साल पहले कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री और वर्तमान प्रधानमंत्री के पिता पियरे ट्रूडो के साथ उत्पन्न हुआ था।

# चुनाव के समय कांग्रेस को यज्ञ व गायत्री मंत्र आए याद : डॉ. संबित पात्रा

**जयपुर ( हिंस )।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. संबित पात्रा ने राज्य में महिला उत्पीड़न बढ़ती दुष्कर्म, पेपर लीक और तुष्टिकरण की घटनाओं को लेकर कांग्रेस सरकार पर कड़ा प्रहार किया। सोमवार को डॉ. पात्रा ने कहा कि जो लोग राम को काल्पनिक बताते हैं, राम जन्म का प्रमाण पत्र मांगते हैं उन्हें बताना चाहूंगा कि आगामी 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी और हिंदू आस्था का सबसे बड़ा पर्व मनाया जाएगा। भाजपा राम और काम में भेद नहीं करती, क्योंकि राम भी पिछड़ों वंचितों के हितैषी थे और भाजपा भी अत्योंदय की धारणा से समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के उत्थान के लिए काम कर रही है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. संबित पात्रा ने कहा कि राजस्थान चुनाव में नारी सुरक्षा और स्वाभिमान गंभीर मुद्दा है, क्योंकि वीरों और

बलिदानियों वाला राजस्थान आज देश में दुष्कर्म के मामलों में नंबर एक पर आ गया। प्रदेश में पिछले पांच सालों में नारी उत्पीड़न के 2 लाख केस दर्ज हुए हैं। वहीं दुष्कर्म के 35 हजार से ज्यादा मामले दर्ज हुए हैं, जिसमें से 15 हजार दुष्कर्म के मामले नाबालिगों के साथ हुए हैं। रविवार को रात नागौर के लाडनू में एक 15 वर्षीय नाबालिग के साथ गैंगरेप हुआ, लेकिन आरोपियों के खिलाफ एफआईआर तक दर्ज नहीं हुई। इससे भी ज्यादा शर्मनाक तो यह है कि पुलिस ने आरोपियों की जो कार पकड़ी है, उसके पीछे कांग्रेस उम्मीदवार का स्टीकर लगा है। प्रदेश में बेटियों को भट्टियों में डाला जाता है, कहीं तेजाब डालकर जलाया जाता है। राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. संबित पात्रा ने कहा कि भारतवर्ष में राजस्थान की पहचान पहले पर्यटन और शौर्य के लिए होती थी, लेकिन पिछले पांच सालों में युवाओं के साथ नौकरी के नाम पर छलावा किया गया और हर भर्ती का पेपर लीक हुआ। प्रदेश में 19 बार पेपर लीक हुआ। इस मामले का आरोपी बोर्ड का चेयरमैन अभी भी फरार है। कांग्रेस ने 70 लाख युवाओं का भविष्य चौपट कर दिया। भाजपा ने अपने मैनिफेस्टो में युवाओं से वादा किया है कि सत्ता में आते ही पेपर लीक के आरोपियों के खिलाफ एसआईटी गठित करेगी और आरोपियों को सलाखों के पीछे भेजने का काम करेगी। वहीं महिला सुरक्षा को लेकर यूपी की तरह एंटी रोमियो स्कवॉयड का गठन करेंगे। राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. पात्रा ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा हिंदुओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया है और तुष्टिकरण की नीति अपनाई है। आज जब चुनाव हैं तो प्रियंका गांधी यज्ञ करती हैं, ये वही लोग हैं जो राम के अस्तित्व को मानने से भी मना करते थे। राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. पात्रा ने कहा कि हिन्दुस्तान ने बौद्ध की धरती से मौन रहकर युद्ध लड़ा है और 500 वर्षों बाद रामलला स्थापना का समय आया है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में असंभव को संभव करके दिखाया है। कांग्रेस के लोग राम के नाम पर हिंदुओं की अग्निपरीक्षा लेते हैं जबकि प्रियंका गांधी को ये तक नहीं पता कि प्रभु श्री राम को 13 वर्ष का नहीं 14 वर्ष का वनवास हुआ था।

## स्पोर्टस विवि पटियाला में नौ पदों पर होगी भर्ती

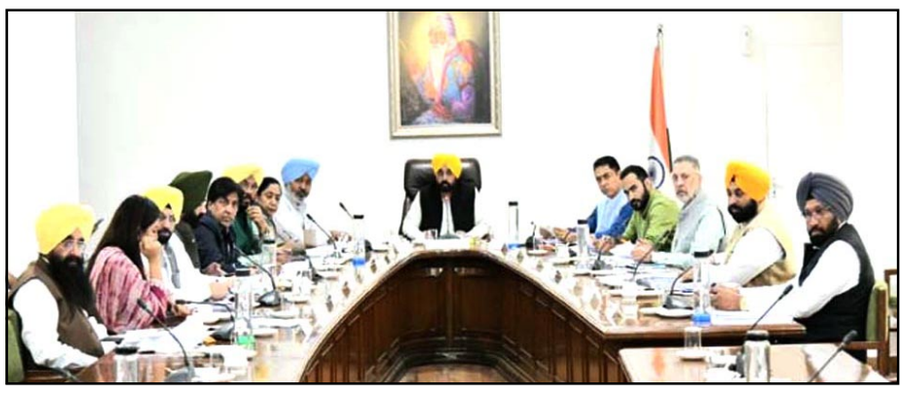

**चंडीगढ ( हिंस )।** पंजाब सरकार ने पटियाला स्थित महाराजा भूपिंदर सिंह स्पोर्टस यूनिवर्सिटी में सीधी भर्ती के द्वारा तकनीकी काडर के नौ पदों का सृजन करने और भरने की भी मंजूरी दे दी। सोमवार को मुख्यमंत्री भगवंत मान की अध्क्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसला लिया गया। जिन पदों को भरा जाएगा, उन पदों में एक पद सहायक मैनेजर, प्रोग्रामर के दो पद, दो पद तकनीकी सहायक के और क्लर्क- कम-डाटा एंट्री ऑपरेटर के होंगे। महाराजा भूपिंदर सिंह स्पोर्टस यूनिवर्सिटी की स्थापना खेल के क्षेत्र के पाठ्यक्रमों, शिक्षा और प्रशिक्षण के द्वारा राज्य में खेल का स्तर ऊंचा उठाने के मकसद के साथ हुई थी और इन पदों से यूनिवर्सिटी का कामकाज सुचारू तरीके से चलाने और विद्यार्थियों को रोजाना के कामकाज में सुविधा होगी। मंत्रिमंडल की बैठक में पंजाब राज्य में नहरों और ड्रेनेज के कंट्रोल और प्रबंधन के लिए पंजाब केनाल और ड्रेनेज बिल, 2023 को भी मंजूरी दे दी। इसका मुख्य मंतव्य किसानों और जमीन मालिकों को बिना किसी रुकावट के सिंचाई के मंतव्य के लिए नहरी पानी देने के लिए नहरों, ड्रेनों और कुदरती जल स्रोतों की देखभाल, मुरम्मत और समय पर सफाई यकीनी बनाना है। इसके इलावा यह बिल पानी का प्रयोग करने वालों और पानी की अनावश्यक बर्बादी के विरुद्ध अन्य नियमित पाबंदियों की शिकायतों के निपटारे के लिए निष्पक्ष और पारदर्शी ढांचा गठित करना यकीनी बनाएगा।

## गृह मंत्री अनिल विज सख्त, आईओ हटाकर डीएसपी को जांच सौंपी

**यमुनानगर ( हिंस )।** हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने यमुनानगर में दहेज उत्पीड़न मामले में विवाहिता द्वारा सात माह पहले केस दर्ज कराने के बावजूद कार्रवाई न होने पर कड़ा संज्ञान लिया। उन्होंने जिला पुलिस अधीक्षक यमुनानगर को फोन लगाते हुए जांच अधिकारी को हटाकर जिला पुलिस उप अधीक्षक से जांच कराने के निर्देश दिए। साथ ही कार्रवाई में विलंब होने की दस दिनों में रिपोर्ट सौंपने के निर्देश भी दिए। गृह मंत्री सोमवार को अंबाला में अपने आवास पर प्रदेश भर से आए सैकड़ों लोगों की समस्याओं को सुन रहे थे। प्रतिदिन की ही तरह उनके आवास पर फरियादियों की लंबी-लंबी कतारें लगती रही। यमुनानगर से पहुंची विवाहिता ने अपनी शिकायत में बताया कि अप्रैल 2023 में उसके द्वारा यमुनानगर में दहेज उत्पीड़न मामले का केस दर्ज कराया गया था। जबकि शिकायत इससे कई माह पहले दी थी। उसका आरोप था कि पुलिस की ढुलमुल कार्रवाई की वजह से उसका पति विदेश के लिए फरार हो चुका है। मगर पुलिस ने अप्रैल से अब तक ठोस कार्रवाई नहीं की। उन्होंने जिला पुलिस अधीक्षक यमुनानगर को फोन लगाते हुए नाराजगी जताई और जांच अधिकारी को हटाकर जिला पुलिस उप अधीक्षक को जांच के निर्देश दिए।

## इनेलो, कांग्रेस छोड़कर 40 युवाओं ने बीजेपी का दामन थामा

**यमुनानगर ( हिंस )।** भाजपा सरकार सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के साथ हर क्षेत्र में समान रूप से विकास करवा रही है। भाजपा की इन्हीं नीतियां और विकास को देखकर लोग दूसरी पार्टियां छोड़ भाजपा में शामिल हो रहे हैं। यह शब्द मेयर मदन चौहान ने सोमवार को मेयर हाउस में इनेलो व कांग्रेस छोड़कर करीब 40 युवाओं के भाजपा में शामिल होने पर कहें। इस दौरान उन्होंने भाजपा का दामन थामने वाले युवाओं को फूल मालाएं पहनाकर स्वागत किया। इससे पूर्व भाजपा युवा मोर्चा के सचिव संदीप गढ़ी के नेतृत्व में किशनपुरा माजरा व दयालगढ़ गांव के आशीष, अभिषेक, लवली, अभिषेक नागरा, शेखू, विकास, अजय नाडे, मनीष, रमन, राहुल, हेमंत, भानू कत्याल, मांगा समेत 35-40 युवाओं ने इनेलो व कांग्रेस पार्टी छोड़कर भाजपा का दामन थामा। मेयर चौहान ने कहा कि भाजपा हर वर्ग को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। भाजपा में हर महिला, बुजुर्ग, जवान व बच्चों को सम्मान दिया जाता है। चाहे वह किसी भी वर्ग का हो। यहीं कारण है कि आज दूसरी पार्टियां छोड़कर लोग भाजपा में शामिल हो रहे है। भाजपा नेता जंगशेर ने कहा कि भाजपा सरकार निजी हित की बजाय राष्ट्रहित को लेकर काम कर रही है। भाजपा में शामिल होने वाले युवाओं ने कहा कि नए परिवार में आने के बाद वे बेहद खुश हैं। यह पार्टी जनता की हितैषी है।

## पंजाब विधानसभा का पांचवा सत्र 28 नवंबर से

**चंडीगढ ( हिंस )।** पंजाब सरकार ने आगामी 28 नवंबर को विधानसभा का सत्र बुलाने का फैसला किया है। सोमवार को मुख्यमंत्री भगवंत मान की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह फैसला लिया गया। इससे पहले पंजाब सरकार ने अक्तूबर माह के दौरान सत्र बुलाया गया था, लेकिन राज्यपाल ने उसे असंवैधानिक करार दिए जाने के बाद दो दिवसीय सत्र को एक दिन में ही खत्म कर दिया गया। इसके बाद पंजाब सरकार राज्यपाल के फैसले के विरोध में सुप्रीम कोर्ट गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल की टिप्पणी को खारिज किए जाने के बाद पंजाब सरकार ने अब सोमवार को मंत्रिमंडल की बैठक बुलाई। मुख्यमंत्री भगवंत मान की अध्यक्षता में हुई बैठक में फैसला लिया गया कि 28 व 29 नवंबर को दो दिन के लिए सत्र का आयोजन किया जाएगा। 16वीं विधानसभा का यहा पांचवा सत्र होगा। सत्र की शुरुआत 28 नवंबर को दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि देने से होगी और इस दो दिवसीय सत्र के कामकाज का फैसला बिजनेस एडवाइजरी कमेटी जल्द ही जारी करेगी।

## कांग्रेस के पास भ्रष्टाचार और दंगे करवाने की गारंटी : केंद्रीय जलशक्ति मंत्री शेखावत

**बीकानेर ( हिंस )।** केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने सोमवार को नोखा से भाजपा प्रत्याशी बिहारी लाल विश्नोई के समर्थन में जनसभा की। उन्होंने इस दौरान कांग्रेस सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि गहलोत सरकार की एक ही गारंटी है भ्रष्टाचार, दंगे करवाना। इसलिए इस बार जनता को कांग्रेस की गारंटियों के भुलावे में नहीं आना है। उन्होंने एक वोट को सही जगह देने का महत्व समझाते हुए कहा कि देश के लोगों ने पहली बार 2014 और 19 में देशहित को ध्यान में रखकर वोट किया। देश में मोदी सरकार बनी और इस सरकार के आते ही देश की तकदीर और तस्वीर, दोनों बदली है। भारत के तिरंगे की ताकत बढ़ी है। मोदी जी के राज में गरीब के घर की तस्वीर बदली। महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा का ध्यान दिया गया। गरीब माताओं और बहनों के सिर पर पानी का घड़े का बोझ उतारने का काम किया। जल जीवन मिशन में आज साढे सोलह करोड़ परिवारों के घरों में पानी पहुंच चुका, लेकिन राजस्थान में मिशन के तहत काम नहीं हुआ। राजस्थान को तीस हजार करोड़ रुपए दिए गए। उसमें दस हजार रुपए खर्च हुए। शेष में घोटाला हुआ। उसकी जांच के लिए जब ईडी भेजी तो इनके पेट में दर्द हो गया। शेखावत ने कहा कि एक वोट आपने देशहित में दिया। देश ने दुश्मनों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक की। राजस्थान में आपने एक वोट गलत दे दिया था। इसका परिणाम आपने देखा। किस तरह के हालात राजस्थान में हो गए। राजस्थान में अराजकता की पराकाष्ठा हो गई।

## मोदी सरकार ने फायदे के लिए नौ साल में पूरे देश को कतारों में कर दिया खड़ा : प्रियंका गांधी

**अजमेर/भीलवाड़ा ( हिंस )।** कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि देशभक्ति के नाम पर बीते नौ सालों में केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने हर फायदे के लिए सभी को कतार में खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की नीति है कि अडानी, अंबानी जैसे उद्योगपतियों को देश की सारी संपत्ति सौंप देते हैं। वहीं, छोटे कारोबारियों के लिए क्या किया? उन्हें पहले नोटबंदी की कतारों में खड़ा किया, फिर कोरोना में कोई राहत नहीं दी। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने सोमवार को अजमेर के केकड़ी और भीलवाड़ा के जहाजपुर में कांग्रेस उम्मीदवारों के समर्थन में जनसभाओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार का काम होता है कि छोटे कारोबारियों को राहत देना, लेकिन कोई मदद नहीं की। फिर आप पर जीएसटी थोप दी। एक तो आप कमा नहीं पा रहे, ऊपर से महंगाई बढ़ती चली जा रही है। प्रियंका ने कहा कि त्योहार में जैसे हम घर की सफाई करते हैं। वैसे ही चुनाव के समय में भी सफाई जरूरी है। चुनाव के समय नेता धर्म की बात करते हैं। इनकी आदत बन गई है कि चुनाव आएगा, धर्म की बात करेंगे, वोट मिल जाएगा। काम करने की जरूरत ही नहीं है। प्रियंका ने कहा कि हाल ही में प्रधानमंत्री ने कांग्रेस के लिए कहा कि कांग्रेस के नेता एक-दूसरे को रन आउट करने में लगे हैं, लेकिन इनकी पार्टी तो खुद ही हिट विकेट है राजस्थान में। इनकी पार्टी पूरी तरह से बिखरी हुई है। मोदी कहते हैं मुझे वोट दो। क्या मोदी आपके मुख्यमंत्री बनेंगे? क्या मोदी प्रधानमंत्री पद छोड़ने वाले हैं? तो अपने नाम पर वोट क्यों मांग रहे हैं? उन्हें खुद ही समझ नहीं आ रहा है कि मुख्यमंत्री किसे बनाएंगे। सच्चाई ये है कि आज राजस्थान में भाजपा लगभग खत्म हो गई है। उन्होंने कहा कि हमने किसानों का कर्ज माफ किया है। भाजपा ने किसी प्रदेश में किसानों का क्या कर्ज माफ किया है? काले कानूनों के खिलाफ जब किसान देश में आंदोलन कर रहा था तब भाजपा के मंत्री का बेटा किसानों को जीप के नीचे कुचल रहा था। छत्तीसगढ़ में हमने गोबर खरीद सबसे पहले शुरू की। उन्होंने कहा कि द्र सरकार इतनी महंगाई बढ़ा रही है कि प्रदेश की सरकार को राहत के कैंप लगाने पड़ रहे हैं। यहां 500 रुपए में सिलेंडर मिल रहा है, केजी से पीजी तक महिलाओं के लिए नि:शुल्क शिक्षा, महिलाओं का रोडवेज में आधा किराया। जबकि मध्य प्रदेश में 18 साल से महिलाओं के लिए कुछ नहीं किया। उन्होंने कहा कि कभी हिंदू-मुसलमान, धर्म-जाति केवल यही बातें बीते 10 सालों से हो रही है। इन सब बातों से केवल आपका नुकसान हो रहा है। आपने कभी देखा है कि कभी किसी नेता का दंगे से नुकसान हो रहा है? नुकसान केवल आपका होता है। राजनीति होनी चाहिए, केवल आपके विकास के लिए। नेता का केवल धर्म होता है आपकी सेवा करना। ये ही सबसे बड़ा धर्म होता है।

## भव्य तरीके से मनाई गई वीरांगना झलकारी बाई की जयंती

**पलवल ( हिंस )।** मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में निरंतर समाज के संत महापुरुषों और वीर वीरांगनाओं की जयंतियां सरकारी स्तर पर मनाने की दिशा में शुरू की गई संत महापुरुष सम्मान एवं विचार प्रचार प्रसार योजना के तहत सोमवार जिला पलवल में रानी लक्ष्मी बाई की सेनापति रही झलकारी बाई की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने प्रदेश की जनता की ओर से झलकारी बाई को नमन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने समाज को ऐसी महान वीरांगना की कथा से प्रेरित करने के लिए घोषणा करते हुए कहा कि पलवल के आगरा चौक पर स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का नाम झलकारी बाई के नाम पर रखा जाएगा। इसके अलावा उन्होंने पलवल के मोहन नगर के वार्ड नंबर-4 में कोली समाज के एक भव्य भवन का निर्माण किए जाने की भी घोषणा की। इस भवन में झलकारी बाई की प्रतिमा भी स्थापित की जाएगी, जिससे भावी पीढ़ी को इनकी

गाथाओं से अवगत करवाया जा सकेगा। इस पर लगभग 3 करोड़ रुपए की राशि खर्च होगी। मनोहर लाल ने जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन बहुत ही गौरव का दिन है, जब वीरांगना झलकारी बाई की जयंती मनाई जा रही है, क्योंकि अधिकतर लोगों को इसकी जानकारी ही नहीं है। उन्होंने कहा कि सन् 1857 में स्वाधीनता संग्राम में हम सभी ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम तो सुना है, लेकिन वीरांगना झलकारी बाई के नाम को इतिहास में उतना अधिक नहीं जानते। उन्होंने कहा कि मैथिली शरण गुप्त ने अपनी कविता में झलकारी बाई जी का वर्णन किया है कि आकर रण में ललकारी थी, वह तो झांसी की झलकारी थी। गोरों से लड़ना सीखा गई, रानी बन जौहर दिखा गई, इतिहास में झलक रही वह भारत की ही नारी थी, आकर रण में ललकारी थी, वह तो झांसी की झलकारी थी। उन्होंने कहा कि हमारे समाज की महिलाएं, बेटियां झलकारी बाई से प्रेरणा लें यही हमारा लक्ष्य है। आज के युग में हमारी बेटियां अंतरिक्ष, खेल, डिफेंस सहित विभिन्न क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। इस अवसर पर केंद्रीय ऊर्जा एवं भारी उद्योग राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर, परिवहन मंत्री मूलचंद शर्मा, सहकारिता मंत्री डॉ. बनवारी लाल, राज्यसभा सांसद कृष्ण लाल पंवार, लोकसभा सांसद एवं हरियाणा भाजपा प्रदेशाध्यक्ष नायब सिंह सैनी, विधायक दीपक मंगला, जगदीश नय्यर, प्रवीन डागर, राजेश नागर, नयनपाल रावत, नरेंद्र गुप्ता, सीमा त्रिखा सहित विभिन्न जिलों से आए भारी संख्या में लोग मौजूद थे।

## नहीं होगा हरियाणा पुलिस के 272 जांच अधिकारियों का निलंबन

**चंडीगढ ( हिंस )।** हरियाणा के गृहमंत्री के निर्देश के बावजूद पुलिस विभाग के 272 जांच अधिकारियों का निलंबन अटक गया है। जिलों के पुलिस अधीक्षकों ने इस निलंबन को लेकर अपनी सहमति नहीं जताई है। जिसके आधार पर पुलिस महानिदेशक ने अपनी रिपोर्ट गृह सचिव को भेज दी है। अभी तक कुल 372 में से केवल 100 जांच अधिकारियों को ही निलंबित किया गया है। गृहमंत्री अनिल विज ने जब प्रदेश के सभी जिलों से लंबित केसों की जानकारी मंगवाई तो उन्हें पता चला कि 3,229 केसों की जांच एक साल से अधिक समय से पेंडिंग है। गृहमंत्री के बार-बार कहने के बावजूद जांच अधिकारी गंभीर नहीं हुए। जिसके चलते 23 अक्तूबर को गृहमंत्री अनिल विज ने पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर को एक पत्र लिखकर 372 जांच अधिकारियों को निलंबित करने की सिफारिश कर डाली। इन जांच अधिकारियों को निलंबित करने के निर्देश से पहले पुलिस महानिदेशक के जरिए इनसे स्पष्टीकरण भी मांगा गया था, लेकिन संबंधित जांच अधिकारियों का जवाब संतोषजनक नहीं था। जिसके बाद गृहमंत्री ने यह कार्रवाई की। गृहमंत्री के निर्देश के करीब एक सप्ताह के भीतर सौ जांच अधिकारियों को तो निलंबित कर दिया गया, जबकि अन्य अधिकारियों के संबंध में रिपोर्ट के लिए समय मांग लिया। इसके बाद पुलिस महानिदेशक ने सभी 272 जांच अधिकारियों के संबंध में संबंधित जिला पुलिस अधीक्षकों के पास से रिपोर्ट मांगी। यह रिपोर्ट आने के बाद डीजीपी ने गृह सचिव को रिपोर्ट भेज दी है। रिपोर्ट में जांच अधिकारी के पेडिंग केसों के लंबित रहने के कारणों का ब्यौरा दिया गया है। गृह सचिव के स्तर पर रिपोर्ट की समीक्षा की जा चुकी है। जिलों के ज्यादातर एसपी की ओर से अब और जांच अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं करने की बात कही गई है। तर्क दिया गया है कि यदि और आईओ के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई होती है तो जिलों में जांच अधिकारियों की कमी हो जाएगी।

## पुलिस महिलाओं को पहले ही कर चुकी है गिरफ्तार

**कैथल ( हिंस )।** अपने ही गांव के एक व्यक्ति को महिलाओं के जाल में फंसा कर उसकी वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने वाले को पुलिस ने सोमवार को गिरफ्तार कर लिया। अदालत ने उसे न्याय की हिरासत में भेजा है। थाना शहर में दर्ज करवाए गए मामले के अनुसार गांव धनौरी निवासी इंदर सिंह ने बताया कि 12 नवंबर को उसके पास एक महिला कि काल आई थी। जिसे बातचीत के पास उसे अर्जुन नगर कैथल में अपने घर बुलाया था। मैं 15 नवंबर की शाम को उसे महिला के घर गया और वहां महिला ने उसके साथ जबरदस्ती नाजायज संबंध बनाए। जब वह वहां से लौटने लगा तो रास्ते में उसे महिला का फोन आया कि उसने उसके साथ गलत काम किया है। महिला ने कहा कि वह मामला दर्ज कराएगी नहीं तो उसे 6 लाख रुपए दो। इस तरह मामला 3 लाख रुपए में निपट गया। रविवार को थाना शहर पुलिस ने कुलदीप से रुपए लेते हुए महिलाओं को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। इस खेल का मास्टरमाइंड उसी के गांव का इंदर सिंह था। जिसे थाना शहर के एएसआई बलवान सिंह ने सोमवार को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ब्लैकमेलिंग के खेल में शामिल दो महिलाओं व एक व्यक्ति को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

## नहीं मिला सरकारी घर, विरोध करने पर जल से भी हुए वंचित

**हुगली ( हिंस )।** हुगली जिले के डानकुनी नगरपालिका के 16 नंबर वार्ड के रायपाड़ा रेल बस्ती में रहने वाले सैकड़ों लोग लंबे समय से पेयजल की परिसेवा से वंचित हैं। आरोप है कि लोग वर्षों से इलाके में रह रहे हैं। लेकिन उनको पेयजल की सुविधा ठीक से नहीं मिल पा रही है। घनी आबादी वाले इस इलाके में एक ही नल है जिस कारण स्थानीय लोगों को रोज जल की समस्या से जूझना पड़ता है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि सरकारी आवास देने के नाम पर उनसे वोट और पैसा लिया गया। लेकिन सात वर्ष बीतने के बाद अब तक कुछ नहीं हुआ। हम लोगों ने सरकारी घर की मांग को लेकर नगरपालिका के सामने विरोध प्रदर्शन किया था। इसलिए हमें पेयजल से भी वंचित किया जा रहा है। स्थानीय लोगों ने सवाल किया कि यदि तृणमूल समर्थक के घर के सामने पानी की पाइपलाइन जा सकती है तो आम आदमी के घर के सामने क्यों नहीं।

## *लकड़कोट* की जर्जरता पर इतिहासविदों ने जताई चिंता

**उदयपुर ( हिंस )।** विश्व विरासत सप्ताह के तहत इतिहास संकलन समिति, उदयपुर की ओर से आयोजित विरासत दर्शन अभियान के क्रम में शुक्रवार को इतिहासविदों के दल ने उदयपुर के समीपवर्ती भल्लों का गुड़ा-लकड़वास गांव का दौरा किया जहां *लकड़कोट* की जर्जरता पर सभी ने चिंता जताई। भारतीय इतिहास संकलन योजना, जिला उदयपुर की ओर से आए इतिहासविदों ने निर्णय किया है कि समिति की ओर से इस विरासत के संरक्षण के मद्देनजर जिला कलेक्टर को इसका अवलोकन कराने के लिए पत्र लिखकर आग्रह किया जाएगा। समिति के जिलाध्यक्ष डॉ. जीवन सिंह खरकवाल के नेतृत्व में इतिहासविदों व समिति के पदाधिकारियों का दल सोमवार सुबह भल्लों का गुड़ा गांव पहुंचा। यहां पर प्राचीन शहरकोट के दरवाजे की जर्जर हालत देख सभी ने इसके संरक्षक की आवश्यकता जताई। सभी ने कहा कि यह मेवाड़ के इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। पहाड़ी पर स्थित इस प्राचीन जर्जर दरवाजे के नीचे लोगों ने खुदाई कर पत्थर निकालने शुरू कर दिए हैं। यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसके साथ कुछ वर्षों पूर्व तक नजर आने वाली शहरकोट की तरह यह दरवाजा भी ध्वस्त होकर गायब हो जाएगा। इस दौरान क्षेत्रवासी

उदयलाल डांगी ने दल को बताया कि करीब 15 से 20 वर्ष पूर्व तक यहां की शहरकोट को उन्होंने देखा है। उनके ही बड़े भाई के प्रयासों से यह *लकड़कोट* का दरवाजा बच सका है। चूंकि यह शहरकोर्ट लकड़वास गांव में है इसलिए इसका नाम लकड़कोट पड़ गया। समिति के प्रांत संगठन मंत्री छगनलाल बोहरा ने उनसे बातचीत कर और भी जानकारी ली। समिति अध्यक्ष डॉ. खरकवाल ने बताया कि डबोक स्थित धूणी माता मंदिर में लगे एक अभिलेख में लकड़कोट शब्द का उल्लेख आया है। समिति के प्रांत महामंत्री डॉ. विवेक भटनागर ने बताया कि इसका जिक्र महाराणा के बहिड़ों में भी आता है। दल में समिति के जिला मंत्री चैनशंकर दशोरा, सदस्य मंगल कुमार जैन आदि शामिल थे।

## पंजाब में बंद होगा समाज कल्याण बोर्ड

**चंडीगढ ( हिंस )।** पंजाब सरकार ने पंजाब राज्य समाज कल्याण बोर्ड को बंद करने और इसके कर्मचारियों को विभाग में विलय करने का फैसला लिया है। सोमवार को मुख्यमंत्री भगवंत मान की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसला लिया गया। सरकार ने बोर्ड के बंद होने के बाद मुख्यालय पर तैनात कर्मचारियों, पेंशनरों, पांच आईसीडीएस ब्लॉकों सहित स्टाफ का सामाजिक सुरक्षा, महिला एवं बाल विकास विभाग में विलय किया जाएगा। मंत्रिमंडल ने राज्य की जेल में नजरबंद एक कैदी की उम्र कैद में छूट का केस भेजने की मंजूरी दे दी, जबकि चार अन्य ऐसे केस रद्द कर दिए गए। भारतीय संविधान की धारा 163 के अंतर्गत कैबिनेट की मंजूरी के बाद यह विशेष छूट व अग्रिम रिहाई केस भारतीय संविधान की धारा 161 के अधीन विचार के लिए पंजाब के राज्यपाल को भेजे जाएंगे।

# ईपीएफओ से सितंबर महीने में 17.2 लाख सदस्य जुड़े, आंकड़े जारी किए गए

**नई दिल्ली ।**
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने सितंबर महीने में 17.21 लाख सदस्य जोड़े हैं। पेरोल डेटा के अनुसार पिछले महीने की तुलना में ईपीएफओ से जुड़ने वाले सदस्यों की संख्या में 21,475 की वृद्धि हुई। सालाना आधार में पेरोल डेटा में 38,262 सदस्यों का इजाफा हुआ है।

आंकड़ों से संकेत मिलता है कि सितंबर 2023 के दौरान लगभग 8.92 लाख नए सदस्यों ने पंजीकरण कराया है। इनमें 18-25 वर्ष के आयु वर्ग के सदस्यों की हिस्सेदारी उक्त महीने के दौरान जोड़े गए कुल नए सदस्यों का 58.92 प्रतिशत है। श्रम और रोजगार मंत्रालय की ओर से मंगलवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार आंकड़े दर्शाते हैं कि देश के संगठित क्षेत्र के कार्यबल में शामिल होने वाले अधिकांश सदस्य युवा हैं, जिनमें ज्यादातर पहली बार नौकरी कर रहे हैं।

इसके अलावा, पेरोल डेटा से पता चलता है कि लगभग 11.93 लाख सदस्य बाहर निकलने के बाद ईपीएफओ में फिर से शामिल हो गए। इसका मतलब है कि इन सदस्यों ने अपनी नौकरी बदल दी और ईपीएफओ के दायरे में आने वाले प्रतिष्ठानों में फिर से शामिल हो गए। इन सदस्यों ने अंतिम निपटान के लिए आवेदन करने के बजाय अपने संचय को स्थानांतरित करने का विकल्प चुना, इस प्रकार उन्होंने अपनी सामाजिक सुरक्षा का विस्तार करने का विकल्प चुना।

पिछले महीने की तुलना में, सितंबर के महीने में 3.64 लाख निकासी के साथ निकासी की संख्या में 12.17 प्रतिशत की कमी आई है। आंकड़ों में यह भी कहा गया है कि ईपीएफओ से बाहर निकलने वाले सदस्यों की संख्या में जून 2023 से कमी आ रही है। पेरोल डेटा के लिंग-वार विश्लेषण से पता चलता है कि महीने के दौरान जोड़े गए कुल 8.92 लाख नए सदस्यों में से लगभग 2.26 लाख नई महिला सदस्य हैं, जो पहली बार ईपीएफओ में शामिल हुई हैं। इसके अलावा, महीने के दौरान शुद्ध महिला सदस्यों की संख्या लगभग 3.30 लाख थी। पेरोल डेटा के राज्यवार विश्लेषण से पता चलता है कि महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात और हरियाणा में शुद्ध सदस्य वृद्धि सबसे अधिक है।

## न्यूज ब्रीफ

### ओपनएआई के 700 कर्मियों की चेतावनी इस्तीफा दे बोर्ड, वरना हम चले माइक्रोसॉफ्ट

**नई दिल्ली ।** ओपनएआई में जारी उथल पुथल में नया मोड़ आया, जब कंपनी के 770 में से करीब 700 कर्मचारियों ने इस्तीफे की धमकी दे दी। उन्होंने बोर्ड को कंपनी चलाने के लिए अयोग्य करार दिया। उसे इस्तीफा देने, सैम ऑल्टमैन व ग्रैग ब्रोकमैन को वापस लाने और नया बोर्ड बनाकर दो स्वतंत्र निदेशकों को नेतृत्व देने की मांग की है। ऐसा न करने पर इन सभी कर्मचारियों ने इस्तीफा देकर माइक्रोसॉफ्ट की ही घोषित नई एडवांस एआई लैब में काम पर चले जाने की चेतावनी दी। बताया, माइक्रोसॉफ्ट ने उन सभी को अपने यहां आकर काम करने का ऑफर दे दिया है। कर्मचारियों के मांग पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में शुक्रवार को अंतरिम सीईओ बनाकर रविवार को पद से हटाई गई मीरा मुराती और बोर्ड निदेशक व मुख्य डाटा वैज्ञानिक इलिया सुतस्केवर सहित सीओओ ब्रैड लाइट कैप भी शामिल हैं। बोर्ड निदेशकों के नाम लिखे इस पत्र में कहा गया कि कर्मचारियों ने ही नया तकनीकी मॉडल विकसित किया, एआई की सुरक्षा के वैश्विक मानक बनाने में मदद की। इन्हें रोज दसियों लाख लोग उपयोग कर रहे हैं। कंपनी अब तक की सबसे मजबूत स्थिति में है, लेकिन फिर बोर्ड ने ऑल्टमैन व ब्रोकमैन को जिस तरह हटाया, सब कुछ खतरे में पड़ गया। कंपनी ने अपना मिशन भुला दिया। बोर्ड का आचरण बताता है कि उसमें ओपनएआई की देखरेख की क्षमता नहीं है। कंपनी के अधिकारियों ने स्थिति संभालने का प्रयास किया, बोर्ड की चिंताएं सुनीं, सहयोग दिया, लेकिन उनके कहने पर भी बोर्ड ने आरोपों पर कोई तथ्य नहीं दिए। अधिकारियों को समझ आ गया कि बोर्ड दुर्भावना से वार्ता कर रहा है, अपना कर्तव्य निभाने के लिए योग्य नहीं है।

### निवेशकों के लिए खुशखबरी! सेबी ने ट्रेडिंग को आसान बनाने के लिए बदले नियम

**नई दिल्ली।** बाजार नियामक सेबी ने भौतिक शेयर रखने वाले धारकों को राहत देते हुए पैन, केवाईसी विवरण और नामांकन के बिना इन्हें फ्रीज करने की आवश्यकता के प्रविधान को खत्म कर दिया है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड ने इसको लेकर एक सर्कुलर जारी किया। इस सर्कुलर के अनुसार यह कदम नियम को सरल बनाने के उद्देश्य से लिया गया है और यह तत्काल रूप लागू होगा। रजिस्ट्रार एसोसिएशन आफ इंडिया और निवेशकों से फीडबैक मिलने के बाद यह फैसला लिया गया है। नियम के तहत सूचीबद्ध कंपनियों के भौतिक शेयर रखने वाले सभी धारकों के लिए पैन, नामांकन, संपर्क विवरण, बैंक खाता विवरण और उनके संबंधित फोलियो नंबरों के लिए नमूना हस्ताक्षर देना अनिवार्य था। सेबी ने मई में कहा था कि जिन फोलियो का विवरण एक अक्टूबर, 2023 के बाद उपलब्ध नहीं होगा, उन्हें इश्यू एंड शेयर ट्रांसफर एजेंट (आरटीए) के रजिस्ट्रार द्वारा फ्रीज कर दिया जाएगा।

### सोना 61 हजार और चांदी 73 हजार के पार

**नई दिल्ली ।** वैश्विक बाजारों में कीमती धातुओं में तेजी के बीच भारतीय सराफा बाजार में सोने और चांदी की वायदा कीमतों में तेजी देखी जा रही है। दोनों के वायदा भाव मंगलवार को तेजी के साथ खुले। सोने के वायदा भाव बढकर 61 हजार रुपये पार कर गए हैं। चांदी के वायदा भाव 73 हजार रुपये से ऊपर कारोबार कर रहे हैं। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का दिसंबर कॉन्ट्रेक्ट 148 रुपये की तेजी के साथ 60,805 रुपये के भाव पर खुला। फिलहाल यह कॉन्ट्रेक्ट 413 रुपये की तेजी के साथ 61,070 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। मई महीने में सोने के वायदा भाव ने 61,845 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत बंद भाव हुई।

### टेस्ला इंक की अगले साल भारत में एंट्री होगी

# जनवरी में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में इसकी घोषणा संभव, मस्क भी भारत आने वाले हैं

**वॉशिंगटन।**
इलेक्ट्रिक व्हीकल बनाने वाली एलन मस्क की कंपनी टेस्ला इंक की अगले साल भारत में एंट्री होने वाली है। भारत के साथ टेस्ला की डील अंतिम चरण में है। ब्लूमबर्ग ने अपनी एक रिपोर्ट में इसकी जानकारी दी है। बीते दिनों एलन मस्क ने भी कहा था कि वो अगले साल भारत आने का प्लान कर रहे हैं।

अमेरिका की इस ईवी कंपनी को भारत अगले साल से देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को आयात करने और दो साल की अवधि के भीतर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट स्थापित करने की अनुमति देगा। जनवरी में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में इसकी आधिकारिक घोषणा होने की उम्मीद है। गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में टेस्ला अपना इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलप कर सकता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि टेस्ला भारत में नए प्लांट के लिए शुरुआत में लगभग 2 बिलियन डॉलर, यानी करीब 16,000 करोड़ का निवेश करने की योजना बना रही है। उनकी भारत से 15 बिलियन डॉलर, यानी करीब 1.2 लाख करोड़ तक के ऑटो पार्ट्स खरीदने की भी योजना है। कंपनी लागत कम करने के लिए भारत में कुछ बैटरियां बनाने पर विचार कर रही है।

#### पीयूष गोयल ने टेस्ला की मैन्युफैक्चरिंग फैसेलिटी विजिट की थी

हाल ही में कॉमर्स एंड इंडस्ट्री मिनिस्टर पीयूष गोयल ने कैलिफोर्निया में टेस्ला की मैन्युफैक्चरिंग फैसेलिटी विजिट की थी। हालांकि, इस दौरान कंपनी के मालिक एलन मस्क मौजूद नहीं थे। उन्होंने एक ङ्क पोस्ट में लिखा- आपका टेस्ला में आना सम्मान की बात है! आज कैलिफोर्निया नहीं आ पाने के लिए मुझे खेद है, लेकिन मैं फ्यूचर डेट में मीटिंग की आशा रखता हूं।

पीयूष गोयल ने तस्वीरें शेयर करते हुए पर लिखा था- प्रतिभाशाली भारतीय इंजीनियरों और फाइनेंस प्रोफेशनल्स को सीनियर पोजिशन पर काम करते हुए और टेस्ला की रिमार्केबल जर्नी में योगदान करते हुए देखकर बेहद खुशी हुई। गोयल ने कहा- एलन मस्क की मैग्नेटिक प्रेजेंस को मिस किया और मैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

#### इसी साल जून में प्रधानमंत्री मोदी से मिले थे मस्क

इसी साल जून में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से न्यूयॉर्क में टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने मुलाकात की थी। इस मुलाकात के बाद मस्क ने कहा था- भारत में दुनिया के किसी भी बड़े देश की तुलना में अधिक संभावनाएं हैं। मैं भारत के भविष्य को लेकर उत्साहित हूं। मैं मोदी का फैन हूं। यह एक शानदार मुलाकात थी और मैं उन्हें काफी पसंद करता हूं। पीएम मोदी ने भी इस मुलाकात की तस्वीर ट्वीट करते हुए लिखा- आज आपसे शानदार मुलाकात हुई एलन मस्क। हमने ऊर्जा से लेकर आध्यात्मिकता तक के इश्यूज पर बातचीत की।

#### पिछले साल टेस्ला और सरकार के बीच नहीं बनी थी बात

पिछले साल टेस्ला ने भारत आने की इच्छा जताई थी, लेकिन तब कंपनी और सरकार के बीच बात नहीं बन पाई थी। टेस्ला ने सरकार से पूरी तरह से असेंबल गाड़ियों पर लगने वाली इंपोर्ट ड्यूटी को 100 प्रतिशत से घटाकर 40 प्रतिशत करने की मांग की थी।

कंपनी चाहती थी कि उसकी गाड़ियों को लग्जरी नहीं बल्कि इलेक्ट्रिक व्हीकल माना जाए, लेकिन सरकार ने कहा था कि दूसरे देशों से इंपोर्ट किए जाने वाले किसी भी इलेक्ट्रिक व्हीकल्स पर इंपोर्ट ड्यूटी माफ या कम करने का कोई भी इरादा नहीं है।

सरकार ने कहा था कि अगर टेस्ला भारत में मैन्युफैक्चरिंग प्लांट लगाने का कमिटमेंट करती है तो इंपोर्ट पर छूट देने पर विचार किया जाएगा। हालांकि, मस्क चाहते थे कि पहले भारत में कारों की बिक्री की जाए, इसके बाद प्लांट लगाने का विचार किया जाएगा।

27 मई 2022 को भी एक ट्वीट में रिप्लाई करते हुए एलन मस्क ने कहा था, टेस्ला ऐसे किसी लोकेशन पर मैन्युफैक्चरिंग प्लांट नहीं लगाएगी जहां उसे पहले से कारों को बेचने और सर्विस की परमिशन नहीं है।

# सेबी प्रमुख माधबी पुरी बुच बोलीं, नुकसान के बावजूद एफएंडओ में निवेशकों की बढ़ती रुचि समझ से बाहर

**मुंबई ।**
नुकसान के बावजूद निवेशकों की वायदा एवं विकल्प खंड (एफएंडओ) में बढ़ती रुचि समझ से बाहर है। यह स्थिति तब है, जब एफएंडओ में निवेश करने वाले 90 फीसदी लोगों को नुकसान उठाना पड़ रहा है। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच ने कहा कि महामारी के दौरान एफएंडओ खंड में निवेशकों की भागीदारी तेजी से बढ़ी है। व्यक्तिगत कारोबारियों की कुल संख्या 2018-19 के 7.1 लाख की तुलना में 500 फीसदी से अधिक बढ़ गई है।

#### 11 फीसदी ने ही कमाया लाभ

सेबी प्रमुख ने एशिया के सबसे पुराने शेयर बाजार बीएसई में निवेशक जोखिम बचाव पहुंच मंच शुरू किए जाने के दौरान पूंजी बाजार नियामक के एक हालिया शोध पत्र का जिक्र किया। इसके मुताबिक, एफएंडओ में 45.24 लाख कारोबारियों में से सिर्फ 11 फीसदी ने लाभ कमाया है।

#### 500 प्रतिशत से अधिक बढ़ी है 2018-19 की तुलना में व्यक्तिगत कारोबारियों की संख्या

2011-12 में एफएंडओ में 89 फीसदी लोगों ने पैसा गंवाया। उनका औसत नुकसान 1.1 लाख था। कुछ लोग भाग्यशाली थे, जिनका औसत लाभ 1.5 लाख रुपये था। एफएंडओ में एक तिहाई से अधिक निवेशकों की उम्र 20-30 साल है। 2018-19 में संख्या सिर्फ 11 फीसदी थी।

#### लंबी अवधि में महंगाई से अधिक मिलेगा रिटर्न

बुच ने कहा, उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि बाजार में दीर्घकालिक नजरिये से लंबी अवधि के लिए निवेश करते हैं, शायद ही आप कभी गलत होंगे। निवेशक लंबे समय तक बाजार में टिकता है तो उसका रिटर्न अर्थव्यवस्था में महंगाई की दर से अधिक होगा। निवेशक दीर्घकालिक नजरिया अपनाएं। एफएंडओ में हर दिन अपना पैसा खोने से अच्छा लंबी अवधि का निवेश है, जिसमें अच्छे रिटर्न की बेहतर संभावना है।

# भारत के साथ संबंध मजबूत बनाना चाहता है आसियान समूह, महासचिव काओ ने कही यह बात

**नई दिल्ली ।**
दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संघ' (आसियान) के महासचिव डॉ काओ किम होर्न ने भारत के साथ मजबूत संबंधों की वकालत की है। उन्होंने कहा है कि यह 10 सदस्यीय समूह भारत के साथ मजबूत रिश्ते चाहता है। उनके अनुसार दोनों पक्षों के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की समीक्षा की जा रही है।

डॉ काओ ने जकार्ता में भारतीय पत्रकारों से बातचीत में कहा कि दोनों पक्षों की आबादी के आकार को देखते हुए उनके बीच बड़े व्यापार और निवेश की क्षमता है। उन्होंने कहा, ''हम भारत के साथ मजबूत रिश्ते चाहते हैं।

इसके सकारात्मक पहलू को देखिए। एक सवाल के जवाब में महासचिव ने कहा कि मौजूदा भारत-आसियान मुक्त व्यापार समझौते की समीक्षा की जा रही है और दोनों पक्ष इसे 2025 तक इसे पूरा करने की योजना पर काम कर रहे हैं।

जकार्ता में सितंबर में 20वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में भाग लेते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आसियान-भारत एफटीए की समीक्षा समयबद्ध तरीके से पूरा करने की जरूरत पर बल

दिया था। एफटीए पर 2009 में हस्ताक्षर किए गए थे और इसे जनवरी 2010 में लागू किया गया था। वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार भारतीय कारोबारियों की लंबे समय से मांग रही है कि आसियान-भारत के बीच मुक्त व्यापार समझौते की की समीक्षा की जाए। उसने कहा कि समीक्षा जल्द शुरू होने से एफटीए को व्यापार के लिहाज से सुगम और परस्पर लाभकारी बनाने में मदद मिलेगी। आसियान के 10 सदस्यों में इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन, सिंगापुर, थाइलैंड, ब्रूनेई, वियतनाम, लाओस, म्यांमा और कंबोडिया शामिल हैं।

# केंद्रीय वित्त मंत्री ने तेलंगाना सरकार पर साधा निशाना, बोलीं- केसीआर ने राज्य को कर्ज में डुबोया

**नई दिल्ली ।**
केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को हैदराबाद में आर्थिक नीतियों की विफलता के लिए तेलंगाना सरकार को घेरा। वित्त मंत्री ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री केसीआर ने तेलंगाना को एक कर्ज में डूबे राज्य में बदल दिया है। उन्होंने कहा कि 2014 में गठन के समय जो राजस्व अधिशेष वाला राज्य था वह अब राजस्व घाटे वाला राज्य बन गया है और इसका श्रेय मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव को जाता है।

मलकाजगिरी से भाजपा उम्मीदवार एन रामचंदर राव के लिए आयोजित मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि तेलंगाना की अगली दो से तीन पीढ़ियां कर्ज चुकाएंगी। उन्होंने कहा कि तेलंगाना उन राज्यों में एक है जो शराब, पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने का विरोध कर रहा है।

उन्होंने कहा, राज्य में विभिन्न तरीकों से निवेश आ रहा है पर राज्य (2014 में) राजस्व अधिशेष वाला राज्य था, वह अब राजस्व घाटे वाले राज्य में बदल गया है। इसका श्रेय केसीआर को जाता है। आज तेलंगाना कर्ज में डूबा हुआ है। अगली दो से तीन पीढ़ियों में, हमारे बच्चों को उन ऋणों को चुकाना होगा।

कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि संप्रग शासन के दौरान हमारे रक्षाकर्मी न केवल बुलेट प्रूफ जैकेट, बल्कि अन्य सुरक्षा उपकरणों से भी वंचित थे और उन 10 वर्षों के दौरान कोई

खरीदारी नहीं की गई। राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद के बारे में उन्होंने कहा कि यह सरकार से सरकार के बीच का समझौता है और तय कार्यक्रम के अनुसार हर विमान की आपूर्ति कर दी गई है।

उन्होंने कहा, हाल के वर्षों में राष्ट्रीय हित में फैसले लिए गए। कोई रिश्वत नहीं दी गई या ऐसी कोई कंपनी नहीं है जिसके साथ हमारा कोई लेन-देन रहा। भाजपा उम्मीदवार के लिए वोट मांगते हुए सीतारमण ने कहा कि रामचंदर राव पार्टी के वफादार नेता हैं और उनकी छवि साफ-सुथरी है।

### रिपोर्ट में दावा- बायजूस को मिला 9,000 करोड़ का नोटिस

# कंपनी ने खबरों को खारिज किया, कहा- ईडी से कोई नोटिस नहीं मिला

**नई दिल्ली।**
एजुकेशन टेक्नोलॉजी कंपनी बायजूस ने 9,000 करोड़ रुपए के नोटिस की खबरों को मंगलवार को खारिज कर दिया। कुछ मीडिया रिपोर्टों में दावा किया गया था कि विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) उल्लंघन के मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने यह नोटिस जारी किया है। फॉरेन करेंसी के फ्लो को नियंत्रित करने के लिए 1999 में फेमा बनाया गया था।

इसी साल अप्रैल में ईडी ने बायजूस के बेंगलुरु स्थित तीन ऑफिस में छापे मारे थे। तलाशी के दौरान दस्तावेज और डिजिटल डेटा जब्त किया गया। जांच एजेंसी के अनुसार, कंपनी को 2011 और 2023 के बीच 28,000 करोड़ रुपए का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मिला है। इसके अलावा कंपनी ने भी एफडीआई के नाम पर पैसा अलग-अलग देशों में भेजा।

#### बायजूस की अकाउंट बुक्स की जांच के आदेश

हाल ही में केंद्र सरकार ने बायजूस की

अकाउंट बुक्स की जांच के आदेश दिए थे। इसमें जो सामने आएगा, उसके आधार पर सरकार फैसला लेगी कि क्या मामले को सीरियस फ्रॉड इन्वेस्टिगेशन ऑफिस के पास ले जाने की जरूरत है या नहीं।

#### जांच के घेरे में आने के बाद ऑडिटर ने दिया था इस्तीफा

रेगुलेटरी जांच के घेरे में आने के बाद दुनिया की बड़ी ऑडिट कंपनियों में शुमार डेलॉइट ने बायजूस के लीगल ऑडिटर के तौर पर इस्तीफा दे दिया था। डेलॉइट ने कहा था कि 31 मार्च, 2022 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए कंपनी के फाइनेंशियल स्टेटमेंट लंबे समय से पेंडिंग हैं।

इसके अलावा वित्त वर्ष 2020-21 के बारे में भी कोई कम्युनिकेशन नहीं होने की वजह से अब तक ऑडिट शुरू नहीं हो पाया है। बायजूस ने डेलॉय की जगह बीडीओ (एमएसकेए एंड एसोसिएट्स) को कंपनी का लीगल ऑडिटर नियुक्त किया था।

#### वित्त वर्ष 2022 में बायजूस को 2,250 करोड़ का घाटा

बायजूस को 31 मार्च 2022 को खत्म हुए वित्त वर्ष में 2,250 करोड़ रुपए का घाटा हुआ है। जबकि एक साल पहले (वित्त वर्ष 2021) कंपनी को 2406 करोड़ रुपए का घाटा हुआ था। हालांकि, कंपनी की इनकम 1,552 करोड़ से बढ़कर 3,569 करोड़ रही। बायजूस ने शनिवार 4 नवंबर को इसके बारे में जानकारी दी थी। फाइनेंशियल रिजल्ट जारी करने में देरी सहित कई अन्य कारणों से कंपनी रेगुलेटरी जांच के घेरे में है।

#### बायजू रवींद्रन बोले- फाइनेंशियल ईयर 2022 ने हमें बहुत कुछ सिखाया

फाउंडर और सीईओ बायजू रवींद्रन ने वित्त वर्ष 2022 के नतीजे जारी होने के बाद कहा था, उठापटक से भरे साल ने हमें बहुत कुछ सिखाया है। इस साल हमने 9 एक्विजिशन किए हैं, जो भारत में एजुकेशन टेक्नोलॉजी के पोटेंशियल को हाइलाइट करता है।

कोरोना महामारी के बाद दुनिया में बहुत कुछ बदला है, यह हमें बहुत कुछ सिखा गया है। आने वाले सालों में बायजू सस्टेनेबल और प्रॉफिटेबल ग्रोथ के साथ आगे बढ़ेगा।

#### रुपया छह पैसे बढ़कर 83.32 प्रति डॉलर

**मुंबई ।** स्थानीय शेयर बाजार में मजबूती तथा विदेशी बाजार में अमेरिकी मुद्रा में कमजोरी के बीच मंगलवार को शुरुआती कारोबार में रुपया छह पैसे की बढ़त के साथ 83.32 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि सोमवार को डॉलर में कमजोरी के बावजूद रुपया रिकॉर्ड निचले स्तर पर आ गया था। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपया 83.33 पर खुला। इसके बाद यह 83.32 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। यह पिछले बंद स्तर की तुलना में छह पैसे की बढ़त है। रुपया 83.38 प्रति डॉलर के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ था। इस बीच दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.21 प्रतिशत की गिरावट के साथ 103.21 पर आ गया।

# इंसान दुश्मन ही बनाता है : इमरान हाशमी

## - एक्टर ने ऐश्वर्या को प्लास्टिक कहने पर तोडी चुप्पी

**मुंबई (ईएमएस)।** हाल ही में एक इंटरव्यू में एक्टर इमरान हाशमी ने दस साल के बाद अपने उस बयान का खुलासा किया जिसमें उन्होंने ऐश्वर्या को प्लास्टिक कह दिया था। इसके बाद अभिनेता को अपने इस बयान का खामियाजा भी भुगतना पड़ा था। बातचीत में इमरान हाशमी से शो कॉफी विद करण में उनकी उपस्थिति के बारे में पूछा गया। इस पर एक्टर ने कहा कि इंसान दुश्मन ही बनाता है। इमरान हाशमी से उनके हालिया इंटरव्यू में पूछा गया कि वह अक्सर विवादों में आ जाते हैं तो क्या इसी वजह से वह शोज में जाने से बचते हैं। इस पर अभिनेता ने कहा- मेरे लिए यह हैंडल करना बहुत मुश्किल हो जाता है। मैं अभी भी नरम दिल नहीं हुआ हूं। अगर मैं दोबारा कॉफी विद करण में गया तो सब बिगाड़ दूंगा। शायद इस बार रैपिड फायर राउंड में और भी खतरनाक हो जाऊंगा। मेरे मन में किसी के खिलाफ कुछ नहीं है। मैं बस हैंपर जीतना चाहता था। बता दें कि कॉफी विद करण में अपनी उपस्थिति के दौरान इमरान ने महेश भट्ट, ऐश्वर्या राय बच्चन और मल्लिका शेरावत के बारे में कुछ टिप्पणी की थी। दरअसल, करण के शो में अभिनेता से पूछा गया था कि प्लास्टिक सुनकर उनके मन में किसका नाम आता है। इस पर इमरान हाशमी ने ऐश्वर्या राय बच्चन का नाम लिया था। अपने इस कमेंट के बाद इमरान को पब्लिकली माफी भी मांगनी पड़ी थी। उन्होंने कहा था कि वह सिर्फ गेम खेल रहे थे। उन्हें बस हैंपर जीतना था। बता दें कि बॉलीवुड के सीरियल किसर कहे जाने वाले एक्टर इमरान हाशमी ने हाल ही में फिल्म टाइगर 3 में विलेन के किरदार के साथ स्क्रीन पर वापसी की है। इस फिल्म को लेकर वो तमाम इंटरव्यूज दे रहे हैं।

# ओम शांति ओम से तीन एक्टर्स के कॅरियर में आया था उछाल

## -लीड स्टार ने गाने के लिए 2 दिन नहीं पिया पानी

**मुंबई (ईएमएस)।** बालीवुड की ब्लॉक बस्टर फिल्म ओम शांति ओम वजह से तीन एक्टर्स को नई पहचान मिली थी, उनके कॅरियर में जबरदस्त उछाल आया था। अर्जुन रामपाल के डूबते करियर को नई दिशा मिली थी। बॉक्स ऑफिस पर तो इस फिल्म ने धमाल ही मचा दिया था, मेकर्स की भी मालामाल हो गए थे। इसी फिल्म से दीपिका पादुकोण स्टार बनी थीं। इस फिल्म के एक गाने में ही 31 एक्टर्स एक साथ पर्दे पर नजर आए थे। शाहरुख के करियर के लिए ये फिल्म मील का पत्थर साबित हुई थी। वहीं इस फिल्म से दीपिका पादुकोण ने भी अपने सिने करियर की शुरूआत की थी। करियर की पहली ही फिल्म ब्लॉकबस्टर देकर दीपिका ने इंडस्ट्री में धाक जमा ली थी। फिल्म में शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की जोड़ी को काफी पसंद किया गया था। दोनों के रोमांटिक अंदाज ने लोगों को दीवाना बना दिया था। फिल्म के गाने भी काफी पसंद किए गए थे। दीपिका का रेट्रो लुक देख लोग भी हैरान हो गए थे। करियर की पहली ही फिल्म में दीपिका ने साबित कर दिया था कि उनमें एक्टिंग टैलेंट की कमी नहीं है। इस फिल्म के बाद दीपिका शाहरुख जब जब साथ आए फिल्में हिट ही साबित हुईं। फराह खान ने अपनी इस फिल्म के एक सीन के बारे में खुलासा करते हुए बताया था कि ओम शांति ओम में एक सॉन्ग दर्द-ए-डिस्को के लिए शाहरुख ने दो दिनों तक पानी नहीं पिया था ताकि वे अपनी बॉडी को सही तरीके से दिखा सके। क्योंकि ब्लोटिंग हो जाती है। दर्द-ए-डिस्को में वो ठीक से डांस भी नहीं कर पा रहा था क्योंकि उसे बहुत ही ज्यादा क्रैम्प हो रहा था। फिर भी उसने इस सीन को पूरी मेहनत से निभाया और गाना काफी पसंद किया गया था। साल 2001 से लेकर 2006 तक अर्जुन कपूर ने करियर में एक हिट को छोड़कर ज्यादातर फ्लॉप या डिजास्टर फिल्में ही दी थी। अच्छी कद काठी चेहरा होने के बाद भी वह दर्शकों का दिल जीतने में कामयाब नहीं हो रहे थे। फिर साल 2007 में शाहरुख खान का साथ पाकर फिल्म ओम शांति ओम में अर्जुन रामपाल के करियर को नई दिशा मिली। उनकी ये फिल्म ब्लॉकबस्टर साबित हुई। इससे पहले अर्जुन रामपाल रोमांटिक अंदाज में लोगों का दिल जीतने की जद्दोजहद कर रहे थे।

# सैम बहादुर में विक्की ने किया टाइलर रोल प्ले

## -कोलकाता में प्रमोशन्स के दौरान झूमे फैन्स

**मुंबई (ईएमएस)।** बालीवुड की मच अवेटेड फिल्म सैम बहादुर में एक्टर विक्की कौशल ने टाइलर रोल प्ले किया हैं। हाल ही में मेकर्स ने फिल्म का दमदार ट्रेलर भी लॉन्च किया था। फिलहाल फिल्म के प्रमोशन्स शुरू हो चुके है जिसके सिलसिले में एक्टर कोलकाता पहुंचे, जहां विक्की को देख उनके फैन्स क्रेजी हो गए और उनका जोरदार स्वागत किया। विक्की कौशल सबसे पहले ईस्टर्न कमांड हेडक्वार्टर फोर्ट विलियम गए फिल्म को प्रमोट करते। बता दें, जब सैम ईस्टर्न कमांड के प्रमुख थे तब उन्होंने यहां सेवा की थी। इसके बाद सैम बहादुर एक्टर भवानीपुर कॉलेज में नजर आएं जहां करीब 3500 स्टूडेंट्स का क्राउड पहले से ही मौजूद था। इस दौरान विक्की को देख स्टूडेंट्स का जोश हाई था, जिसे उन्होंने जरा भी कम नहीं होने दिया। विक्की ने यहां अपनी फिल्म का ट्रेलर और बढ़ते चलो गाना भी प्ले किया। यही नहीं, यहां आए स्टूडेंट्स के साथ उन्हें इंटरैक्ट करते देखा गया, जहां उन्होंने सैम बहादुर के साथ सभी से थिएटर्स में मिलने का प्रॉमिस लिया और गुजारिश भी की कि जो प्यार उन्हें लोगों से मिला है वहीं प्यार उनकी फिल्म को भी वो दें।

बता दें, 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित यह फिल्म फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है, जिन्होंने आगे बढ़कर भारतीय सेना का नेतृत्व किया और बांग्लादेश का निर्माण भी किया था। फिल्म का निर्देशन मेघना गुलजार ने किया हैं जिन्होंने भवानी अय्यर और शांतनु श्रीवास्तव के साथ मिलकर इसे लिखा भी हैं। फिल्म को आरएसवीपी मूवीज के बैनर तले रॉनी स्क्रूवाला द्वारा निर्मित किया गया है। फिल्म में विक्की कौशल के अलावा फातिमा सना शेख, सान्या मल्होत्रा, नीरज काबी, एडवर्ड सोनेनब्लिक और जीशान अय्यूब भी मुख्य भूमिका में हैं। सैम बहादुर 1 दिसंबर, 2023 को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली है। बता दें कि विक्की कौशल अपनी मच अवेटेड फिल्म सैम बहादुर को लेकर हर तरफ छाए हुए हैं। ये फिल्म भारत के पहले फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ की लाइफ पर बेस्ड है।

# विराट कोहली का डेडीकेशन और पैशन है : सलमान खान

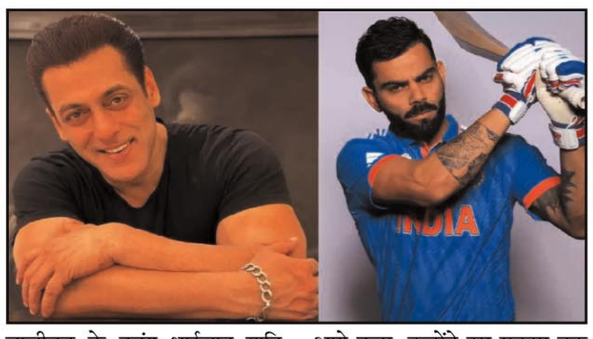

बालीवुड के दबंग भाईजान यानि सलमान खान ने कहा है कि जिस तरह से भारतीय टीम खेल रही है, उसके वर्ल्ड कप 2023 फाइनल में हारने की शायद ही कोई संभावना है। कोहली की प्रशंसा करते हुए सलमान ने कहा, विराट कोहली का डेडीकेशन और पैशन है। डेडीकेशन और कड़ी मेहनत के बिना इस मुकाम तक पहुंचना संभव नहीं है, खासकर सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ना, जिसे असंभव माना जाता है। सलमान ने आगे कहा, उन्होंने इस मुकाम तक पहुंचने के लिए बहुत सारे सैक्रिफाइस किए होंगे। यह वास्तव में सराहनीय है। यह पूछे जाने पर कि क्या भारतीय टीम जीत की हकदार है, अभिनेता ने कहा, वे इसके हकदार हैं। वे इसके 100 प्रतिशत हकदार हैं। मुझे लगता है कि यह ट्रॉफी भारत में ही रहेगी, यह मेरी राय है। मुझे लगता है कि जिस तरह से भारतीय टीम खेल रही है, मुझे उम्मीद है कि उनके इस मैच में हारने की संभावना नहीं के बराबर है।

# एकता के योगदान ने इंसानी क्रांति को जन्म दिया : चोपड़ा

## - फेमस राइटर ने एकता कपूर की प्रशंसा

**मुंबई (ईएमएस)।** फेमस राइटर दीपक चोपड़ा ने कहा कि उनका प्रभाव सिर्फ एंटरटेनमेंट तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इस बात पर जोर दिया कि एकता के योगदान ने इंसानी क्रांति को जन्म दिया है, जिससे वह इस अवॉर्ड की हकदार हैं। बता दें कि कंटेंट क्वीन एकता आर कपूर को 20 नवंबर, 2023 को न्यूयॉर्क में 51वें अंतर्राष्ट्रीय एम्मी अवॉर्ड्स में इंटरनेशनल एमी डायरेक्टोरेट अवॉर्ड से नवाजा जाने वाला हैं। इस खास मौके पर फेमस राइटर और नए युग के नेता, दीपक चोपड़ा को एकता आर कपूर को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार देने के लिए चुना गया है। दीपक चोपड़ा ने एकता कपूर ने ग्लोबल कल्चर पर कैसे गहरी छाप छोड़ी इस पर खुलकर बात की है। एक इंटरव्यू में दीपक चोपड़ा ने बताया कि उन्हें बहुत खुशी है ये देखकर कि लोग एकता की उपलब्धियों का जश्न मना रहें है। उन्होंने ये भी कहा कि उन्हें एकता आर कपूर को इंटरनेशनल एमी 2023 डायरेक्टोरेट अवॉर्ड देना एक खास सम्मान है, जो उन्हें गहरा अनुभव और खुशी देता है। वहीं एकता कपूर ने उनकी तारीफ करते हुए कहा कि उन्हें बहुत खुशी है एक ऐसे व्यक्ति से अवॉर्ड लेने की जिन्हें वह पूरे दिल से आदर और सम्मान देती हैं। उन्होंने आगे कहा, ह्लमैं ऐसे दूरदर्शी व्यक्ति द्वारा मुझे पुरस्कार दिए जाने से उत्साहित हूं और उम्मीद है कि वह इस बारे में कुछ विचार साझा करेंगे जिससे मैं खुद को और बेहतर बना सकती हूं। ईश्वर जानता है मुझे इसकी जरूरत है। रोजमर्रा की जिंदगी और काम के दबाव में कुछ छोटी खुशियां मुझसे छिन जाती है और निश्चित रूप से, दीपक और उनकी किताबें आपको जीवन के दोनों पहलुओ को कैसे खुश और एक साथ रखें ये सिखाते हैं। मैं किसी ऐसे व्यक्ति से पुरस्कार पाकर बहुत खुश और एक्साइटेड हूं जिसकी मैं वास्तव में तारीफ और सम्मान करती हूं। अपनी यात्रा पर विचार करते हुए, एकता आर कपूर ने इंडस्ट्री में प्रवेश करने पर भारत के बदलते परिदृश्य पर टिप्पणी की। उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने और सांस्कृतिक बदलाव को बढ़ावा देने में अपने कंटेंट की भूमिका पर प्रकाश डाला। वह आगे कहती हैं, मुझे लगता है कि मैं ऐसे समय में आई हूं जब भारत बदल रहा था और विकास कर रहा था, जहां महिलाएं अपनी आवाज ढूंढ रही थीं। वह फिर से अपनी हिम्मत और दृढ़ता पा रही थी, फिर से अपने पैर जमा रही थी, और महिलाएं भी। हमारे द्वारा बनाए गए कंटेंट ने धीरे-धीरे महिलाओं की मानसिकता को वास्तव में एक बड़ा कदम आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। मुझे लगता है कि कोई इंडस्ट्री या बिजनेस वास्तव में इसी जरूरत से उपजा है जिस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस पुरस्कार का अहमियत इस बात से ज्यादा हो जाती है कि एकता कपूर पहली इंडियन वुमेन फिल्ममेकर होंगी जो इंटरनेशनल एमी डायरेक्टोरेट अवॉर्ड हासिल करेंगी। यह प्रतिष्ठित सम्मान उनके इंडस्ट्री में अनोखे योगदान को दशार्ता है, जहां उन्होंने लगातार ऐसा कंटेंट दिया है जो एक खास और बड़े दर्शक वर्ग से जुड़ता है।

# 'लईका एगो सांवरका' गाना हुआ सुपरहिट

## - महज 5 घंटे में मिले 1 मिलियन से अधिक व्यूज

**मुंबई, (हि.स.)।** भोजपुरी फिल्मों की मशहूर अदाकारा माही श्रीवास्तव और सिंगर खुशबू तिवारी केटी का भोजपुरी गाना लईका एगो सावरक दर्शको के सीर चढ़ कर बोल रहा। वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स भोजपुरी के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर रिलीज हुए इस गाने के मजह 5 घंटे में 1 मिलियन से अधिक व्यूज मिले हैं। इस गाने को वायरल सिंगर खुशबू तिवारी केटी ने बहुत ही खाटी भोजपुरिया अंदाज में गाया है, जो कि सुनने में बहुत प्यारा लग रहा है। इसके वीडियो का फिल्मांकन भी काफी दर्शनीय किया गया है। गाने के वीडियो में माही श्रीवास्तव अपने दिल की फीलिंग को बयां करते हुए जोरदार ठुमका लगाकर सबका मन मोह रही हैं। वीडियो में दिखाया गया है कि जब पहली बार किसी को मोहब्बत होती है तो उसे दूर रहने पर जो तड़प होती है, जो बेकरारी होती है, वह सब माही श्रीवास्तव अपनी अदाओं से बयां कर रही हैं। वह दिल की फिलिंग अपने सहेलियों से साझा करते हुए कहती हैं कि 'हमरे संगे पढ़ेला हमरे क्लास में, बस गईल बाटे ऊ हमरा हर सांस में, अब मन करेला ना रहके फरका ए सखी, दिलवा ले गईल लईका एगो सांवरका के सखी...' भोजपुरी लोकगीत 'लईका एगो सांवरका' के निमार्ता रत्नाकर कुमार हैं। सिंगर खुशबू तिवारी केटी ने इस गाने को गाकर जहां सब काम ध्यान आकर्षित किया है, वहीं एक्ट्रेस माही श्रीवास्तव ने धमाकेदार ठुमका लगाकर सबका मन मोह लिया है। इसके गीतकार यादव राज हैं। संगीतकार अभिराम पांडे हैं। वीडियो निर्देशक दिनेश जी, कोरियोग्राफर गोल्डी जायसवाल हैं। इस गाने का ऑल राइट्स वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स के पास है।

# मेगन फॉक्स मशीन गन केली के साथ नाइट में पहुंची

बीते दिनों हॉलीवुड एक्ट्रेस मेगन फॉक्स मशीन गन केली के साथ मार्मोंट में जीक्यू मेन ऑफ द ईयर अवार्ड्स नाइट में पहुंची। इस दौरान 37 की मेगन फॉक्स लो कट नेकलाइन वाली स्ट्रैपलेस ड्रेस में हाट दिखीं। इस ड्रेस में वह अपनी टोन्ड फिगर फ्लान्ट करती दिखी। इतना ही नहीं इस ड्रेस में मेगन के क्लीवेज भी साफ दिख रहे थे। रेड हेयर्स, मिनिमल मेकअप मेगन के लुक को परफेक्ट बना रहे थे। वहीं मशीन गन लूट कोट पैंट में दिखे। इस दौरान मेगन मंगेतर का हाथ थामें पोज दे रही थी। तस्वीरों में एक साथ कपल की बॉन्डिंग देखते ही बन रही है। बता दें, मेगन फॉक्स और मशीन गन की मुलाकात स्विचग्रास में रान्डेल एम्मेट की मिडनाइट के सेट पर हुई थी। इस मुलाकात के दो साल बाद कपल ने 11 जनवरी को सगाई की थी, जिसके बाद से दोनों को अक्सर एक साथ स्पॉट किया जाता है। बता दें कि हॉलीवुड एक्ट्रेस मेगन फॉक्स अक्सर मगेतर मशीन गन केली संग आउटिंग को लेकर चर्चा में रहती हैं। कपल को अक्सर एक साथ सिटी में स्पॉट किया जाता है।

# सोनम का बेटा वायु है फुटबॉल का दीवाना

बालीवुड एक्ट्रेस सोनम कपूर का बेटा वायु फुटबॉल का दीवाना है। एक्ट्रेस ने हाल ही में इंगलिश फुटबॉलर डेविड बेकहम के लिए वेलकम पार्टी भी होस्ट की थी, जिस-ाकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुईं। वहीं फुटबॉलर को पार्टी देने के बाद हाल ही में सोनम का लाडला फुटबॉल खेलता नजर आया। नन्हें वायु की ये तस्वीर सोशल मीडिया पर खूब देखी जा रही है। वायु की फुटबॉल खेलते की तस्वीर पापा आनंद आहूजा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की है और कैप्शन में लिखा-जिन्हें आप प्यार करते हैं उन्हें उड़ने के लिए पंख दें, जड़ें वापस आने के लिए दें और रहने के लिए कारण दें। इस तस्वीर में देखा जा सकता है कि शेल्फ में कई सारे फुटबॉल रखे हुए हैं और वायु एक फुटबॉल पकड़ते हुए दिख रहा है प्रिंटेड को-ऑर्ड सेट में वायु बेहद क्यूट लग रहे हैं।

इसके साथ ही आनंद ने पत्नी सोनम के साथ भी एक तस्वीर शेयर की, जिसमें दोनों ब्लैक एंड व्हाइट आउटफिट में परफेक्ट केमिस्ट्री बना रहे हैं। पत्नी के साथ आनंद मिरर सेल्फी लेते नजर आ रहे हैं। बता दें, सोनम कपूर ने साल 2018 में बिजनेसमैन आनंद आहूजा के साथ शादी रचाई थी। शादी के बाद एक्ट्रेस पति संग लंदन में रहने लगीं। हालांकि, वह काम के सिलसिले में भारत आती रहती हैं।

## सूडोकु नवताल- 6619

मध्यम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | | 6 | | 3 | | 4 | | 8 |
| | 2 | | | | 9 | | 7 | |
| 4 | | | 1 | 6 | | | | 2 |
| | | 8 | | | 2 | | 3 | |
| 1 | | 4 | | | | 2 | | 5 |
| | 3 | | 5 | | | 8 | | |
| 7 | | | | 9 | 5 | | | 3 |
| | 8 | | 6 | | | | 4 | |
| 6 | | 2 | | 7 | | 5 | | 1 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

**सूडोकु नवताल -6618 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 6 | 5 | 1 | 8 | 2 | 7 | 4 | 9 |
| 7 | 9 | 2 | 3 | 5 | 4 | 1 | 8 | 6 |
| 4 | 1 | 8 | 6 | 7 | 9 | 5 | 3 | 2 |
| 6 | 5 | 9 | 2 | 4 | 8 | 3 | 7 | 1 |
| 8 | 4 | 7 | 9 | 3 | 1 | 6 | 2 | 5 |
| 1 | 2 | 3 | 5 | 6 | 7 | 4 | 9 | 8 |
| 2 | 7 | 6 | 4 | 9 | 5 | 8 | 1 | 3 |
| 5 | 8 | 1 | 7 | 2 | 3 | 9 | 6 | 4 |
| 9 | 3 | 4 | 8 | 1 | 6 | 2 | 5 | 7 |

## शब्दजाल - 7366

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नी | म | गा | ई | ड | र | रे | फा | न | प | खा | |
| न | ल | क | प | इं | डो | श | शि | या | ड़ | मो | |
| अ | दा | क | ला | र | ग | मा | द | प्रे | प | शी | |
| ती | ग | ल | म | ब | दू | औ | प | म | लि | ला | |
| त | स | अ | सौ | ल | जा | र | कि | पु | ला | स | |
| आ | इ | री | मो | व | आ | शे | त | जा | लू | पा | |
| ग | जी | ल | क | व | प | रा | न | री | प्र | स | |
| र | रि | भा | र | स | प | स | द | र | रा | वा | |
| को | ह | रा | ना | थ | म | ज | जी | न | खी | न | |
| न | ट | प | त्थ | र | के | स | न | म | प | श | |
| ब | बी | स | सा | ल | बा | द | त्ता | प | क | र | |

*शब्दजाल में 'वहीदा रहमान' अभिनीत 10 फिल्मों के नाम ढूंढिए. नाम उपर से नीचे व तिरछे हैं.*

गाईड,नीलकमल,प्रेम पुजारी,रेशमा और शेरा,खामोशी,पत्थर के सनम,तीसरी कसम,कोहरा,राखी,बीस साल बाद

**शब्दजाल - 7365 का हल**

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | क | मु | ग | अ | ए | अ | बा | ग | बां | ट्य | |
| द | ज | ल | श | ज | मे | स | द | ह | कां | मो | |
| र | स | न | रा | दी | छ | ज | आ | र्म | ख | ह | |
| इं | स | ल | बी | दि | वा | स | र | ल | श | ब्ब | |
| डि | आ | दो | ग | बो | ज | ना | प | सा | झ | तें | |
| य | को | द | र | दि | ग | उ | खु | ण | ब | क | |
| ती | व | लि | मी | या | प | र | दा | नां | व | सु | |
| अं | एं | अ | या | द | ब | क | ग | ए | श | हा | |
| क | ग | ल | प | र | गी | स | वा | औ | प | ग | |
| अं | धा | का | नू | न | जी | त | ह | ओ | प | र | |
| क | अ | म | रा | व | ती | स | आं | खें | प | म | |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अष्टयोग - 6319

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 5 | | 3 | | 7 | |
| | 30 | 7 | 31 | 4 | 34 | 2 |
| 6 | | 2 | | 5 | | |
| | 29 | | 33 | | 37 | 3 |
| 4 | | 1 | 6 | | | 7 |
| | 30 | | 32 | | 34 | |
| | 5 | | | 1 | 2 | 4 |

*प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.*

**अष्टयोग 6318 का हल**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | 5 | 4 | 3 | 2 | 7 | 1 |
| 2 | 34 | 7 | 30 | 4 | 28 | 2 |
| 7 | 2 | 1 | 6 | 3 | 5 | 4 |
| 3 | 25 | 6 | 33 | 6 | 41 | 5 |
| 1 | 3 | 2 | 4 | 5 | 7 | 6 |
| 5 | 28 | 5 | 33 | 7 | 38 | 3 |
| 4 | 5 | 3 | 6 | 1 | 2 | 7 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

# 5 मैचों की टी20 सीरीज के लिए सूर्यकुमार करेंगे टीम इंडिया की कप्तानी 23 नवंबर को विशाखापत्तनम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरू होगी सिरीज

**मुंबई ।**

सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में 23 नवंबर से पांच मैचों की टी20 सिरीज शुरु हो रही है। इसके लिए चयनकर्ताओं ने आईसीसी पुरुष एक दिवसीय विश्व कप खेलने वाले अधिकांश शीर्ष खिलाड़ियों को आराम देने का फैसला किया है। मिली जानकारी के अनुसार सूर्यकुमार यादव 23 नवंबर को विशाखापत्तनम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुरू होने वाली पांच मैचों की ट्वेंटी 20 अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला में भारतीय टीम का नेतृत्व करेंगे।

अहमदाबाद में फाइनल में भारत के ऑस्ट्रेलिया से हारने के बाद नरेंद्र मोदी स्टेडियम में हुई राष्ट्रीय चयन समिति की बैठक में सूर्यकुमार यादव, इशान किशन और प्रसिद्ध कृष्णा को छोड़कर सभी खिलाड़ियों को आराम देने का फैसला किया गया, जिन्हें घायल ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या के बदले शामिल किया गया था। चयनकर्ताओं ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आगामी 5 मैचों की टी20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा की।

भारत के पूर्व बल्लेबाज और राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के प्रमुख वी.वी.एस. लक्ष्मण को टीम के कोच के रूप में घोषित किए जाने की संभावना है, क्योंकि मुख्य कोच राहुल द्रविड़, जिनका कार्यकाल विश्व कप के बाद समाप्त होने वाला है, ने तीन महीने बाद छुट्टी लेने का फैसला किया है। बीसीसीआई ने अपनी एक विज्ञप्ति में बताया कि रुतुराज गायकवाड़ पहले तीन मैचों के लिए सूर्यकुमार यादव के डिप्टी होंगे, जबकि श्रेयस अय्यर रायपुर और बेंगलुरु में आखिरी दो टी20 आई के लिए उप-कप्तान के रूप में टीम में शामिल होंगे। पांच मैच विशाखापत्तनम (23 नवंबर), तिरुवनंतपुरम (26 नवंबर), गुवाहाटी (28 नवंबर), रायपुर (1 दिसंबर) और बेंगलुरु (3 दिसंबर) में खेले जाएंगे। ऑस्ट्रेलिया टी20 आई श्रृंखला के लिए टीम में अधिकांश खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें से जसप्रीत बुमराह नहीं हैं, जिन्होंने विश्व कप से पहले आयरलैंड के खिलाफ श्रृंखला में देश का प्रतिनिधित्व किया था। टीम में यशस्वी जयसवाल, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह और रवि बिश्नोई को वापस लाती है।भारत की टीम : सूर्यकुमार यादव (कप्तान), रुतुराज गायकवाड़ (उप-कप्तान), इशान किशन, यशस्वी जयसवाल, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, शिवम दुबे, रवि बिश्नोई, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, आवेश खान, मुकेश कुमार शामिल हैं।

## न्यूज ब्रीफ

### 300 गोल दागने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने एम्बाप्पे, रोनाल्डो और लियोनल मेसी को पीछे छोड़ा

**नई दिल्ली ।** किलियन एम्बाप्पे सबसे कम उम्र में 300 गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेसी को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में फ्रांस के पूर्व महान खिलाड़ी थिएरी हेनरी ने एम्बाप्पे की जमकर तारीफ की। एम्बाप्पे ने 24 साल और 333 दिन की उम्र में यह उपलब्धि हासिल की। 21वीं सदी में खेल के दो सबसे बड़े सितारे, मेस्सी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो दोनों, जब इस मुकाम पर पहुंचे तो उनकी उम्र इससे अधिक थी। एम्बाप्पे ने जिब्राल्टर के खिलाफ 14-0 की जीत के दौरान यह कीर्तिमान रचा। फ्रांस की अंडर -21 टीम के कोच हेनरी ने कहा यह बच्चा जो कर रहा है वह वास्तव में इस दुनिया से अलग है। यह बिल्कुल अविश्वसनीय है। की तुलना उनके करियर की शुरुआत में अक्सर हेनरी से की जाती थी। मोनाको में खेलने से पहले दोनों ने फ्रांस की क्लेयरफोंटेन अकादमी में भाग लिया और दोनों ने फ्रेंच लीग खिताब जीते। इसके बाद एम्बाप्पे ने हेनरी की एक और उपलब्धि दोहराई जब उन्होंने फ्रांस के साथ अपने पहले बड़े टूर्नामेंट में 2018 विश्व कप जीता। हेनरी ने 1998 का टूर्नामेंट जीता था। अपनी तेजी के लिए एम्बाप्पे की तुलना ब्राजील के महान खिलाड़ी पेले से भी की जाती है। लेकिन स्टाइल के मामले में, अपनी जबरदस्त गति और कौशल के साथ, वह हेनरी के करीब है। हेनरी ने कहा, वह एक गोलस्कोरर है, वह सहायता करता है, वह जानता है कि सब कुछ कैसे करना है। बेशक, इसमें सुधार की गुंजाइश है, लेकिन मुद्दा यह नहीं है। अपने करियर की 17वीं हैट्रिक के साथ, एम्बाप्पे ने इस सीजन 19 मैचों में अपने गोल की संख्या 21 तक पहुंचा दी। यह पीएसजी स्टार का 74 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 46वां गोल था। वह अब फ्रांस की सर्वकालिक स्कोरिंग सूची में हेनरी से सिर्फ पांच गोल पीछे हैं और टीम के साथी ओलिवर गिरौद के राष्ट्रीय रिकॉर्ड से 10 गोल पीछे हैं। पेले के करियर में गोल की सटीक संख्या हमेशा बहस का विषय रहेगी। वह अक्सर कहा करते थे कि उन्हें सर्वकालिक महान खिलाड़ी माना जाना चाहिए क्योंकि उनकी 1,000 से अधिक गोल करने की उपलब्धि थी। लेकिन कई लोग उनकी गिनती पर विवाद करते हैं, क्योंकि पेले ने अर्ध-पेशेवर या यहां तक कि शौकिया टीमों के खिलाफ मैत्रीपूर्ण मैचों या मैचों में किए गए गोलों को शामिल किया है।

### ब्राजील अंडर17 फीफा विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में

**जकार्ता।** एस्टेवाओ विलियन के दो और लुइधी हनरी के एक गोल की बदौलत ब्राजील ने यहां इक्वाडोर को 3-1 से हराकर अंडर-17 फीफा विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। रिपोर्ट के अनुसार, मध्य जावा प्रांत के मनाहन स्टेडियम में ब्राजील के खिलाड़ियों ने इक्वाडोर के 15 की तुलना में 21 शॉट लगाए। पहले हाफ के दौरान इक्वाडोर के लिए माइकल बरमूडेज़ ने एक गोल किया। ब्राजील के उत्साहित कप्तान विटोर रीस ने अंतिम सीटी बजने पर कहा, हम जानते थे कि यह आसान नहीं होगा। डिफेंडर ने कहा, हमने उनके खिलाफ चार मैच खेले हैं और चार सीधे ड्रॉ रहे हैं।

### यूरो 2024 क्वालीफिकेशन में इटली, चेक गणराज्य और स्लोवेनिया की जगह पक्की

**इटली।** चेक गणराज्य और स्लोवेनिया यूईएफए यूरो 2024 में अपना स्थान सुरक्षित करने वाली नई टीमें बन गईं, क्योंकि यूरो 2024 फाइनल में खेलने वाली 24 टीमों में से 20 की पुष्टि हो गई है। यूरो धारक इटली लीवरकुसेन में एक अंक के साथ ग्रुप सी में दूसरा स्थान पक्का करके यूक्रेन से आगे फाइनल में पहुंच गया। एंड-टू-एंड शुरुआती अवधि के दौरान लुसियानो स्पैलेटी की टीम के पास अधिकांश मौके थे, फेडरिको चियासा और निकोलो बरेला करीब जाने वालों में से थे। जबकि, डेविड फ्रैटेसी को गोलकीपर अनातोली ट्रुबिन ने क्षेत्र के अंदर गोल करने से रोक दिया था। यूक्रेन ने बार-बार जवाबी हमले की धमकी दी, जॉर्जी सुदाकोव ने देखा कि उनके अभियान को अजुर्री नंबर 1 जियानलुइगी डोनारुम्मा ने विफल कर दिया था। तीव्र लेकिन कम उन्मत्त दूसरे हाफ में डोनारुम्मा के महत्वपूर्ण बचाव ने मायखाइलो मुद्रिक को योग्यता के पाठ्यक्रम को बदलने से रोक दिया। यूक्रेन अब प्ले-ऑफ में प्रवेश कर गया है।

# 7 महीने बाद फिर एक और वर्ल्ड कप पूरी तरह बदल जाएगी मैन इन ब्लू

**मुंबई ।**

**वर्ल्ड कप 2023 ऑस्ट्रेलियाई की जीत के साथ खत्म हो चुका है। 7 महीने बाद एक और वर्ल्ड कप होना है। आईसीसी की ओर से जून 2024 में टी20 वर्ल्ड कप का आयोजन वेस्टइंडीज और अमेरिका में कराया जा रहा है। वर्ल्ड कप 2023 में उतरने वाले कई खिलाड़ियों को इस आईसीसी टूर्नामेंट में शायद शामिल नहीं हो। विराट कोहली और रोहित शर्मा ने नवंबर 2022 के बाद कोई टी20 इंटरनेशनल मैच नहीं खेला है। यानी वे पिछले एक साल से टी20 टीम से बाहर चल रहे हैं। कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल भी खत्म हो चुका है। यानी वर्ल्ड कप में टीम नए कोच के साथ उतर सकती है।**

टीम इंडिया टी20 इंटरनेशनल सीरीज लगातार हार्दिक पंड्या की कप्तानी में खेल रही है। इसके बाद उम्मीद है कि अगले साल होने वाले टी20 वर्ल्ड कप के लिए उन्हें टीम की कमान मिल सकती है। आईपीएल में बतौर कप्तान उनका रिकॉर्ड अच्छा है। रोहित शर्मा और विराट कोहली के अलावा आर अश्विन, शार्दुल ठाकुर और केएल राहुल को शायद ही मौका मिले। उम्र को देखकर मोहम्मद शमी का भी टी20 वर्ल्ड कप में खेलना पक्का नहीं है। वर्ल्ड कप में बतौर विकेटकीपर राहुल को मौका मिला था। लेकिन टी20 में ईशान किशन से लेकर संजू सैमसन तक का रिकॉर्ड अच्छा है।

2023 में सबसे अधिक टी20 इंटरनेशनल मैच खेलने वाले भारतीय खिलाड़ियों की बात करें, तब अर्शदीप सिंह टॉप पर हैं। उन्होंने सबसे सबसे अधिक 15 मैच खेल हैं। इसके अलावा हार्दिक पंड्या, शुभमन गिल और सूर्यकुमार यादव ने 11-11 मैच खेल चुके हैं। युवा बैटर तिलक वर्मा को भी 10 मैच में मौका मिला। अन्य किसी खिलाड़ी ने 10 मैच में मौका नहीं दिया गया। टी20 टीम में बतौर ओपनर शुभमन गिल के अलावा यशस्वी जायसवाल, ईशान किशन और ऋतुराज गायकवाड़ को शामिल किया जा सकता है।

तिलक ने आईपीएल से लेकर टी20 इंटरनेशनल में नंबर-3 पर अच्छा प्रदर्शन किया है। नंबर-4 पर सूर्यकुमार का खेलना तय है। इस नंबर पर उनका रिकॉर्ड बेहतरीन है। नंबर-5 की रेस में हार्दिक पंड्या, सैमसन और रिंकू सिंह को मौका मिल सकता है। नंबर-6 और नंबर-7 की रेस में ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल और शिवम दुबे को आजमाया जा सकता है। शिवम दुबे बतौर तेज गेंदबाज टीम के लिए अहम हो सकते हैं। ऑलराउंडर की रेस में वॉशिंटन सुंदर भी हैं।

बतौर तेज गेंदबाज बुमराह का खेलना तय है। इसके अलावा लेग स्पिनर रवि बिश्नोई, युजवेंद्र चहल, प्रसिद्ध कृष्णा, मोहम्मद सिराज और अर्शदीप सिंह को मौका मिल सकता है। कुल मिलाकर टी20 वर्ल्ड कप के लिए चुनी जाने वाले 15 खिलाड़ियों की टीम से कई सीनियर खिलाड़ी बाहर किए जा सकते हैं।

# भारत के खिलाफ टी20 सीरीज से डेविड वॉर्नर हुए बाहर

**नई दिल्ली ।**

ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के ओपनर डेविड वॉर्नर टी20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। उन्होंने भारत के खिलाफ आगामी 5 मैचों की टी20 सीरीज से अपना नाम वापस ले लिया है। गौरतलब है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 23 नवंबर को सीरीज का पहला टी20 मैच विशाखापत्तनम में खेला जाएगा। वर्ल्ड कप 2023 में शानदार प्रदर्शन करने वाले वॉर्नर ने स्वदेश लौटने का फैसला लिया है। वॉर्नर का सीरीज से बाहर होना भारतीय टीम के लिए अच्छी खबर है। लेफ्ट हैंड ओपनर वॉर्नर इस समय बेहतरीन फॉर्म में हैं। उन्होंने विश्व कप में 500 से ज्यादा रन बनाए। बता दें कि डेविड वॉर्नर पाकिस्तान के खिलाफ दिसंबर-जनवरी में खेली जाने वाली टेस्ट सीरीज की तैयारियों के लिए स्वदेश लौटेंगे। यहां गौरतलब है कि ऑस्ट्रेलिया ने हाल में भारत को हराकर रिकॉर्ड छठी बार वर्ल्ड कप ट्रॉफी पर कब्जा जमाया। इस दौरान वॉर्नर ने विश्व कप में शानदार बल्लेबाजी की। उन्होंने कुल 535 रन बनाए। बता दें कि 37 साल के वॉर्नर ने विश्व कप में एक भी मैच मिस नहीं किया।

हालांकि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने जब भारत के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए अपनी 15 सदस्यीय स्क्वॉड का ऐलान किया था तब वॉर्नर उस टीम का हिस्सा थे। लेकिन अब उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के लिए भारत में टी20 सीरीज नहीं खेलने का फैसला लिया है। अब डेविड वॉर्नर आखिरी बार टेस्ट में दिखाई देंगे। पाकिस्तान के खिलाफ सीरीज के बाद वह टेस्ट को अलविदा कह देंगे। ऑस्ट्रेलियाई टीम की अगुआई 35 वर्षीय विकेटकीपर मैथ्यू वेड करेंगे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए टीम इंडिया की कमान सूर्यकुमार यादव संभालेंगे जबकि उप कप्तानी की भूमिका रितुराज गायकवाड़ की होगी।

# मार्नस लाबुशेन को है चमत्कारों में विश्वास, अदृश्य शक्ति को दिया महत्व

**अहमदाबाद ।**

ऑस्ट्रेलिया को रिकॉर्ड छठा विश्व कप दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले मार्नस लाबुशेन ने कहा कि मुझे यमत्कारों पर विश्वास है। उन्होंने कहा कि शुरू में टीम में जगह नहीं मिलने के बाद भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी थी क्योंकि वह हमेशा चमत्कार पर विश्वास करते हैं। इस 29 वर्षीय खिलाड़ी को ऑस्ट्रेलिया की विश्व कप की शुरुआती 18 सदस्यीय टीम में जगह नहीं दी गई थी। एस्टन एगर के चोटिल होने के कारण उन्हें आखिरी समय में टीम में शामिल किया गया। भारत के खिलाफ फाइनल में नाबाद 58 रन बनाने वाले लाबुशेन ने कहा कि मेरे लिए चमत्कारों पर विश्वास नहीं करना कठिन है और कोई ऐसी शक्ति (भगवान) है जो आपके लिए मार्ग प्रशस्त करती है। लाबुशेन में विश्व कप में 10 पारियों में 40 l22 की औसत से 362 रन बनाए जिसमें 3 अर्धशतक शामिल हैं। फाइनल में उन्होंने एक छोर संभाले रखा तथा ट्रेविस हेड के साथ 192 रन की साझेदारी करके अपनी टीम को 6 विकेट से जीत दिलाई।

लाबुशेन ने हालांकि स्वीकार किया कि उन्हें फाइनल के लिए अंतिम एकादश में अपनी जगह को लेकर पूरा यकीन नहीं था। उन्होंने कहा कि कल रात 10 बजे तक टीम की घोषणा नहीं हुई थी। मुझे नहीं पता था कि मैं खेल रहा हूं या नहीं। मैं अपने बिस्तर पर

बैठकर सोच रहा था कि अगर मैं नहीं खेलूंगा तो किस तरह से मैं अपना योगदान दे सकता हूं। संभवत: क्षेत्ररक्षण में मैं अपना योगदान दे सकता हूं। लाबुशेन ने कहा कि इसके बाद सवा 10 बजे टीम की घोषणा कर दी गई और केवल इतना कहा गया कि सेमीफाइनल में खेलने वाली टीम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इससे मुझे थोड़ी राहत मिली, क्योंकि यह किसी चमत्कार का ही हिस्सा था।

# सभी खिलाड़ियों पर बेहद गर्व है : राहुल द्रविड़, भारतीय कोच ने कहा- हमने जो कुछ भी दिया उस पर गर्व है

**अहमदाबाद ।**

भारतीय कोच राहुल द्रविड़ ने कहा कि उन्हें अपने सभी खिलाड़ियों पर बेहद गर्व है, उन्होंने कप्तान रोहित शर्मा की विशेष प्रशंसा की। फाइनल में हारने के बावजूद भारत के मुख्य कोच अभी भी पूरे अभियान के दौरान अपनी टीम के प्रयासों पर गर्व से भरे हुए थे।

राहुल द्रविड़ ने कहा, हमने वास्तव में अच्छा अभियान चलाया। मुझे वास्तव में लड़कों पर गर्व है, जिस तरह से हमने इस टूर्नामेंट के दौरान खेला, जिस तरह की क्रिकेट हमने खेली, जिस तरह की क्रिकेट हमने इस टूर्नामेंट के दौरान खेली, मुझे लगा कि वह काफी असाधारण थी। मुझे वास्तव में इस पर गर्व है प्रयास, हमने जो कुछ भी दिया उस पर गर्व है। वहीं, इस बीच इस हार को लेकर कई तरह के पहलु सामने आए। कुछ लोगों ने भारतीय टीम के लिए अंपायर रिचर्ड केटलबोरो एक बार अशुभ बताया। दरअसल, रिचर्ड केटलबोरो भारतीय टीम की कई बड़े हार के चश्मदीद रहे हैं। पिछले10 साल से यह बदस्तूर जारी है।आज एक बार फिर से रिचर्ड केटलबोरो के सामने भारतीय टीम को वर्ल्ड कप फाइनल में हार का सामना पड़ा।बता दें कि टीम इंडिया की हार और अंपायर रिचर्ड केटलबोरो का कनेक्शन साल 2014 में शुरू हुआ था, जो इस बार भी बकरार रहा। याद दिला दें कि टी20 वर्ल्ड कप 2014 के फाइनल में भारतीय टीम को श्रीलंका के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था उस समय भी रिचर्ड केटलबोरो ने अंपायर की भूमिका निभाई थी।

इसके बाद भारतीय टीम वर्ल्ड कप 2015 सेमीफाइनल में हार गई थी। उस मैच में रिचर्ड केटलबोरो ने अंपायरिंग की थी। टी20 वर्ल्ड कप 2016 के फाइनल में वेस्टइंडीज ने भारत को हराया,उस वक्त भी रिचर्ड

केटलबोरो ने अंपायरिंग की थी। 2017 में भारतीय टीम ने अपने खेल का शानदार प्रदर्शन किया और टीम फाइनल में पहुंची, लेकिन पाकिस्तान के खिलाफ शिकस्त झेलनी पड़ी उस मैच में भी अंपायर रिचर्ड केटलबोरो थे। इतना ही नहीं इसके 2 साल बाद वर्ल्ड कप 2019 में भारतीय टीम सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ हार का मुंह देखना पड़ा उस मैच में बतौर अंपायर रिचर्ड केटलबोरो थे। वहीं, यही इतिहास दोहराते हुए वर्ल्ड कप 2023 फाइनल में भीऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत को हार का सामना करना पड़ा। इस मैच में भी अंपायर रिचर्ड केटलबोरो ही थे।

### वर्ल्ड कप2023 के दौरान बयानबाजी भी खूब हुई, छाए रहे अनेक विवाद

# दुश्मन मुल्क से लेकर फिलिस्तीन समर्थक, फिर लगाया बॉल चेंज तक का आरोप

**नई दिल्ली ।**

वर्ल्डकप 2023 में ऑस्ट्रेलिया टीम छठी बार चैंपियन बनी है। इस दौरान जहां कई टीमों और प्लेयर्स ने बड़े रिकॉर्ड अपने नाम किए तो अनेक तरह के विवादों से भी यह टूर्नामेंट नहीं बच सका। फिलिस्तीन का सियासी मुद्दा भी क्रिकेट के मैदान पर छाया रहा। इसके अलावा एंजेलो मैथ्यूज के टाइम आउट विवाद और भारत-न्यूजीलैंड सेमीफाइनल के पहले कथित तौर पर पिच बदलने का मामले ने भी मीडिया की सुर्खिया बटोरीं। इतना ही नहीं बॉल चेंज तक का आरोप भी लगाया गया। पीसीबी चीफ ने तो भारत को 'दुश्मन मुल्क' भी बोल दिया था। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड यानी पीसीबी के प्रमुख जका अशरफ भारत को 'दुश्मन मुल्क'कहकर विवादों में घिरे। इस कमेंट के कारण न केवल पीसीबी बल्कि अशरफ को भी फजीहत का सामना करना पड़ा। हालांकि खेद व्यक्त करने के बाद यह मामला ठंडा हुआ। एक

समय वह था जब मैथ्यूज के टाइम आउट मुद्दे में शाकिब 'विलेन' बन गए। दरअसल बांग्लादेश के खिलाफ मैच के दौरान श्रीलंका के एंजेलो मैथ्यूज को 'टाइम आउट' घोषित किए गए। इंटरनेशनल क्रिकेट में ऐसा पहली बार हुआ जब किसी बैटर को इस तरह से आउट दिया गया। अफगानिस्तान की जीत पर इरफान का डांस भी मुद्दा बन गया। वर्ल्डकप के लीग मैच में जब अफगानिस्तान ने इतिहास रचते हुए पाकिस्तान को हराया तो कमेंटेटर के तौर पर टूर्नामेंट कवर कर रहे इरफान पठान भी खुश नजर आए। उन्होंने अफगान टीम के स्टार स्पिनर राशिद खान के साथ मैदान पर डांस किया। 'दो पठानों' के डांस का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। यह वीडियो लोगों को भले ही पसंद आया हो लेकिन पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटरों को यह नागवार गुजरा था। एक समय तो सेमीफाइनल की पिच को लेकर भी विवाद हुआ। भारत-न्यूजीलैंड के सेमीफाइनल से पहले कथित तौर पर पिच बदले जाने के आरोप को लेकर विवाद खड़ा हो गया था। बताया गया कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने सेमीफाइनल के लिए 'यूज्ड पिच' के साथ जाने का फैसला किया जबकि पहले यह 'ताजा पिच' पर खेला जाना था। पाकिस्तान के अलावा अफगानिस्तान और बांग्लादेश जैसे मुस्लिम बहुत देशों ने भी भाग लिया लेकिन बाबर आजम की टीम के कुछ प्लेयर फिलिस्तीन मुद्दे पर पोस्ट को लेकर चर्चा में रहे। लीग मैच में पाकिस्तान के मोहम्मद रिजवान ने श्रीलंका के खिलाफ मैच जिताऊ शतक बनाया और बाद में यह पारी गाजा के लोगों को समर्पित कर दी। वर्ल्डकप के फाइनल पर भी उस समय फिलिस्तीन मुद्दे की 'छाया' पड़ती नजर आई जब फिलिस्तीन के समर्थन में एक शख्स सुरक्षा घेरा तोड़कर मैदान में घुस गया। भारतीय पारी के दौरान यह घटना हुई।

## ट्रेंच कोट से फैशनेबल लुक...

खूबसूरत दिखना और फैशनेबल दिखने में बहुत अंतर है। फैशनेबल दिखने के लिए जरूरी है कि सबसे पहले यह जान लिया जाए कि ट्रेंड में क्या है और आपको हर मौसम के ट्रेंड के बारे में पता होना चाहिए। आजकल ट्रेंच कोट काफी ट्रेंड में है, जो स्टाइलिश लुक के साथ आपकी खूबसूरती में चार चांद लगा देंगें।

अगर आप ऐसी जगह पर रहती हैं जहां ज्यादा सर्द हवाएं नहीं चलती हैं, तो आप इन कोट्स को पहन सकती। जो कि बाहर घूमने के लिए अच्छे हैं।

मिलिट्री ट्रेंच कोट देखने में काफी वर्सटाइल लगते हैं, और आप इन्हे कही पर भी पहन कर जा सकती हैं। ऑफिस सबसे अच्छी जगह है इसे पहने की। साथ ही आप इसे मीटिंग्स में भी पहन कर जा सकते हैं।

कैज्युअल ट्रेंच कोट पहने में बहुत ही आरामदायक होते हैं साथ ही यह कार्डिगन वॉटरफॉल की तरह दिखते हैं। इसे आप हाउस पार्टी, रोड ट्रिप्स, हैंगआउट्स आदि जगहों पर भी पहन सकती हैं।

यह विंटर्स पार्टीज के लिए बहुत अच्छे हैं। लेदर और फॉक्स फर ट्रेंच कोट बहुत क्लासी और फैशनबल लगते हैं। इनकी फॉक्स फर कॉलर एजी लुक देती हैं।

## उष्मा रोधी वैदिक प्लास्टर...

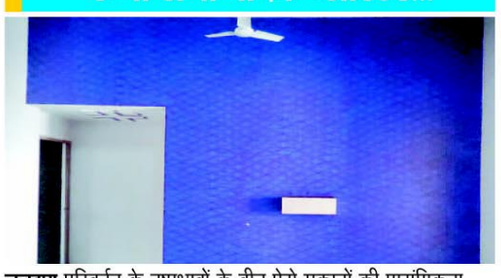

**जलवायु** परिवर्तन के दुष्प्रभावों के बीच ऐसे मकानों की प्रासंगिकता आज बढ़ रही है जो उष्मा रोधी हों ताकि सर्दी और गर्मी दोनों से ही बचाव हो सके। पहले मिट्टी के बने और गोबर से लिपे कच्चे घरों में उष्मा को रोकने की क्षमता थी और उनमें सर्दी और गर्मी दोनों से बचाव होता था लेकिन अब कच्चे मकान व्यवहारिक नहीं है और इसीलिए पक्के मकानों को ही इस तरह का बनाने के लिए ऐसा प्लास्टर तैयार किया गया है जो उष्मा रोधी हो। यह वैदिक प्लास्टर प्रख्यात वैज्ञानिक डॉक्टर शिव दर्शन मलिक के दिमाग की देन है जिनका कहना है कि वैदिक प्लास्टर ध्वनि एवं अग्नि रोधक है तथा मकान को गर्मी में ठंडा तथा सर्दी में गर्म रखता है। इसके अलावा इस प्लास्टर में गोबर का मिश्रण होने की वजह से यह प्राकृतिक वायु शोधक है और वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखता है। यह अपने आप में पूर्ण है क्योंकि इसमें रेत मिलाने की जरूरत नहीं पड़ती और न ही तराई करने की जरूरत पड़ती है।

## वहां पुरुष करते हैं सोलह श्रृंगार...

**सुहागन** महिलाएं अपने पति के लिए सजती-संवरती है और सोलह श्रृंगार करती हैं लेकिन एक ऐसा मंदिर है, जहां पुरुषों को भगवान के दर्शन करने के लिए सोलह श्रृंगार करना पड़ता है। केरल के कोट्टनकुलंगरा मंदिर में मर्द पूजा करने के लिए महिलाओं की तरह सजते-संवरते हैं। इस मंदिर में यह परंपरा सालों से चली आ रही है। यह केरल का इकलौता मंदिर है, जिसके गर्भगृह के ऊपर छत नहीं है। इस मंदिर में हर साल चाम्याविलक्क फेस्टिवल मनाया जाता है। इस फेस्टिवल में माता की पूजा करने के लिए पुरुष महिलाओं की तरह साड़ी पहनते है और अच्छी तरह सजते हैं। कहा जाता है कि इस मंदिर में देवी की मूर्ति खुद प्रकट हुई थी। सोलह श्रृगार करने के बाद पुरुष अच्छी नौकरी, सेहत, पार्टनर और अपने परिवार की खुशहाली की प्रार्थना करते हैं।

## दूध पीना हानिकारक...?

**दूध** पीने के कई फायदे आपने सुने होंगे। आपने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि दूध पीने के भी नुकसान हो सकते हैं। हाल में हुए एक शोध में इस बात का खुलासा किया गया कि भले ही दूध पीने के काफी फायदे हों लेकिन ज्यादा दूध पीना हड्डियों के लिए नुकसानदेह हो सकता है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में छपी स्टडी के अनुसार , दूध हमारी हड्डियों को कमजोर बनाता है। जो लोग ज्यादा दूध पीते हैं उनकी मौत भी जल्दी हो जाती है। इस रिसर्च में 20 साल तक 61,000 महिलाओं और 45,000 पुरुषों पर शोध किया गया। शोध में पता चला इन सभी की कोई न कोई हड्डी टूटी हुई थी। दूध की वजह से महिलाओं की हड्डियों में फ्रैक्चर होने के चांस बढ़ जाते हैं। स्टडी में यह भी पाया कि जो लोग दिन में तीन बार दूध पीते हैं उनके जल्दी मृत्यु के चांस दोगुने हो जाते हैं। जो लोग दिन में एक ग्लास दूध पीते हैं उनकी उम्र बढ़ जाती है।

# हल्की सर्दी में काम के हैं पोंचू...

**किसी** जमाने में दादी-नानी के हाथों में क्रोशिया की सिलाई देखी जाती थी और घरों में क्रोशिया से बुने हुए तकिए के कवर, रुमाल, शो पीस और अन्य सामान आसानी से देखे जाते थे। बदलते वक्त और भागदौड़ की व्यस्त जिंदगी में घरों और बाजारों में क्रोशिया की बुनी हुई चीजें गायब होती चली गईं। बाजार में अब क्रोशिया से बने वेस्टर्न और इंडियन आउटफिट का बोलबाला शुरू हुआ है, जिसमें फैशन डिजाइनर नए-नए फ्यूजन के साथ कपड़ों को तैयार कर रहे हैं। इनहें पहनने से आप आकर्षक तो लगते ही हैं, साथ ही फैशन में एक नयापन भी आया है। आज हम आपके सामने क्रोशिया , सिल्क, वूलन आदि से बने पोंचू लेकर आए है जिनहें आप सर्दीयों के मौसम में भी पहन सकती है। दिन की नरम धूप हो या शाम की हल्की सर्दी, ऐसे समय में आपको सेफ रखते हैं पोंचू। इन्हें आप किसी भी ड्रेस के ऊपर पहन सकते है। आपकी सिंपल ड्रेस भी पोंचू से खूबसूरत बन जाती है। चलिए आज आप को बताते हैं पोंचू के भी कई वैराइटीज हैं जिसको लेकर आप एक्सपेरिमेंट कर सकती हैं।

### क्रोशिया से बने पोंचू

क्रोशिया से बने पोंचू को गर्मी और सर्दी दोनो मौसम में पहना जा सकता है। गर्मियों में धागे से बने पोंचू और सर्दियों में ऊनी पोंचू पहने जाते हैं। इसे गर्मियों में बोरिंग ड्रेस को ग्लैमरस लुक देने और धूप से बचने के पहना जाता है।

### निटेड पोंचू

जहां क्रोशे पोंचू गर्मियों के लिए उचित हैं वहीं निटेड पोंचू आपको ठंड से सुरक्षा देते हैं। ये अपको ट्रेंडी और वार्म लुक देते हैं।

### एम्ब्रॉयडेड पोंचू

ये ट्रेडिशनल पोंचू हैं जो कई वैरायटी और पैटर्न व स्टाइल में मिलते हैं। ये बहुत एलेगेंट फैब्रिक में आते हैं।

### सिल्क पोंचू

सिल्क पोंचू वजन में हल्के होते हैं जिन्हें आप बतौर एक्सेसरी पहन सकते हैं जो आपके पहनावे को नया लुक देंते है।

### वूलन फैब्रिक पोंचू

वूलन फैब्रिक पोंचू सर्दियों से बचाव के लिए हैं। इन्हें ऊन से बुना नहीं जाता बल्कि वार्म वुलन फैब्रिक से बनाया जाता है। इनकी गर्माहट इनके फैब्रिक पर डिपेंड करती है। हुडेड और टर्टलनेक पोंचू विद हुड जैसे ज्यादातर पोंचू बच्चों के लिए बनाए जाते हैं।

# तनाव घटाने के लिए लोग करते है कुछ ऐसा

आप तनाव महसूस कर रहे हैं। तो आप क्या करना चाहेंगे। जाहिर तौर पर म्यूजिक सुनना चाहेंगे या चहलकदमी करना चाहेंगे। पर दक्षिण कोरिया में आजकल लोग तनाव को भगाने के लिए मरने के बाद की लाइफ में जाना चाहते हैं। और ऐसा महसूस कराने के लिए बाकायदा कंपनियां भी हैं, जो ये काम कर रही हैं। जी हां, दक्षिण कोरिया में लोग 10 मिनट ताबूत में रहते हैं। मरने के बाद की जिंदगी को लेकर धर्मगुरुओं से ज्ञान भी लेते हैं। ताकि वो तनाव को भगा सकें। हैरानी की बात है कि ऐसा करने वाले बाद में कहते हैं कि उन्हें ऐसा करके अच्छा लगा। वांग योंग यो(67) नाम की महिला ने कहा कि 10 मिनिट मरने के बाद की जिंदगी बिताकर मुझमें नया उत्साह आ गया है। ऐसा लगता है कि मुझे नई जिंदगी मिली है। और मैं नई शुरुआत कर सकती हूं। कोरिया में तनाव घटाने के लिए लोग करते हैं मरने के बाद की जिंदगी का अहसास! सोचिए, आप तनाव महसूस कर रहे हैं। तो आप क्या करना चाहेंगे। जाहिर तौर पर म्यूजिक सुनना चाहेंगे या चहलकदमी करना चाहेंगे। उन्होंने कहा कि मेरी मां मुझसे बहुत प्यार करती थी, वो कम उम्र में ही चली गई। वो बहुत खूबसूरत थी। दक्षिण कोरिया में मॉक फ्यूनरल मतलब मरने के बाद के अंतिम संस्कार का अभ्यास अब नया ट्रेंड बनता जा रहा है। ऐसा कराने के लिए तमाम कंपनियां भी मैदार में उतर चुकी हैं। और अब ये बड़ा बिजनेस बन चुका है।

## रेसिपी

### कोमल

**सामग्री**

1 कप दही, फेंटा हुआ, 1 कप नारियल का दूध, 1 टेबल-स्पून कटा हुआ हरा धनिया,
2 चीर लगी हुई हरी मिर्च,
1 टी-स्पून शक्कर, नमक स्वादअनुसार,
1 टेबल-स्पून तेल, 1/2 टी-स्पून ज़ीरा,
1/4 टी-स्पून हींग, 2 कड़ी पत्ता

**विधि**

दही, नारियल के दूध, धनिया, हरी मिर्च और शक्कर को 11/2 कप पानी के साथ एक बाउल में डालकर, शक्कर के पिघलने तक अच्छी तरह मिला लें। नमक डालकर अच्छी तरह मिला लें और एक तरफ रख दें। तड़के के लिए, एक छोटे पॅन में तेल गरम करें, ज़ीरा, हींग और कड़ी पत्ता डालें। जब बीज चटकने लगे, तड़के को पेय में डालें। परोसने से पहले, हरी मिर्च निकालकर फेंक दें। तुरंत परोसें।

### खाण्डवी

**सामग्री**

1 कप अरारोट का आटा, 1/4 कप राजगीरे का आटा, 2 टी-स्पून अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, सेंधा नमक, स्वादअनुसार, 1 कप दही, 1/4 टी-स्पून तेल, चुपड़ने के लिए, 1 टेबल-स्पून तेल, 1 टी-स्पून ज़ीरा, 1 टी-स्पून तिल, 5 से 6 कड़ी पत्ते, सजाने के लिए, 2 टेबल-स्पून कटा हुआ धनिया, 2 टेबल-स्पून कसा हुआ नारीयल, ऐच्छिक, परोसने के लिए, हरी चटनी

**विधि**

आरारोट का आटा, राजगीरे का आटा, अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, सेंधा नमक, दहीं और 1 कप पानी को एक गहरे नॉन-स्टिक पैन में अच्छी तरह से मिलाएं जिससे सारे डल्ले धुल जाएं। धिमी आंच पर लगातार हिलाते हुए 8 से 10 मिनट तक या मिश्रण के गाढ़े होने तक पकाएं। थाली के उल्टे तरफ को तेल से चुपड़े और मिश्रण के एक चम्मच को अच्छी तरह से फैलाकर कुछ सेकन्ड तक रखें। अगर घोल तब भी न पकें, कुछ और मिनट तक पका कर दुबारा कोशिश करें। घोल को 2 बराबर हिस्सों में बांट लें। प्रत्येक हिस्से को 2 थालीयों के उल्टे हिस्से पर फैलाकर गोल आकार में फैलाएं। ठंडा कर, 2 का फर्क रखकर लम्बी पट्टीयों में काटें और घुमाकर रोल बनाएं। खाण्डवी को प्लेट पर रखें। बघार के लिए, एक छोटे नॉन-स्टिक पैन में तेल गरम करें और जीरा डालें। जब जीरा चटकने लगे, तिल और कड़ी पत्ते डालकर मध्यम आंच पर कुछ सेकन्ड तक भूनें। बघार को खाण्डवी के उपर डालें। नारीयल और धनिया से सजाकर हरी चटनी के साथ परोसें।

# अच्छे कोलैस्ट्राल को बढ़ाता है अखरोट

**अखरोट** ऊर्जा का बेहतर स्रोत है। साथ ही इसमें शरीर के लिए जरूरी पोषक तत्व, मिनरल्स, एंटीआक्सीडैंट्स और विटामिन्स प्रचुर मात्रा में मौजूद होते हैं। अखरोट का तेल कई रूपों में काम में लिया जाता है। इसका तेल खाना बनाने के अलावा दवाइयों और खुशबू के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

* अखरोट में मोनोसैचुरेटिड फैट्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड्स जैसे सिनोलिक एसिड, अल्फा फिनोलिक एसिड और एराकिडोनिक एसिड भी काफी मात्रा में मिलते हैं। अखरोट का नियमित सेवन खून में बुरे कोलैस्ट्राल को कम कर अच्छे कोलैस्ट्राल को बढ़ाता है।
* हर दिन 25 ग्राम अखरोट के सेवन से 90 फीसदी ओमेगा-3 फैटी एसिड्स भी मिलते हैं। इससे रक्तचाप, कोरोनरी आर्टरी डिजीज और स्ट्रोक का खतरा कम होता है।
* अखरोट का सेवन ब्रैस्ट कैंसर, कोलोन कैंसर और प्रोस्टेट कैंसर से बचाव करता है। अखरोट को ब्रेन फूड भी कहा जाता है। अखरोट में कई तरह के यौगिक मौजूद होते हैं जैसे मेलाटोनिन, विटामिन ई, कैरोटिनायड जो हमारे स्वास्थ्य को सही रखने में मदद करते हैं। ये यौगिक कैंसर, बुढ़ापे, सूजन और मस्तिष्क से संबंधित बीमारियों से बचाते हैं।
* अखरोट में प्रचुर मात्रा में विटामिन ई मौजूद होता है। विटामिन ई शरीर को हानिकारक ऑक्सीजन से सुरक्षा देता है। विटामिन ई के अलावा इसमें और भी जरूरी विटामिन मौजूद होते हैं जैसे विटामिन बी कांप्लैक्स समूह के शीबोफ्लैविन, नियासिन, थाइमिन, पेंटोथेनिक एसिड, विटामिन बी 6 और फोलेट्स।
* अखरोट मिनरल्स का भी बेहतरीन स्रोत माना जाता है। जैसे मैंगनीज , कॉपर, पोटाशियम, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, जिंक और सेलेनियम। प्रतिदिन मुट्ठी भर अखरोट आपके शरीर को मिनरल्स, विटामिन्स और प्रोटीन्स प्रदान करते हैं।

### सामान्य बीपी में भी ज्यादा नमक खतरनाक

**आमतौर** पर हम अपनी खुराक में नमक की मात्रा को लेकर तभी सचेत होते हैं, जब उच्च रक्तचाप (हाई बीपी) की शिकायत हो। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह सोच पूरी तरह गलत है। सामान्य रक्तचाप की स्थिति में भी खाने में ज्यादा नमक नुकसान पहुंचा सकता है। एक ताजा शोध में यह बात सामने आई है। शोध के अनुसार रक्तचाप में बढ़ोतरी न होने पर भी नमक की ज्यादा मात्रा कुछ अंगों को नुकसान पहुंचा सकती है। यूनिवर्सिटी ऑफ डेलावेयर के शोधकर्ताओं ने बताया कि नमक की अधिक मात्रा खून की नलियों, दिल, किडनी और दिमाग पर बुरा असर डाल सकती है। शरीर में सोडियम की मात्रा के हिसाब से रक्तचाप के घटने-बढ़ने की स्थिति को साल्ट सेंसिटिव ब्लड प्रेशर कहते हैं।

# एयरक्राफ्ट मेन्टेनेन्स इंजीनियरिंग...

**एयरक्राफ्ट मेन्टेनेन्स** इंजीनियरिंग एविएशन सेक्टर से संबंधित एक प्रमुख क्षेत्र है, जिसे मेन्टेनेन्स ब्रांच में शामिल किया गया है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें प्रोफेशनल्स को पद व पैसा दोनों मिल रहा है। इसमें कमर्शियल एवं मिलिट्री एयरक्राफ्ट, स्पेस क्राफ्ट, सेटेलाइट एवं मिसाइल आदि की डिजाइनिंग, कंस्ट्रक्शन, डेवलपमेंट, टेस्टिंग, ऑपरेशन एवं मेन्टेनेन्स आदि के बारे में विशेषज्ञता हासिल की जाती है। एयरक्राफ्ट मेन्टेनेन्स इंजीनियर का सीधा संबंध एविएशन डिवीजन से होता है। एयरक्राफ्ट के सफलतापूर्वक टेक ऑफ की जिम्मेदारी भी इन्हीं के जिम्मे होती है। ये इंजीनियर पूरी तरह से सुरक्षा पर फोकस करते हैं, ताकि एयरक्राफ्ट को बिना किसी अवरोध के उड़ाया जा सके। नागरिक उड्डयन मंत्रालय की एक घोषणा के अनुसार इस समय भारतीय एविएशन इंडस्ट्री विश्व की नौवीं सबसे बड़ी एविएशन इंडस्ट्री है तथा 2020 तक इसके तीसरे सबसे बड़े एविएशन मार्केट के रूप में बनने की उम्मीद है। इसी तरह से 2030 तक पहुंचते-पहुंचते इसके पहले स्थान पर काबिज होने का अनुमान है। फिक्की-केपीएमजी रिपोर्ट के अनुसार एविएशन इंडस्ट्री में वर्ष 2017 तक देश में रोजगार में दोगुनी वृद्धि होगी और यह बढ़ कर 1.17 लाख के करीब पहुंच जाएगा। आने वाले समय में इसमें एयरक्राफ्ट मेन्टेनेन्स इंजीनियर पदों के लिए भारी संख्या में प्रोफेशनल्स की आवश्यकता पड़ेगी।

### बारहवीं के बाद रखें कदम

एयरक्राफ्ट मेन्टेनेन्स इंजीनियरिंग तीन वर्षीय ट्रेनिंग कोर्स है। इसमें प्रवेश के लिए छात्रों को 10+2 की परीक्षा फिजिक्स, केमिस्ट्री व मैथ्स के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। छात्र की आयु 23 वर्ष से अधिक न हो। इसमें फीस की राशि संस्थान पर निर्भर करती है। अमूमन तीन साल के कोर्स में कुल छह सेमेस्टर होते हैं। इनकी फीस करीब दो से ढाई लाख रुपए होती है। इसके अलावा हॉस्ट, यूनिफार्म, खाने, टूल-किट व अन्य खर्चे भी शामिल हैं। छात्र किस्तों में भी फीस दे सकते हैं।

### एजुकेशन लोन

छात्रों को देश-विदेश में अध्ययन के लिए प्रमुख राष्ट्रीयकृत, प्राइवेट अथवा विदेशी बैंकों द्वारा एजुकेशन लोन प्रदान किया जाता है। यह राशि पांच लाख से लेकर अधिकतम 20 लाख रुपए तक हो सकती है। छात्र को जिस संस्थान में एडमिशन लेना है, वहां से जारी एडमिशन लेटर, हॉस्टल खर्च, ट्यूशन फीस एवं अन्य खर्चों का ब्योरा बैंक को देना होता है। अंतिम निर्णय बैंक को करना होता है। बैंक सभी कागजात जांचता है।

### सैलरी

इसमें ज्यादातर सैलरी पैकेज एकेडमी करियर एवं काम के बारे में जानकारी पर निर्भर करता है। शुरू शुरू में इसमें प्रोफेशनल्स को करीब तीन से चार लाख रुपए सालाना का पैकेज मिलता है। अनुभव बढ़ने के साथ सैलरी भी बढ़ती जाती है। प्राइवेट सेक्टर में सैलरी अधिक मिलती है। सुविधाओं के मामले में सरकारी क्षेत्र आगे है।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए ईको प्रिंटिंग प्रेस, पोस्ट एवं पीएस : गड़चुक, कटाबाड़ी मस्जिद के पास, कामरूप (मेट्रो), गुवाहाटी-35 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
**संपादक : राकेश शर्मा,** मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम** ● **फोन : 0361-2960054 ( संपादकीय )** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **( सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन )**